chapter. 5

: पंचम् अध्याय :

: डा. कोहली के उपन्यासों में निरूपित रामायण और महाभारत के प्रमुख पात्र

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY

: पंचम् अध्याय :

=======

: डा॰ कोहली के उपन्यासों में निरूपित रामायण और महाभारत के प्रमुख पात्र :

===

प्रास्ताविक :

=========

पूर्ववर्ती अध्यायों में डा॰ कोहली के रामायण और महाभारत पर आधारित उपन्यासों पर आलोचनात्मक व विश्लेषणात्मक ढंग से विचार किया गया था । प्रस्तुत अध्याय में उन उपन्यासों में निरूपित पात्र-सृष्टि पर विचार करने का उपक्रम रहेगा । यद्यपि यहां उक्त दोनों ग्रन्थों पर आधारित उपन्यासों के प्रमुख पात्रों पर विचार हो रहा है, तथापि उनमें निरूपित गौण पात्रों का उल्लेख

भी किया जायेगा । ऐतिहासिक- पौराणिक उपन्यासों में प्रमुख पात्र तो प्रायः ऐतिहासिक-पौराणिक ही होते हैं , तथापि लेखक देशकाल निर्माण हेतु तथा उपन्यास को सहज , स्वाभाविक , विश्वसनीय तथा जीवन्त बनाने के लिए उनमें कुछ काल्पनिक सामाजिक पात्रों की सृष्टि करता है । डा. नरेन्द्र कोहली ने भी यह किया है । अतः उन पात्रों का उल्लेख भी प्रस्तुत अध्याय में किया गया है । एक बात और है , रामायण और महाभारत को लेकर भारतीय साहित्यकार सहस्त्राधिक वर्षों से प्रबंध काव्यों , खण्डकाव्यों , चरित-काव्यों , आख्यानों , नाटकों आदि का सृजन कर रहा है और अब उन पर उपन्यास भी लिखे जा रहे हैं ; लेकिन यह उनका पुनराख्यान मात्र नहीं है । प्रत्येक लेखक उनमें अपनी तरफ से कुछ घटाता-बढ़ाता है । अपने युगबोध और विचार-धारा के अनुसार उनमें कुछ परिवर्तन भी करता है । अतः यहां इस बात का ध्यान रखा जाए कि यहां जिन पात्रों पर विचार हो रहा है, वे पात्र डा. नरेन्द्र कोहली द्वारा प्रणीत हैं । उपजीव्य ग्रन्थों में उन पात्रों को जैसा और जिस प्रकार का बताया गया है , ये पात्र हूबहू उस प्रकार के नहीं भी हो सकते हैं । कारण बिलकुल स्वाभाविक है । ये डा. नरेन्द्र कोहली के उपन्यास हैं । "दीक्षा" से लेकर "युद्ध" तक और "बंधन" से लेकर "निर्बन्ध" तक तमाम-तमाम उपन्यासों के प्रकाशकीय वक्तव्यों में एक बात बहुत ही स्पष्ट रूप से कही गई है कि ये सब मौलिक उपन्यास हैं । यथा --" नरेन्द्र कोहली का नया उपन्यास है "महासमर" । घटनाएं तथा पात्र महाभारत से सम्बद्ध हैं ; किन्तु यह कृति एक उपन्यास है -- आज के लेखक का मौलिक सृजन ।" [1]

शोध-प्रबंध के समायोजन हेतु इस अध्याय को हमने दो भागों में विभक्त किया है -- (अ) रामायण पर आधारित उपन्यासों के पात्र और (ब) महाभारत पर आधारित उपन्यासों के पात्र । दोनों भागों में प्रमुख पौराणिक पात्रों के अतिरिक्त गौण पात्रों और मौलिक पात्रों का उल्लेख भी किया जायेगा ।

§अ§ रामायण पर आधारित उपन्यासों के पात्र

प्रमुख पात्र :

रामायण की कथावस्तु पर डा. नरेन्द्र कोहली के चार उपन्यास हैं -- "दीक्षा" , " अवसर" , "संघर्ष की ओर " और "युद्ध " । इन चार उपन्यासों को "अभ्युदय भाग-1 " और "अभ्युदय भाग-2 " में संकलित किया गया है । "अभ्युदय भाग-1 " में प्रथम तीन उपन्यास हैं और "अभ्युदय भाग-2 " में केवल "युद्ध" उपन्यास को रखा गया है । यहां उनके प्रमुख पात्रों पर विचार किया जा रहा है ।

§1§ राम :

राम रामायण काव्य के और यहां इन उपन्यासों के भी नायक हैं । "राम" शब्द सम्पूर्ण भारत वर्ष तथा बृहत् भारत में अत्यन्त प्रचलित है । इसका एक प्रमाण तो यह है कि हमारे देश के गांवों के नामों में सबसे ज्यादा संख्या "रामपुर" या "रामपुरा" की है । अभिवादन में भी "राम राम " या "जैरामजी की " चलता है । यहां तक कि जब किसी हिन्दू की मृत्यु हो जाती है तो स्मशान"-यात्रा के समय रास्ते भर "राम नाम सत्य है " का उच्चारण होता है । भक्तिकाल के सगुण-निर्गुण दोनों संप्रदायों में "राम" का उल्लेख मिलता है । निर्गुणवाले राम को निरंजन, निराकार और अजन्मा मानते हैं , किन्तु परब्रह्म के एक नाम के रूप में "राम" शब्द का स्वीकार तो वहां भी है । "आत्मा" के अर्थ में भी "राम" शब्द का प्रयोग होता रहा है । पूर्ववर्ती पृष्ठों में निरूपित किया गया है कि वैदिक साहित्य में भी "राम" शब्द का उल्लेख अनेक स्थानों पर उपलब्ध होता है ।

डा. नरेन्द्र कोहली ने अपने उपर्युक्त उपन्यासों में राम का चरित्र-चित्रण एक नायक के रूप में किया है । डा. नरेन्द्र कोहली

के राम मनुष्य है । परब्रह्म या ईश्वर के अवतार नहीं । उनकी सृष्टि लेखक ने पूर्णरूपेण मानवीय धरातल पर की है । एक महानायक के रूप में उनका चित्रण हुआ है । मनुष्य की तरह उनमें भी आशा-निराशा तरंगायित होती है । उन्हें भी सुख-दुःख व्यापता है । व्यापता तो वहां भी था , परन्तु वहां बताया जाता था कि प्रभु लीला कर रहे हैं । यहां लीला के रूप में नहीं राम का सम्पूर्ण कार्य-कलाप मानवीय धरातल पर अभिव्यक्त हुआ है ।

अपनी विचारधारा और युगबोध के अनुसार लेखक ने राम के चरित्र-चित्रण में कई स्थानों पर परिवर्तन भी किया है । यहां राम का जन्म पुत्रेष्टि-यज्ञ द्वारा नहीं हुआ है । पुत्रेष्टि-यज्ञ को तो एक रूढ़ि या परंपरा के रूप में चित्रित किया गया है ।[2] राम दशरथ की प्रथम रानी कौशल्या के पुत्र हैं तथा राम, लक्ष्मण , भरत और शत्रुघ्न के जन्म एक समय पर नहीं होकर कुछ अन्तराल से हुए हैं । राम और लक्ष्मण में दश साल का अंतर बताया गया है । राम और लक्ष्मण में नैकट्य बताया गया है , उसी तरह भरत-शत्रुघ्न में भी नैकट्य है । दशरथ अपनी उत्तरावस्था में कैकेयी को ब्याहकर लाते हैं और दशरथ-कैकेयी का विवाह कैकेयी की इच्छा से नहीं , अपितु एक राजनीतिक-संधि के रूप में होता है । कैकेयी वय में भी छोटी है और फलतः कौशल्या और सुमित्रा से अधिक सुंदर व आकर्षक हैं । कैकेयी के आकर्षण के कारण कौशल्या और सुमित्रा के साथ दशरथ अन्याय भी करते हैं , उनकी उपेक्षा भी करते हैं । परिणामतः राम-लक्ष्मण का शैशव भी उपेक्षित रहता है । राम अपनी माता की पीड़ा को समझते भी है और उसके कारण दुःखी भी होते हैं । कैकेयी से सौतिया-डाह के कारण कौसल्या-सुमित्रा में पारस्परिक बहनापा है जो स्वाभाविक व मनोवैज्ञानिक है । अतः जब राम को वनवास जाना पड़ता है तब वे दोनों माताओं की उचित व्यवस्था करने के उपरान्त ही अयोध्या छोड़ते हैं (3) और उसके बाद भी कई महीने अयोध्या के पास चित्रकूट में रहते हैं , ताकि भरत की गतिविधियों से

परिचित रह सकें । [4]इस प्रकार लेखक ने राम के चरित्र की सृष्टि बिल-कुल मानवीय दृष्टि से की है और ऐसे अनेक पक्षों का परिहार किया है जिनसे राम के चरित्र पर आधुनिक प्रगतिवादी लोग फब्तियां कसते रहते हैं । ऐसे तीन प्रसंग हैं -- वाली को छिपकर मारने वाला प्रसंग, सीता की अग्नि-परीक्षा वाला प्रसंग और राज्याभिषेक के उपरांत पुनः सीता के निष्कासन वाला प्रसंग । डा. कोहली ने रामकथा को रावण-वध और लंका-विजय तक सीमित करके तीसरे लांछन से तो वैसे ही बचा लिया है । प्रथम प्रसंग में वाली के बहुत पूछने पर लक्ष्मण बताते हैं कि तुम्हारा भाई सुग्रीव राम की शरण में आया था और उनके बीच जो संधि हुई उसमें राम ने तुम्हारे वध का प्रण उसे वचन दिया था । अब यदि प्रत्यक्ष युद्ध में प्राणों के मोह से लिप्त होकर तुम राम से क्षमा मांगते तो क्षत्रिय होने के कारण उन्हें तुमको प्राणदान देना पड़ता और तब उनके वचन का क्या होता ? इस धर्म-संकट से बचने के लिए उनको यह मार्ग अपनाना पड़ा । [5]
अग्नि-परीक्षा वाले प्रसंग का लेखन ने एक नया अर्थघटन दिया है कि एक वर्ष की अवधि तक प्रतिकूल लोगों और परिस्थितियों के बीच सीता ने धैर्य धारण किया यही उनकी अग्नि-परीक्षा है । [6]
राम को सीता द्वारा ज्ञात होता है कि अशोकवाटिका में रावण उसे समझाने और ललचाने जरूर आता था, पर उसने उसका बलात्कार नहीं किया । इसके साथ हमेशा महारानी मंदोदरी हुआ करती थी । पर यहां तो राम इतनी हद तक प्रगतिशील हो गए हैं कि यदि सीता बलात्कृत होती तो उसके उस धर्षिता-रूप को भी अंगीकृत करने के लिए राम उद्यत दिखते हैं । [7]

इस प्रकार डा. कोहली ने राम के उद्धारक रूप को लिया है । वे बलात्कृत नारी वनजा का उद्धार करते हैं ।[8] इन्द्र द्वारा बलात्कृत व लांछित अहल्या का उद्धार करते हैं, [9] अज्ञातकुलशीला सीता से विवाह करके एक प्रकार से उसका तथा राजा जनक का भी उद्धार करते हैं । सीता को रावण के चंगुल से छुड़ाकर पुनः स्वीकार

करना यह भी राम के उद्धारक रूप का एक पहलू है । वस्तुतः राम का वनगमन सोद्देश्य था । गुरु विश्वामित्र ने उनको जो दीक्षा दी , जो धनुर्विद्या की शिक्षा दी , लौकिक शस्त्रास्त्र तथा दिव्यास्त्र दिए उसका मुख्य गुरु-ऋण वे समग्र मानव-जाति को अन्याय-अत्याचार से मुक्ति दिलाकर चुकाते हैं ।

यहां राम का एक जन-नायक का रूप सामने आता है । राम जहां-जहां जाते हैं अन्याय , अत्याचार और शोषण के खिलाफ लोगों को जाग्रत व संगठित करते हैं । लोगों को संगठित करके वे उन तमाम संगठनों व प्रतिष्ठानों का नाश करते हैं जो मानवता के शत्रु हैं , सामाजिक-सामूहिक प्रगति के विरोधी है और जो केवल वैयक्तिक वैयक्तिक विकास व विलास में विश्वास करते हैं । प्रगतिवादी शब्दावली का प्रयोग करें तो डा. कोहली के राम पूंजीवाद के विरोधी तथा सर्वहारा के पक्षधर हैं । राम सुबाहु , ताड़का , खर , दूषण आदि राक्षसों का वध करते है और अन्त में सीता का हरण करने वाले रावण का वध उसके कुलसमेत करते हैं । राम का आश्रयदाता स्वरूप भी यहां चित्रित हुआ है । वे सुग्रीव का साथ देते हैं और अन्त तक उसका निबाह करते हैं । उसी प्रकार जब विभीषण उनकी शरण में आते हैं तो वे उनका भी पूरी तरह से ध्यान रखते हैं ।

राम-सीता का दाम्पत्य व पारस्परिक प्रेम वनवास में ही खिलता है । पति-पत्नी से अधिक वे प्रेमी और साथी हैं । राम सीता को अपनी सच्ची जीवनसंगिनी के रूप में देखते हैं और उन्हें शस्त्र शिक्षा भी देते हैं । लक्ष्मण के प्रति उनका स्नेह छलकता है । जब इन्द्रजित के ब्रह्मास्त्र से लक्ष्मण मूर्छित हो जाते हैं तब राम विह्वल हो उठते हैं । सीताहरण पर वे अत्यन्त व्यथित होते हैं और सीतान्वेषण तथा उसकी प्राप्ति हेतु जमीन-आसमान एक कर देते हैं । इस प्रकार पारिवारिक संदर्भ में राम का एक आदर्श स्वरूप हमारे सामने आता हैं । वे आज्ञाकारी पुत्र , आज्ञाकारी शिष्य , स्नेहिल बंधु , आदर्श

पति , आदर्श जननायक के रूप में यहाँ चित्रित हुए हैं । और सभी उपन्यासों में उनके कार्यों और विचारों से उनके एक आदर्श राजा के लक्षण अभिव्यंजित होते हैं ।

§2§ सीता :

सीता इन सभी उपन्यासों में नायिका के रूप में चित्रित हुई है । सीता को यहाँ एक अज्ञातकुलशीला सीरध्वज राजा जनक की पोषिता कन्या के रूप में दर्शाया है । मिथिला के एक उत्सव में अपने खेत में हल चलाते हुए वह राजा जनक को मिलती है । राजा अपने किसी प्रजाजन की कन्या समझकर उसे पाल-पोषकर बड़ी करते हैं । किन्तु अज्ञातकुलशीला होने के कारण कोई क्षत्रिय राजकुमार उसके वरण हेतु आगे नहीं आता । तब अपने गुरु व पुरोहित की सलाह से जनक उसे वीर्यशुल्का घोषित करते हैं , जिससे वे अनेक प्रकार के प्रवादों से बच सकते हैं । विश्वामित्र के मार्गदर्शन में राम शिवधनुष-भंग में सफल होते हैं । सीता भी राम को चाहती है , फलतः राम की सफलता के लिए प्रार्थना करती है —" इससे पूर्व आने वाले परीक्षार्थी पुरुषों की असफलता के लिए सीता ने प्रार्थना की थी ; और आज वही सीता राम की सफलता के लिए प्रार्थना करती-सी प्रतीत हो रही है ..." [10] इन उपन्यासों में चित्रित सीता न पौराणिक है , न पारंपरिक , न रूढ़िवादी । न ~~xxxxxx~~ वह राम की बहन है , न रावण की पुत्री । [11] यहाँ वह सच्चे अर्थों में राम की जीवनसंगिनी है , मानवतावादी आधुनिक चेतना-संपन्न नारी । राम को जब वनगमन का आदेश मिलता है तो वह भी साथ में जाने के लिए तैयार हो जाती है और राम के सारे ~~xxxxx~~ तर्कों को निरस्त कर देती है । वह कहती है —" और आज जब अवसर आया है कि मैं आपके साथ दंडक-वन जाऊं ; पीड़ित तथा त्रस्त जन-सामान्य के सीधे संपर्क में आऊं ; उनके लिए कुछ कर अपने अस्तित्व को उपयोगी बनाऊं , तो आपकी मातृभक्ति , सास की सेवा के ~~xx~~ झूठे बहाने की आड़ में मुझे सड़ने-

गलने के लिए यहां छोड़ जाना चाहते हो । इससे तो कहीं अच्छा होता मैं माता कौसल्या की बात मान , उनकी गोद में पौत्र डाल , उनके मन को संतोष देती ।" [12] यहां सीता न माता है , न देवी ; लक्ष्मण तथा राम के अन्य मित्रों के लिए वह "भाभी" है , और ग्राम-वृद्धाओं के लिए "पुत्री" , ग्रामवधुओं और कन्याओं के लिए "दीदी" । सीता का जन-सेविका वाला रूप यहां सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है ।वह जहां भी जाती है अपने आसपास की ~~स्त्रियों~~× स्त्रियों के साथ बहनापा स्थापित कर लेती है , उससे राम का जन-जागृति का कार्य और भी सुकर हो जाता है । वह राम , लक्ष्मण तथा सुग्रीव के साथ खूब हास-परिहास भी करती है । राम के साथ परिवार नियोजन पर भी बात करती है । [13] वनवास दरम्यान वह शस्त्र-प्रशिक्षण प्राप्त करके आत्म-सुरक्षा तथा उस पर आश्रित अन्य स्त्रियों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त सक्षम हो जाती है । वनवास में वह तमाम प्रकार के कार्य करती है -- कुटीर-निर्माण में लक्ष्मण की सहायता , खाना बनाना , लोगों की चिकित्सा करना , स्त्रियों व बच्चों को पढ़ाना , उनमें नयी चेतना को जगाना , उनके पारिवारिक झगड़ों को सुनकर उनका निबटारा करना आदि-आदि । [14] जब रावण द्वारा वह अपहृत होती है तो अपनी रक्षा हेतु वह काफी संघर्ष करती है । रास्ते-भर कुछ चीज-वस्तुओं को गिराती जाती है ताकि उसके अन्वेषण में उन लोगों को कुछ संकेत मिले । राम , लक्ष्मण , मुनि धर्मभृत्य , निषादरानी , सुग्रीव , लोपामुद्रा , प्रभा आदि के साथ सभी विषयों पर वह गंभीर चर्चा भी करती है , उससे उसकी बुद्धिमता का परिचय मिलता है । वह शांत , गंभीर , विदुषी, रणचंडी , धीरता की प्रतिमूर्ति , पतिव्रता स्त्री , जीवनसंगिनी , जन-सेविका , ममता और करुणा की मूर्ति आदि अनेक रूपों में हमारे सामने आती है । समग्रतया वह एक व्यक्तित्व संपन्न महिमामयी अतीव सुन्दर नारी-चरित्र है । असहाय और प्रतिकूल स्थितियों में भी न वह झुकती है , न अपना स्वत्व और स्वाभिमान खोती है ।

§3§ लक्ष्मण :

लक्ष्मण का आलेखन भी लेखक ने मानवीय धरातल पर ही किया है । राम और लक्ष्मण के समवयस्क होने की बात को भी लेखक नकारते हैं । उनके बीच कम से कम दश साल का अंतर उन्होंने बताया है । फलतः बड़े भैया के रूप में लक्ष्मण राम का बहुत आदर करते हैं । माता सुमित्रा की ओर से लक्ष्मण को यही शिक्षा मिली है कि वह हमेशा राम के साथ में रहे । वनगमन वाले प्रसंग में भी जैसे राम के सारे तर्कों को सीता निरस्त कर देती है, ठीक उसी तरह लक्ष्मण भी राम के सारे तर्कों का उत्तर देते हैं । अंत में राम दोनों माताओं की रक्षा का प्रश्न उठाते हैं, तब लक्ष्मण कहते हैं — " नहीं भैया ! इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी । एक तो सम्राट अभी विद्यमान हैं, फिर यदि पीछे भरत हैं, तो शत्रुघ्न भी है । माताओं का अनिष्ट नहीं हो पाएगा । अपने भरण-पोषण के लिए उनके पास पर्याप्त धन है । आप चाहें तो जाने से पहले कुछ और व्यवस्था भी की जा सकती है । रक्षा के लिए उनके पास विश्वसनीय सैनिक और सेवक हैं । और फिर चाहे माता कौसल्या न हों, पर माता सुमित्रा दोनों की रक्षा में पूर्णतः समर्थ हैं । मेरी माँ कहती हैं, वह क्षत्राणी ही क्या, जो अपनी रक्षा न कर सके ।" [15] लक्ष्मण प्रायः अपनी बातों में माता सुमित्रा का उल्लेख करते हैं । इससे प्रतीत होता है कि उन पर माता सुमित्रा का अधिक प्रभाव है और अपने पिता के लिए वह कभी भी "पिता" शब्द का प्रयोग नहीं करते । "सम्राट" या तो "महाराज" शब्द का प्रयोग करते हैं, उससे दशरथ के प्रति उनकी घृणा या तिरस्कार का पता चलता है । राम जब उनके साथ परिहास करते हैं कि चौदह वर्षों के पश्चात् जब तुम लौटोगे, तब तक तुम्हारे विवाह को वय व्यतीत हो चुकी होगी । तो उसका बड़ा ही करारा, तेज़ और व्यंग्यात्मक उत्तर लक्ष्मण देते हैं — " जिस वय में पूज्य पिताजी ने कैकेयी से विवाह किया था, क्या मेरा वय उससे भी अधिक हो जाएगा ?" [16] लेखक ने उर्मिला के साथ के लक्ष्मण

के विवाह को भीनकारा है। वनगमन के समय लक्ष्मण की आयु लगभग सत्रह वर्ष की बतायी गयी है।[17] इस प्रकार लेखक ने लक्ष्मण पर लगे एक लांछन का भी परिशोध कर लिया है, क्योंकि प्रायः लोग कहते हैं कि नव-विवाहित युवा पत्नी को छोड़कर राम के साथ लक्ष्मण के चले जाने में कोई ॠॠx औचित्य नहीं है, वह नीति व धर्म के विरूद्ध भी है। लेकिन डा. कोहली ने लक्ष्मण को अविवाहित बताया है और उसके लिए उन्होंने वाल्मीकि रामायण का आधार लिया है। "मुझे सारी वाल्मीकीय रामायण में उर्मिला कहीं दिखी ही नहीं, अतः मैंने लक्ष्मण को अविवाहित माना है।"[18] दूसरे डा. कोहली ने लक्ष्मण के चरित्र-चित्रण में उसे सहज-स्वाभाविक बनाया है। चौदह साल लक्ष्मण सोते नहीं हैं, इसको भी उन्होंने अस्वीकृत किया है। वनवास दरमियान रात में लक्ष्मण सोते भी हैं। इन ॠॠॠx चारों उपन्यासों में लक्ष्मण सदैव राम के साथ रहे हैं। वे अत्यन्त उत्साही, साहसी, उद्यमी, नवीन कार्यों व प्रयोगों के प्रति तत्पर, दुर्धर्ष योद्धा, अद्वितीय भ्रातृप्रेमी, कुटीर-निर्माण में अत्यन्त प्रवीण, अत्याचार-विरोधी व न्याय-प्रेमी हैं। अत्याचार और अन्याय देखकर वे तुरन्त उग्र हो जाते हैं। यही कारण है कि सीता-हास-परिहास में उन्हें "उग्रदेव" कहती हैं।[19] शूर्पणखा वाले प्रसंग में भी लेखक उनको बचा ले गए हैं। यहां वे शूर्पणखा के नाक-कान नहीं काटते हैं, केवल उन्हें "शस्त्रचिह्नित" कर देते हैं।[20] "नाहं जानामि केयूरे, नाहं जानामि कुण्डले" वाले लक्ष्मण यहां खूब भाभी के साथ हंसी-मजाक करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। वह जितना राम को चाहते हैं, सीता को भी उतना ही चाहते हैं, अतः सीता-हरण के बाद हम कहीं भी लक्ष्मण के चेहरे हास्य की हल्की लकीर तक नहीं देखते हैं। सीता-प्राप्ति के लिए रावण को पराजित करना आवश्यक था और रावण को पराजित करने के लिए इन्द्रजित मेघनाद का वध परम आवश्यक था, फलतः एक नीति-विरूद्ध कार्य करने से भी लक्ष्मण नहीं चूकता। मेघनाद जब निकुंभिला देवी के सामने यज्ञ कर रहा था और उसके पास ब्रह्मास्त्र नहीं था तब लक्ष्मण ॠषि अगस्त्य द्वारा प्रदत्त ऐन्द्रास्त्र बाण चलाकर

मेघनाद का वध कर देता है । [21] राम-रावण युद्ध में यही वह बिन्दु है जहां से रावण-वध की प्रक्रिया शुरू हो जाती है । इस युद्ध में राम-लक्ष्मण दो-तीन बार मूर्च्छित हो जाते हैं, पर उनकी सेना किसी तरह उनके देह चिकित्सा-शिविर तक पहुंचा देती है, जहां हनुमान और ब्रह्मxx× गरूड़ द्वारा लायी हुई औषधियों के प्रयोग से सुषेण उनमें पुनः पुनः प्राण फूंक देते हैं । उपन्यास के अन्त में एक बार पुनः हम लक्ष्मण को मूर्च्छित रूप में देखते हैं । सीता राम से पूछती है -- " देवर उग्रदेव कहां है ? सहसा सीता ने पूछा । "सौमित्र ! " सीता के मुख से पुराना विशेषण सुनकर राम मुस्कुराए, चिकित्सा-शिविर में है । वृद्ध सुषेण और प्रभा उसका उपचार कर रहे हैं । सौमित्र ने इस युद्ध में अनेक बार बड़े गंभीर घाव खाए हैं । कई बार वह मृत्यु के मुख में जाकर लौटा है । बहुत रक्त बहाया है उसने ।" [22]

§4§ दशरथ :

दशरथ रघुकुल के प्रतापी राजा अज के पुत्र हैं । अपनी युवावस्था में वे एक दुर्धर्ष योद्धा थे और उन्होंने अनेक युद्ध किए थे । उनकी तीन रानियां हैं : कौसल्या, सुमित्रा और कैकेयी । कौसल्या एक (23) सामान्य सामन्त की पुत्री होने के कारण रघुकुल में सदैव उपेक्षित रही । सुमित्रा एक क्षत्रिय राजा की पुत्री थी, किन्तु दशरथ से उसका विवाह एक राजनीतिक संधि के तहत हुआ था, अतः वह मन से कभी दशरथ को चाहती नहीं थी और कैकेयी का विवाह तो बहुत बाद में, जब दशरथ प्रौढ़ता की ओर जा रहे थे तब हुआ था । कैकेयी नवयौवना और असाधारण सुन्दरी थी पर दशरथ ने उसके पराजित पिता को विवश किया था इस विवाह के लिए । अतः वह भी दशरथ से प्रसन्न नहीं थी, बल्कि प्रतिशोध की ज्वाला में धधक रही थी । कैकेयी का वय कम था और दशरथ बूढ़े हो चले थे, परिणामतः कैकेयी हमेशा दशरथ पर हावी रहती है । कैकेयी से सौतिया-डाह के कारण कौसल्या-सुमित्रा में एक प्रकार का बहनापा स्थापित होता है । दूसरे कैकेयी

के रूप व यौवन से मोहांध दशरथ ने उस समय कैकेयराज को वचन दिया था कि कैकेयी और उनका जो पुत्र होगा वही युवराज होगा ।[24]यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जब कोई व्यक्ति अपने से काफी छोटी उम्र की लड़की से विवाह करता है तो वह लड़की देर-सबेर उस पर हावी हो ही जाती है और वह उससे उचित-अनुचित सभी प्रकार के काम करवाती है । यही कारण है कि सम्राट भले दशरथ हैं किन्तु वास्तविक शासन तो कैकेयी और उसके भाई युद्धाजित का ही है । ×××××मैं× राज्य में सभी महत्त्वपूर्ण स्थानों पर कैकेयी ने अपने लोगों को बिठा दिया है । [25] इस प्रकार दशरथ को लेखक ने कामांध और विलासी प्रकृति का सम्राट बताया है । उनके अ××× अन्तःपुर में उक्त तीन रानियों के अतिरिक्त अनेक सुन्दर युवती स्त्रियां हैं । इनके साथ सम्राट ने कभी आकर्षित होकर अपनी इच्छा से , कभी किसीके प्रस्ताव पर अथवा किसीकी भेंट स्वीकार करने के लिए विवाह किए थे । रामने सम्राट के ऐसे अनेक विवाह अपने शैशव में देखे थे । सम्राट किसी ऐसी स्त्री के साथ विवाह कर , उसे दो-तीन दिन अपने महल में रखकर बाद में राजसी अन्तःपुर में धकेल देते थे । अन्तःपुर में जाकर वे न किसीकी पुत्रियाँ होती थीं , न बहनें , न पत्नियां । वे अन्तःपुर की बन्दिनी स्त्रियां होती थीं । कहलाने को तो वे सम्राट की पत्नियां , उप-पत्नियां या रक्षिताएं थीं पर उनको एक पत्नी का अधिकार कभी नहीं मिलता था ।[26] ऐसा महा-विलासी राजा मानसिक दृष्टि से कमजोर ही साबित होता है । जब तक भोग-विलास में समर्थ रहे , कैकेयी उनके गले का हार रही , पर जैसे ही उन्होंने अनुभव किया कि वह अब कैकेयी के भोग में असमर्थ है , वह उनके गले का कांटा बन गयी । अपने बुढ़ापे में वे वचनभंग करके राम को जो युवराज बनाना चाहते हैं उसके पीछे भी उनका अपना स्वार्थ कहीं-न-कहीं निहित है । एक स्थान पर वे राम से कहते हैं -- " पुत्र राम । मुझमें शक्ति थी तो विवेक नहीं था । अब समझ आयी है तो कर्म-शक्ति नहीं है । जिनसे प्रेम करना चाहिए

था , उन्हें सदा दुत्कारता रहा ; और जो दुत्कारने योग्य थे , उन्हें गले से लगाता रहा ।" [27] अपने अन्त समय में उनको कैकेयी से डर लगने लगाथा । यदि कैकेयी को विश्वास में लेकर वे राम का राज्याभिषेक करवाते तो कदाचित वह संभव हो भी जाता परंतु उस बात को कैकेयी से गोपनीय रखा गया , जिसके कारण वह ~~xxxxx~~ घायल शेरनी की भाँति आक्रमक हो गयी और उसी प्रतिक्रिया में उसने अपने दो वचन के तहत भरत के ~~xxxx~~ लिए राज्य और राम के लिए चौदह साल का वनवास मांग लिया , जिससे आहत होकर अन्ततः दशरथ ने अपने प्राण त्याग दिए ।

§5§ कैकेयी :
======

कैकेयी रामायण का एक मुख्य पात्र है । रामायण में जितनी भी घटनाएं ~~xxxx~~ घटित होती हैं , उनके मूल में कैकेयी है । ऐसे पात्रों को बीज-पात्र कह सकते हैं । दशरथ की रानियों में वह ~~xxxx~~ सबसे छोटी है । वह अपने समय की मानी हुई सुन्दरी स्त्रियों में उसकी गणना होती है । लेखक ने कैकेयी के पात्र का मनोवैज्ञानिक ढंग से परिशोध किया है । मैथिलीशरण गुप्त ने भी कैकेयी के पश्चाताप को बताकर उसके चरित्र को उभर उठाने का प्रयास किया था , किन्तु डा. कोहली ने मनोवैज्ञानिक सूत्रों के आधार पर इसका स्वाभाविक सहज , विश्वसनीय व ~~xxxxx~~ तार्किक आकलन किया है । बूढ़े दशरथ से कैकेयी कभी भी पूर्ण तृप्ति का अनुभव नहीं करती है । अतः उसकी अभुक्त काम-वासना महत्वाकांक्षा का रूप धारण कर लेती है । ऐसी स्त्रियां यदि थोड़ी भी शिथिल-चरित्र की होती है तो उनकी काम-वासना उन्हें विपुलवासनावती नारी § निम्फो § [28] बना देती हैं , किन्तु यदि चरित्रवान और विवेक-संपन्न हुई तो उन्हें अत्यन्त महत्वाकांक्षी बना देती हैं । कैकेयी एक चरित्रवान क्षत्रियाणी है , अतः दूसरी परिणति उसके संन्दर्भ में घटित होती है । हिन्दी भाषी क्षेत्रों में एक कहावत-सी प्रचलित है -- " दूजवर को जाऊंगी , पलकां बैठी

राज करूंगी और कुछ कहेगा तो टप मर जाऊंगी । " कैकेयी भी यही करती है ।लक्ष्मण बिलकुल सही कहता है कि वास्तविक राजसत्ता को कैकेयी के हाँ पास है । राजनीति में ऐसी स्त्रियां भयंकर उथल-पुथल मचानेवाली सिद्ध होती हैं । नूरजहां-जहांगीर का किस्सा प्रसिद्ध ही है । वैसे डा. कोहली ने जिस प्रकार से कैकेयी का निरूपण किया है वह क्रमशः राम और कौसल्या के प्रति उदार हो रही थी । राम को तो वह एक पुत्र-रूप में प्रेम भी करने लगी थी । राम के राज्याभिषेक की खबर लेकर जब मंथरा जाती है तो वह मारे खुशी के उसे अपना मूल्यवान हार भेंट-स्वरूप दे देती है , जिसे अपने भावावेश में वह कुब्ज दुर्वृत्त दासी उसके मुंह पर मारकर चली जाती है ।[29] दशरथ यदि थोड़े विवेक से काम लेते तो शायद वैसा न होता जैसा बाद में हुआ । अति-प्रेम के बाद अति-उपेक्षा , बल्कि अविश्वास , इससे ही कैकेयी के क्रोध का पारा चढ़ जाता है । अतः उतनी ही भयंकर उसकी प्रतिक्रिया होती है । कैकेयी जैसे चरित्र प्रेम व उदारता में सबकुछ लुटा सकते हैं , परन्तु यदि उनके स्वाभिमान पर चोट की जाए तो वे परम घातक सिद्ध होते हैं । वह सोचती है कि अयोध्या के राजमहल में सब यदि उसे "चुड़ैल" समझते हैं , तो वह अब सचमुच में चुड़ैल बनकर दिखायेगी ।[30] अन्यथा कैकेयी एक वीर क्षत्राणी है । वह दशरथ के साथ युद्धभूमि पर भी जाती है । शम्बर के साथ हुए युद्ध में वह दशरथ को बचा भी लेती है । तभी दशरथ ने अपनी प्रिय रानी को दो वचन दिए थे , जिसका प्रयोग वह तब करती है , जब दशरथ के ही गलत आकलन के कारण वह घायल शेरनी का रूप धारण कर लेती है । अपने मन की पीड़ा वह राम को भी बताती है — " मैं वह धरती हूं राम । जिसकी छाती करुणा से फटती है तो शीतल जल उमड़ता है , घृणा से फटती है तो लावा उगलती है । दोनों मिल जाते हैं तो भूचाल आ जाता है । ... मैं इस घर में अनुराग का अनुसरण करती हुई नहीं आयी थी । मैं पराजित राजा की ओर से विजयी सम्राट को संधि के लिए दी गयी एक भेंट थी । सम्राट और मेरे वय का भेद आज भी स्पष्ट है । मैं इस पुरुष को पति मान

पत्नी की मर्यादा निभाती आयी हूं , पर मेरे हृदय से इनके लिए स्नेह का उत्स कभी नहीं ~~xxx~~ फूटा । ये मेरी मांग का सिंदूर तो हुए , अनुराग का सिंदूर कभी नहीं हो पाए । ... इस राज-प्रासाद में मुझ पर कभी विश्वास नहीं किया गया । मुझे सदा चुड़ैल समझा गया । मेरे भाई को आतंक माना गया । मेरे मायके की परंपराओं को हीन और घृणित कहा गया । ... राम ! तुम पुत्र हो मेरे । तुम्हें कैसे बताऊं कि हमारी रातें प्यार-मनुहार में कटने के स्थान पर झगड़ों और लानत-मलामत में बीत जाती थी ।"[31] इस प्रकार कैकेयी का ~~xxx~~ चरित्रांकन लेखक ने बहुत ही खूबी , सावधानी व वैज्ञानिक तरीके से किया है । और तब कैकेयी पाठक के लिए घृणा की पात्र नहीं , सहानुभूति की हकदार हो जाती है ।

§6§ कौशल्या :

कौशल्या दशरथ की सबसे बड़ी रानी है । एक सामान्य सामंत की पुत्री होने के कारण उसे वह मान-सम्मान कभी नहीं मिला जिसकी वह हकदार थीं । उनकी तथा उनके पुत्र की सदैव उपेक्षा होती रही । उपेक्षित होते हुए भी दशरथ को सच्चे दिल से किसीने प्यार किया है तो वह कौसल्या ही है । कौसल्या का चरित्र एक दलित चरित्र § सप्रेस्ड केरेक्टर § रहा है । वनगमन के आदेश के उपरांत सीता जब माता कौसल्या से मिलने जाती है तब वह अपने हृदय की व्यथा सीता के सम्मुख उंडेल देती है — " मेरा सारा जीवन पति की प्रताड़ना और सपत्नियों की उपेक्षा की कथा रहा है । मैं एक सामान्य सामन्त की पुत्री — इस रघुकुल में कभी वह महत्व न पा सकी , जो एक साम्राज्ञी को मिलना चाहिए । मेरे जीवन में सुख का पहला क्षण तब आया था , जब मेरा राम मेरी गोद में आया । मैंने तिल-तिल कर उसे पाला कि बड़ा होकर , ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते वह युवराज बनेगा , फिर सम्राट बनेगा -- मेरे दुःख

के दिन कट जाएंगे । सुख की घड़ियां आएंगी ... वर्षों से संजोये मेरे स्वप्न को आकार मिलने को हुआ , जब मैंने कहा कि मैं कैकेयी के भय से मुक्त हो गयी , तो इस कैकेयी ने फिर दंश मार दिया । वह रोज प्रहार करती थी , रोज शस्त्र चलाती ; और मैं अपने महाप्रहार की प्रतीक्षा में चुपचाप दम साधे पड़ी थी । मैं नहीं जानती थी , बेटी! कि वह मेरे अंतिम प्रहार को निष्फल करने के लिए झूठे-सच्चे वरदानों की ××××× काल्पनिक कहानियां लिए , पहले से ही तैयार बैठी है ।" [32] इस प्रकार कौसल्या एक सीधी-सादी , परदुःखकातर , सच्ची पति-व्रता नारी , एक ममतामयी मां , और सुमित्रा के लिए एक सहृदयपूर्ण दीदी है । मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ऐसे चरित्र को "मासोकवादी चरित्र (मेशोइस्ट कैरेक्टर) कहते हैं ।

(7) सुमित्रा :

सुमित्रा सम्राट दशरथ की दूसरी पत्नी और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता है । उसका चरित्र कौशल्या का विलोम है । मगध-नरेश की पुत्री होने के कारण उनका "पोलिटिकल स्टेटस" कौशल्या से ऊंचा है , अतः वह किसी मामले में दबती नहीं है । वह असल क्षत्राणी है और विवाह के समय तो सुन्दर भी काफी थीं । परन्तु वह राजा दशरथ को कभी चाहती नहीं है । एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करना सुमित्रा की दृष्टि में उचित नहीं है । दूसरे सुमित्रा के पिता मगध-नरेश को भी यह विवाह एक राजनीतिक-संधि के रूप में ही करना पड़ा था । एक स्थान पर सुमित्रा ×××××× के संदर्भ में बताया गया है —" उन्हीं दिनों दशरथ ने मगध की राजकुमारी सुमित्रा से विवाह कर लिया । सुमित्रा अद्भुत सुन्दरी थी । उसे देखकर आंखें चौंधिया जाती थीं । उसे देखकर दशरथ की पसन्द की प्रशंसा करनी पड़ती थी । किन्तु दशरथ ने भी उसका रूप ही देखा था — मन वे नहीं देख पाए थे । सुमित्रा प्रज्वलित अग्नि थी , पूर्ण तीव्रता से जलती हुई अग्निकाष्ठा । वह आलोक भी देती

थी और ताप भी । उसने पहले दिन ही स्पष्ट कर दिया था कि एक पत्नी और पुत्र के होते हुए दशरथ का इस प्रकार का पुनः विवाह उसे एकदम पसंद नहीं था । अधीनस्थ मगध-नृप ने दशरथ की सैन्य-शक्ति से भयभीत होकर अपनी पुत्री का विवाह कर दिया था और सुमित्रा यहां आ गयी थी । वह दशरथ की धर्मपत्नी है और रहेगी , किन्तु न वह उनकी कान्ता , प्रेमिका बन सकती है , न बनना चाहती है । कौशल्या को कितना प्रेम , कितनी सहानुभूति तथा कितनी करुणा दी थी सुमित्रा ने । कौशल्या के प्रति इस करुणा के भाव में डूबी सुमित्रा का तिरस्कार दशरथ नहीं कर सके ; स्वयं सुमित्रा ही उनका ~~xxxxxxxx~~ तिरस्कार करती रही । वह पत्नी तथा कुलवधू की मर्यादा को मानकर चलती रही , किन्तु रही सदा निडर सिंहनी के समान ।" [33] अनेक स्थानों पर लक्ष्मण कहते हैं मेरी माता ऐसा कहती है , मेरी माता वैसा कहती है । उससे ज्ञात होता है कि वह लक्ष्मण को बराबर शिक्षा देती रहती है कि उसे सदैव राम के साथ रहना चाहिए , क्योंकि राम के साथ ही न्याय और धर्म है । जब राम को वनगमन का आदेश मिलता है तब कौशल्या तो निढाल-सी हो जाती है , लेकिन सुमित्रा चुप नहीं रहती --" इस प्रकार के आदेशों को स्वीकार करना क्या धर्म है ? राम ! तुम अपना अधिकार ही नहीं छोड़ रहे , कैकेयी के अत्याचार का समर्थन भी कर रहे हो । अपने बल को पहचानो , पुत्र ! तुम्हारे एक संकेत पर कोसल की प्रजा कामुक सम्राट को मार्ग से हटा , तुम्हारा अभिषेक कर देगी । ... और प्रजा को भी रहने दो । अकेला लक्ष्मण इन दुष्टों को दंड देने में पूरी तरह समर्थ है ।" [34] लक्ष्मण में जो आवेश , आवेग और आग है वह सुमित्रा के कारण है । सुमित्रा के कारण ही लक्ष्मण अपने पिता को सदैव घृणा की दृष्टि से ही देखता है । जब राम को समझाने के सारे प्रयत्न व्यर्थ साबित होते हैं , तब एक क्षण का भी विचार किए बिना वह लक्ष्मण को राम के साथ जाने का आदेश दे देती है । इस प्रकार हम देखते हैं कि सुमित्रा एक तेजस्वी , स्वाभिमानी , नारी-

चेतना संपन्न नारी-पात्र है ।

§8§ विश्वामित्र :

वैसे तो रामायण में अनेक ऋषिमुनियों का उल्लेख मिलता है, किन्तु इनमें ब्रह्मर्षि वसिष्ठ, राजर्षि विश्वामित्र तथा महर्षि वाल्मीकि और महर्षि अगस्त्य विशेष उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं । वाल्मीकि का चित्रण उत्तरकांड में विशेषतः मिलता है और डा. कोहली ने उत्तरकांड की कथा को लिया ही नहीं है, अतः जहां तक उनके उपन्यासों का सम्बन्ध है, उनमें हमें तीन ऋषि विशेष रूप से मिलते हैं -- वसिष्ठ, विश्वामित्र और अगस्त्य । "दीक्षा" उपन्यास के तो मानो नायक ही विश्वामित्र हैं । राम-लक्ष्मण को पारंपरिक व अकादमिक शिक्षा तो गुरु वसिष्ठ से मिलती है, किन्तु राम-लक्ष्मण में मानवतावादी चेतना, दलित-पीड़ित लोगों की मुक्ति की चेतना, सामाजिक जड़ रूढ़ियों से अपमानित व अवमानित नारियों के उद्धार की चेतना, अत्याचार-अनाचार-अन्याय के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने की चेतना की दीक्षा तो ऋषि विश्वामित्र ही देते हैं । इस दृष्टि से देखा जाए तो वे भी एक बीज-पात्र हैं । उपन्यासमाला का प्रथम उपन्यास "दीक्षा" है और उसका प्रारंभ ही ऋषि विश्वामित्र के सिद्धाश्रम से होता है । सिद्धाश्रम में राक्षसों का आतंक बढ़ रहा था । प्रतिदिन कोई-न-कोई नृशंस घटना हो जाती थी । सिद्धाश्रम, और इस प्रकार सम्पूर्ण भारतवर्ष को राक्षसों के आतंक व अत्याचार से मुक्त करवाने के लिए वे अयोध्या जाते हैं और वहां से सम्राट दशरथ से राम-लक्ष्मण को मांग लाते हैं । राम-लक्ष्मण के विषय में उनको निरंतर सूचनाएं मिलती रही हैं और उनके पास जो शस्त्रास्त्रों का ज्ञान है उसे देने के लिए उन्हें उचित पात्रों की तलाश थी । राम-लक्ष्मण उनको सर्वथा उपयुक्त दिखते हैं । सिद्धाश्रम पहुंचने से पहले रास्ते भर वे राम-लक्ष्मण को मानवता की, मानवधर्म की दीक्षा देते रहते हैं और जब वे×××××× पूर्णतया आश्वस्त हो जाते

हैं तो राम-लक्ष्मण को दिव्यास्त्र भी देते हैं जो उनको उनके राक्षसो-न्मूलन के अभियान में काम आएंगे । यहाँ विश्वामित्र एक ऐसे ऋषि हैं जो रात-दिन वैज्ञानिक आविष्कार में लगे रहते हैं और मानवता व धर्म व न्याय की रक्षा हेतु नित्य-नवीन शस्त्रास्त्रों का निर्माण-आविष्कार इत्यादि करते रहते हैं । विश्वामित्र आधुनिक चेतना संपन्न एक बुद्धिजीवी ऋषि हैं । उनकी सोच जड़ व रूढ़िवादी नहीं है । वे नये मानवतावादी-प्रगतिवादी विचारों का स्वागत ही नहीं करते , अपितु उनको प्रोत्साहित करते हैं । उनके द्वारा प्रदत्त शस्त्रास्त्रों से राम-लक्ष्मण ताड़का , सुबाहु आदि का वध करते हैं और मारीच को भगा देते हैं ।एक प्रकार से देखा-जाए तो राम-लक्ष्मण ऋषि विश्वामित्र के ही मानस-पुत्र प्रमाणित होते हैं जो आगे की क्रांतिविधियों को आकार देते हैं । यह उनकी दीक्षा का ही परिणाम था कि पिता व माता कैकेयी के वनगमन का आदेश उन्हें अभिशाप नहीं वरन् वरदान , एक सुअवसर प्रतीत होता है जिससे वे मानवता का मार्ग प्रशस्त कर सके ।

(9) वसिष्ठ :
==========

विश्वामित्र का विलोम हमें गुरु वसिष्ठ में मिलता है । वे सम्राट दशरथ के राज-पुरोहित ही नहीं उनके गुरु भी हैं । किन्तु उनका चिंतन रूढ़िवादी , परंपरावादी , जड़ व पुराना है । वे रघुकुल की मानववंशी परंपरा के पोषक हैं जहाँ पुरुषसत्ताक समाज का प्राधान्य रहता है । वे निरंतर सनातन धर्म , ब्राह्मणधर्म , वर्णाश्रमधर्म की बातें करते हैं । वे अपने विचार व चिंतन दूसरों पर आरोपित करते हैं और स्वतंत्र चिंतन व चेतना की उनके यहाँ कोई गुंजायश नहीं है । उपन्यास के प्रारंभ में ही राम के विवाह के संदर्भ में जो बातें वे करते हैं उनसे उनकी रूढिवादी विचारधारा प्रत्यक्ष हो उठती है — " सम्राट का विचार अति उत्तम है । राम का विवाह कर दिया जाना चाहिए , वे ब्रह्मचर्य की आयु पूर्ण कर

चुके हैं । किन्तु सम्राट को विवाह-संबंध स्थापित करते हुए , अपने वंश के अनुकूल समधी की खोज करनी चाहिए । इस विषय में यदि मेरी इच्छा जानना चाहें तो मैं कहूंगा कि सम्राट यदि किन्हीं राजनीतिक कारणों से भी चाहें , तो राजकुमार का विवाह पूर्व के व्रात्यों में न करें , जिन्होंने वैदिक कर्मकाण्ड को त्यागकर , स्वयं को ब्रह्मवादी चिंतन में विलीन कर भ्रष्ट कर लिया है । सम्राट ! राजनीति का अपना महत्व है , किन्तु आर्य जाति के रक्त , कर्म , संस्कृति एवं विचारों की शुद्धता का महत्व उससे भी कहीं अधिक है । पूर्व के अतिरिक्त दक्षिण में भी ऐसा कोई राजवंश मुझे नहीं दीखता , जो रघुकुल का उपयुक्त समधी हो सके ।"[35] ठीक इसी बिन्दु पर दशरथ की राजसभा में विश्वामित्र का आगमन होता है और उनका जो कथन है वही इन दो महर्षियों के अन्तर को स्पष्ट कर देता है —" मैं नहीं जानता , तुम्हारी राजसभा में कितनी चर्चा राजनीति की होती है और कितनी ब्रह्मवाद की । पर संभव है कि तुम्हें यह सूचना हो कि जंबूद्वीप के दक्षिण में लंका नामक द्वीप में रावण नामक एक राक्षस बसता है ।"[36]

§10§ अगस्त्य :

अगस्त्य ऋषि भी विश्वामित्र की तरह आधुनिक और प्रगतिवादी हैं । जहां वसिष्ठ आर्य जाति के रक्त और शुद्धता की बात करते हैं , वहां अगस्त्य वानर , ऋक्ष , गृध्र आदि अनार्य जातियों में चेतना जगाने के लिए विन्ध्य को लांघकर दक्षिण में जो जाते हैं तो वहीं के होकर रह जाते हैं । इतना ही नहीं वे आर्य-अनार्यों के विवादों को भी मिटाते हैं और उनको राक्षसों के अत्याचार , अनाचार , अन्याय और शोषण के विरुद्ध एक त्रित करते हैं । अनार्य जातियों में भूत-प्रेत इत्यादि के अंध-विश्वासों को दूर कर अपने द्वारा अन्वेषित औषधियों से उनकी चिकित्सा कर उनके रोगों को दूर करते हैं । उनकी पत्नी लोपामुद्रा उनके इस कार्य में सच्ची जीवन-संगिनी बनती है । उनका

अपना चिकित्सालय है और वे एक अच्छी शैल्य-चिकित्सक भी हैं । वानर तथा दक्षिण की अन्य आदिम जातियों में यह अन्धविश्वास था कि समुद्र को लांघना पाप है, अतः वे नाव तथा जलपोत बनाने के पक्ष में भी नहीं थे । नमक भी नहीं बनाते थे । मछलियों के पकड़ने के लिए समुद्र में दूर तक जाते नहीं थे । उनके इन अन्धविश्वासों को दूर कर वे समुद्र पार के राक्षसों को न केवल मार भगाते हैं बल्कि उनमें से कुछेक का वध भी करते हैं । प्रभा नामक वानर कन्या लोपामुद्रा के साथ रहकर शैल्य-चिकित्सा का प्रशिक्षण लेती है । यहाँ लेखक ने मुनि अगस्त्य द्वारा समुद्र को पी जाने के मिथक को भी तोड़ा है । समुद्र को लांघना, समुद्र पर काबू पाना, नाव और जलपोत बनाना ही समुद्र को पीना है । विश्वामित्र की तरह वे भी इन लोगों को शिक्षित, दीक्षित एवं शस्त्र-विद्या आदि में प्रशिक्षित करते हैं । उपन्यास में अगस्त्य-कथा मुनि धर्मभृत्य की रचना के रूप में तथा मुनि सुतीक्ष्ण जो अगस्त्य के शिष्य रह चुके हैं उनके द्वारा हमारे सामने आती है । सुतीक्ष्ण बताते हैं कि मुनि अगस्त्य किस प्रकार कालकेयों को पराजित करते हैं और वातापि तथा इल्वल आदि राक्षसों का संहार करते हैं । सुतीक्ष्ण के आश्रम से राम-सीता-लक्ष्मण मुनि अगस्त्य के आश्रम में जाते हैं । उनके साथ गंभीर विचार-विमर्श होता है । राम द्वारा आश्वस्त होने पर अगस्त्य भी उन्हें कुछ दिव्यास्त्र देते हैं ।

§।।§ शूर्पणखा :

शूर्पणखा कैकेसी-विश्रवा की संतान और रावण-विभीषण-कुंभकर्ण की बहन है । उपन्यास में उसे एक प्रौढ़ वय की विगतयौवना कामांध विपुलवासनावती स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है । किन्तु कैकेयी की भांति लेखक ने इस चरित्र का भी बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से निरूपण किया है । शूर्पणखा कभी एक सुन्दर भावुक प्रेम करने वाली युवती थी । कालकेय राजकुमार विद्युज्जिह्व से वह प्रेम करती थी । रावण के विरोध पर वह उससे विवाह कर लेती है, किन्तु रावण अपने प्रति-

क्रोध में अपने बहनोई की हत्या कर देता है और विवाह के पहले दिन ही वह विधवा हो जाती है । इस घटना का बड़ा ही भयंकर प्रभाव उसके चरित्र पर पड़ता है और वह पर-पीड़क हो जाती है । किसी भी दम्पति का सुख उससे देखा नहीं जाता । रावण उसे प्रसन्न करने के लिए उसे जनस्थान में भेज देता है और वहां राक्षसों का स्कन्धावार स्थापित करके खर-दूषण के साथ वह निरीह लोगों पर अत्याचार करती है । कोई युवक यदि उसकी नजरों में बस गया तो उसका उपभोग करती है । राम, लक्ष्मण और सीता जब दण्डकवन में आते हैं तब सर्वप्रथम वह राम को देखकर उन पर मुग्ध हो जाती है । लंका से श्रृंगार-कर्मियों को बुलाकर वह श्रृंगार की तैयारी करती है, दुग्ध-स्नान करती है, जब वह लक्ष्मण को देखती है तो उस पर भी मुग्ध होती है, परन्तु अपनी योजना में जब असफल होती है तो कुछ सैनिकों को लेकर धावा बोल देती है । लक्ष्मण उसके नाक-कान पर शस्त्र द्वारा कुछ रेखाएं खींच देता है । प्रतिशोध की आग में धधकती शूर्पणखा खर-दूषण को चौदह हजार की सेना के साथ राम-लक्ष्मण को बन्दी बनाकर लाने के लिए भेजती है, पर वे दोनों राम के हाथों मारे जाते हैं । तब अकंपन के कहने पर शूर्पणखा लंका चली जाती है । रावण को सीताहरण के लिए वही प्रेरित करती है, ताकि सीता को छुड़ाने राम-लक्ष्मण आवें । राम-रावण युद्ध में वह केवल अपने प्रतिशोध को ही देखती है । यदि राम-लक्ष्मण मारे जाते हैं तो भी उसका प्रतिशोध पूरा होता है, और यदि रावण मारा जाता है तो भी उसका प्रतिशोध पूरा होगा क्योंकि रावण ने उसके प्रेमी-पति की हत्या की थी ।

§12§ वाली :

वाली किष्किंधा के वानरों का राजा है । वह अत्यन्त बलशाली है और उसे अपने बाहुबल का काफी अभिमान भी है । डा. कोहली की उपन्यासमाला में उनके चौथे उपन्यास "युद्ध" में उसकी कथा का आलेखन हुआ है । मतंग वन में दुंदुभि नामक वन्य

भैंसे को वह अकेले मार डालता है ।[37] रावण भी उसकी शारीरिक शक्ति से परिचित है । किन्तु रावण को जो शोषण-लीला है उसमें वाली कहीं बीच में नहीं आता है, अतः रावण से उसकी मैत्री है । वाली को विलासी जीवन की ओर खींचने के लिए रावण के एक प्रतिनिधि के रूप में मंदोदरी का भाई मायावी किष्किंधा जाता है । वह वाली को सुरा-सुन्दरी के लिए प्रेरित करता है । वाली अलका नामक एक नृत्यांगना-वेश्या के प्रेम-जाल में पूरी तरह से फंस जाता है । फलतः वह प्रजा-कल्याण के कामों से मुंह मोड़कर विलासी जीवन को प्रोत्साहित करता है । इसके कारण राजसभा में हमेशा सुग्रीव से झड़प होती है । एक दिन जब वाली अलका के पास जाता है तो उसे मायावी के साथ रंगों हाथ पकड़ लेता है । मायावी किसी तरह वहां से भागकर मतंग-वन में छिप जाता है । वाली मायावी के पीछे भागता है । एक साल तक बराबर उसका पीछा करता है और अन्ततः वह मायावी का वध कर देता है । इधर वाली के न लौटने पर सुग्रीव का राज्याभिषेक होता है । वाली की पत्नी तारा, पुत्र अंगद आदि सुग्रीव के साथ ही रहते हैं । वाली के लौटने पर सुग्रीव वाली को राज्य लौटा देता है, किन्तु कुछ चाटूकार निरंतर वाली को उकसाते रहते हैं जिसके कारण वाली सुग्रीव को बन्दी बनाने के लिए भी उद्यत हो जाता है, किन्तु शिल्पी नामक एक विश्वसनीय कर्मचारी तथा अंगद की सहायता सुग्रीव जान बचाकर भाग निकलने में सफल हो जाता है । सुग्रीव मतंग वन में आश्रय लेता है । वहां सुग्रीव को नल, नील, हनुमान, तार, सुषेणआदि भी मिलते हैं । उधर वाली सुग्रीव की पत्नी रूमा को बलात्कृत करता है । वाली के अत्याचार व अन्याय से जनमत उसका विरोधी हो जाता है । इधर सीताहरण के पश्चात् सीतान्वेषण में निकले राम, लक्ष्मण तथा उनके साथी मतंगवन तक पहुंचते हैं । सर्वप्रथम हनुमान से उनकी भेंट होती है । हनुमान उनको सुग्रीव से मिलाता है । राम और सुग्रीव के बीच संधि होती है । उस संधि के तहत राम छिपकर वाली का वध कर देते हैं और सुग्रीव का राज्याभिषक करवा

देते हैं । इस प्रकार वाली एक वीर योद्धा , परम पराक्रमी , किन्तु विलासी , कच्चे कान का और अनुजभार्यागामी व्यक्ति के रूप में हमारे सामने आता है ।

(13) सुग्रीव :

सुग्रीव किष्किंधानरेश वानरराज वाली के अनुज बंधु हैं । शैशव में दोनों भाइयों में अतीव प्रेम था । वाली कुछ अधिक बलशाली और सुग्रीव उसकी तुलना में कुछ कमजोर प्रतीत होते हैं । वाली के किष्किंधा-नरेश होने के उपरान्त दोनों भाइयों में विरोध बढ़ता जाता है । वाली के कुछ चाटुकार मंत्री नहीं चाहते कि इन दोनों भाइयों में प्रेम बढ़े । अतः इन दोनों को लड़ाकर वे अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं । सुग्रीव एक सीधा-सादा , भला , प्रजा-कल्याण की भावनावाला व्यक्ति है । राजसभा में वह हमेशा लोगों के भले की और वानर-समाज के कल्याण की बातें करता है । अतः वाली-पुत्र अंगद भी अपने चाचा को खूब चाहता है । राजसभा में अंगद , हनुमान , नल , नील, शिल्पी, सुषेण , तार आदि सुग्रीव के पक्षकार हैं । मायावी-वध के बाद जब वाली पुनः किष्किंधा के सिंहासन पर बैठता है , तबसे सुग्रीव के साथ उसका अंतर बढ़ता ही जाता है । फलतः सुग्रीव को भाग जाना पड़ता है । वाली अपनी नीचता पर उतर आता है । वह सुग्रीव की पत्नी रुक्मा को भी अपने घर में बिठा लेता है । फलतः अनेक लोग वाली के विरोध में खड़े होते हैं । सीता को खोजते हुए राम, लक्ष्मण तथा उनके कुछ साथी जब मतंगवन में आते हैं तो हनुमान के द्वारा सुग्रीव से उनकी मुलाकात करवायी जाती है । सुग्रीव राम-लक्ष्मण की शक्ति की परीक्षा लेते हैं और पूर्णरूपेण आश्वस्त होने पर उनसे संधि करते हैं । राम और सुग्रीव की मनःस्थिति प्रायः एक-सी होने के कारण राम सुग्रीव का पक्ष लेने के लिए राजी होते हैं , दूसरे वाली की तुलना में सुग्रीव राम को अधिक भला और सज्जन प्रतीत होता है । राम हनुमान के बुद्धि-चातुर्य से भी प्रभावित होते हैं । राम के साथ

सुग्रीव की जो संधि होती है उसके तहत राम वाली का वध करवाने के उपरान्त सुग्रीव का किष्किंधानरेश के रूप में राज्याभिषेक करवा देते हैं । कुछ तो राजनीतिक परेशानियां और कुछ अपनी विलासी प्रवृत्ति के कारण सीतान्वेषण का कार्य खटाई में पड़ जाता है । सुग्रीव अपनी धर्षिता-पत्नी रूमा को तो स्वीकार करता है, किन्तु तारा की इच्छा से वह उसके साथ भी विवाह कर लेता है । फलतः अंगद के मन में भी कुछ मानसिक ऊहोपोह पैदा होता है । जब अधिक समय व्यतीत हो जाता है तब राम लक्ष्मण के द्वारा सुग्रीव को संदेश भिजवाते हैं कि जिस रास्ते से वाली गया है, वह अभी बन्द नहीं हुआ है । [38] सुग्रीव अपना आलस्य व विलासिता को तिलांजलि देकर सीतान्वेषण के कार्य में सन्नद्ध हो जाता है । हनुमान-अंगद की टुकड़ी जब सीता के समाचार लेकर आती है तब युद्ध की तैयारियां होती हैं । समुद्र-संतरण और उसके बाद के युद्ध में भी सुग्रीव राम का अपनी सेना-सहित पूरी तरह से साथ देते हैं । इस प्रकार सुग्रीव एक कमजोर दिल के पर भले और सज्जन वानरराज हैं ।

(5) हनुमान :

हनुमान वानर-नायक केसरीकुमार के पुत्र हैं । अतः उनको केसरीनंदन भी कहा जाता है । उनकी माता का नाम अंजनि है । हनुमान सुग्रीव के अत्यन्त विश्वसनीय मंत्री हैं । वे सुग्रीव का हर परिस्थिति में साथ देते हैं । जब सुग्रीव वाली द्वारा भगाये जाने पर मतंगवन में आश्रय लेते हैं तब उसको हनुमान का ही सबसे ज्यादा विश्वास और सहारा मिलता है । हनुमान वाली और अंगद की तरह अत्यन्त बलशाली हैं । हृदय और चरित्र निर्मल हैं । मालिक के प्रति वफादारी का भाव उनमें कूट-कूट कर भरा है । उनमें पवन-सी फूर्ति और गति है, फलतः उनको पवनपुत्र भी कहा गया है । अत्यन्त बलशाली होने के साथ-साथ वे ज्ञान और गुण के सागर हैं । बहुत ही चतुर, निपुण और बुद्धिशाली हैं । राम-लक्ष्मण से भेंट होने के पश्चात्

वे राम के भी परम भक्त हो जाते हैं । सीतान्वेषण-कार्य में सबसे ज्यादा तत्परता वे ही दिखाते हैं । हनुमान के चरित्र का आलेखन भी लेखक ने मानवीय धरातल पर ही किया है । पौराणिक आख्यानों तथा रामायणों में जो चमत्कार के तत्व हैं उनको यहां कोई स्थान नहीं दिया गया है । वे वानर जाति के एक शक्तिशाली यात्रा हैं । अत्याचार , अनाचार , अन्याय और शोषण के विरूद्ध वे हमेशा खड़े होते हैं । वाली और सुग्रीव में सुग्रीव के पक्ष के साथ ये सब होने से ही उन्होंने सुग्रीव को साथ दिया था । इसी तरह राम और लक्ष्मण के साथ वे इसलिए हैं कि उनकी लड़ाई राक्षसों के विरूद्ध है । रामायण की भांति समुद्र-संतरण का कार्य हनुमान किसी चमत्कार के तहत नहीं करते , बल्कि वे लोग काफी अध्ययन-निरीक्षण करते हैं , और हनुमान समुद्र-संतरण वहां से करते हैं जिसे वे लोग "स्तिया" कहते हैं ।[39] लक्ष्मण को शक्ति लगने पर हनुमान औषधियां लेने हिमालय नहीं जाते , बल्कि किष्किंधा के पास के वनों में से वे उन्हें प्राप्त करते हैं । [40] उन्हें अत्यन्त चतुर , बुद्धिशाली , शक्तिशाली व चरित्रवान निरूपित किया गया है ।

§15§ रावण :

रामायण वस्तुतः राम -रावण के युद्ध की कहानी है । राम यदि डा. कोहली के उपन्यासमाला के नायक हैं तो रावण को हम खल-नायक कह सकते हैं । अन्य अनेक रामायणों तथा काव्यों व नाटकों में रावण के धनात्मक स्वरूप को भी चित्रित किया गया है । सम्प्रति " झी टी.वी. " पर रावण नामक जो धारावाहिक आ रहा है , उसमें भी रावण के जीवन के अनेक सकारात्मक पक्षों को चित्रित किया गया है । आचार्य चतुरसेन शास्त्री कृत उपन्यास "वयं रक्षामः " में रावण के चरित्र का निर्माण रावण की दृष्टिकोण को केन्द्रस्थ रखते हुए हुआ है । किन्तु जहां तक डा. कोहली का सम्बन्ध है , उन्होंने रावण के ऋणात्मक पक्षों को ही चित्रित किया है ।

डा. कोहली के मतानुसार राक्षस कोई जाति नहीं , "प्रवृत्ति" है । किसी भी जाति , धर्म , संप्रदाय , वर्ण का व्यक्ति "राक्षस" हो सकता है । यहां राक्षस अन्याय , अत्याचार , शोषण , विलास व पूंजीवाद का प्रतीक है । जो भी व्यक्ति यह सब करता है वह "राक्षस" है , और इस तरह डा. कोहली का रावण तो "महाराक्षस" होगा, क्योंकि वह अन्य अनेक छोटे-बड़े राक्षसों का संरक्षक वे निर्माता है । तुंभरण तथा मुनि मांडकर्णि जैसे लोगों को "राक्षस-कर्म" में वह दीक्षित करता है । आज की दृष्टि से विचार करें तो अमरीकी प्रमुख बुश को हम रावण का प्रतिरूप मान सकते हैं , जो अन्य तमाम अविकसित तीसरे विश्व के देशों का शोषण कर रहा है । यद्यपि लेखन ने बड़ी कुशलता के साथ रावण के अन्तर्द्वन्द्व , उसके भीतरी न्याय व विवेक के चित्रण हेतु " प्रतिरावण" की कल्पना की है । उसके भीतर का यह प्रतिरावण जब-तब उसकी , उसके कर्मों की , उसकी नीतियों की , आलोचना करता है । यहां दशानन के रूप में इसका चित्रण नहीं हुआ है । वह विद्वान व बुद्धिशाली तथा शक्तिशाली है , किन्तु अपनी इन शक्तियों का प्रयोग वह अत्याचार व अन्याय के लिए करता है । राजसभा में विभीषण उसकी नीतियों की कटु आलोचना करता है । किन्तु वह विभीषण को अपना शत्रु समझता है । डा. कोहली के उपन्यासों में रावण का नामोल्लेख प्रायः सभी उपन्यासों में हुआ है , किन्तु उसका वास्तविक प्रवेश संघर्ष की ओर" के द्वितीय खण्ड से होता है । छद्म छद्म वेश धारण करके मारीच की कपट-लीला के सहारे वह सीता का हरण करने में सफल हो जाता है । ताड़का , सुबाहु , खर-दूषण आदि के वध के कारण रावण शूर्पणखा के इस मत से सहमत हो जाता है कि दण्डकवन में राम के साथ युद्ध उसके हित में नहीं रहेगा । रावण को लगता है कि समुद्र-संतरण करके राम के लिए लंका आना असंभव होगा । चाटुकारों के कारण रावण एक प्रकार से सत्य समाचारों से अवगत नहीं हो पाता है , अतः समुद्र संतरण द्वारा राम की वानर-सेना जब लंका के द्वारा पर खड़ी हो जाती है , तब वह मानो ठगा-सा रह जाता है । मंदोदरी , विभीषण , नाना

माल्यवान आदि सभी की वह अवगणना करता है और अपने दंभ और अभिमान के कारण अन्ततः युद्ध में न केवल मारा जाता है, बल्कि विभीषण को छोड़कर उसके ~~xxx~~ पूरे कुल का विनाश हो जाता है। जब तक इन्द्रजित था तब तक रावण को युद्ध में जीतने की आशा थी, किन्तु इन्द्रजित के वध के बाद तो वह पूरी तरह से टूट जाता है। लेखक ने राम द्वारा रावण की नाभि में बाण मारने वाले मिथक का भी खंडन किया है। रावण का वध अन्ततः अगस्त्य द्वारा प्रदत्त ब्रह्मास्त्र से होता है।[41] वाल्मीकि रामायण में भी रावण का वध इसी विधि से बताया है।[42] आग्नेयास्त्र द्वारा रावण की नाभि में स्थित अमृत को सोख लेने की बात अध्यात्म रामायण में कही गयी है।[43] लेखक पहले ही कह चुके हैं कि अपनी इस उपन्यासमाला में उन्होंने प्रायः वाल्मीकि रामायण को ही आधार बनाया है।[44]

§16§ मंदोदरी :

अप्सरा की पुत्री होने के कारण मंदोदरी अतीव सुन्दरी है। अतः रावण जब अन्य स्त्रियों का हरण करके लाता है, तो उनकी ओर से वह निश्चिंत रहती है। उसे अपने रूप-~~xxx~~ सौन्दर्य पर पर्याप्त भरोसा है। परन्तु मंदोदरी को रावण की यह प्रवृत्ति कभी अच्छी नहीं लगती है। मेघनाद के कारण वह और अधिक आश्वस्त हो जाती है। उसका पुत्र इन्द्रजीत है। रावण भी उससे भय खाता है। किन्तु मेघनाद को भी अपने पिता पर गर्व रहता है और पिता द्वारा किए गए सीताहरण का वह विरोध नहीं करता, क्योंकि वह सोचता है कि पिताने बुआ शूर्पणखा के साथ हुए दुर्व्यवहार का प्रतिशोध लिया है। मेघनाद के कारण ही मंदोदरी रावण से वाद-विवाद करती रहती है और इसीलिए सीता को अशोकवाटिका में ठहराने की बात वह रावण को मनवा सकती है। वस्तुतः लंका में सीता जो सुरक्षित रह पायी है उसके पीछे मंदोदरी की बहुत बड़ी भूमिका है। यह पहले निर्दिष्ट किया

जा चुका है कि अद्भुत रामायण में सीता को प्रकारान्तर से मंदोदरी की पुत्री बताया गया है, जो भी हो यहां मंदोदरी सीता की पुत्रीवत् रक्षा अवश्य करती है ।

§17§ कुम्भकर्ण :

रावण के भाई कुम्भकर्ण पुराणों में अपनी दीर्घकालीन निद्रा के कारण काफी प्रख्यात हैं । कई-कई महीनों तक वे सोये रहते थे । उसके पीछे की मिथक कथा यह है कि भयंकर तपश्चर्या करके वह इन्द्रासन प्राप्त करना चाहते थे, किन्तु इन्द्र के छल-छद्मों के कारण सरस्वती उसकी जिह्वा पर बैठ जाती है और उसके मुंह से वरदान मांगते समय "इन्द्रासन" के स्थान पर " निद्रासन" शब्द निकल पड़ता है । फलतः महीनों तक वे सोये हुए रहते हैं । लेखक ने प्रस्तुत रामकथा में इस मिथक-कथा को भी तोड़ा है । रावण अपने न्यस्त हितों की रक्षा के लिए शुरू से ही उसे मदिरा की आदत डाल देता है । उसके लिए वे देश-विदेश की बहुमूल्य मदिरा मंगवाता रहता है, ताकि कुम्भकर्ण पूरी तरह से अप्प हो जाए और सारी सत्ता रावण के पास रहे । हमारे व्यवहार-जीवन में भी कई बार ऐसा होता है । मैं ऐसे एक व्यवसायी परिवार को जानता हूं जिसमें बड़ा भाई अपने छोटे भाई को सुरा-सुंदरी में इसलिए मशरूफ रखता है कि व्यवसाय में उसका ध्यान न रहे और अधिक से अधिक वे अपने तथा अपने बीबी-बच्चों के लिए बटोरते रहें । उपन्यास में लेखक ने यह भी बताया है कि कुम्भकर्ण जब नशे में नहीं होता तब उसके सोचने का ढंग भी विभीषण के समान रहता है और वह न्याय और विवेक की बातें करता है । फलतः रावण कभी नहीं चाहता कि कुम्भकर्ण कभी होश में आवें । जब एक-एक करके रावण के सारे सेनापति और महारथी मारे जाते हैं, तब रावण कुम्भकर्ण को युद्ध में उतारता है । उपन्यास में एक स्थान पर कहा गया है —" और फिर प्रत्येक क्षण रावण के मन में यह चिन्ता होती है कि कहीं किसी बात से रूठ होकर विभीषण के समान उसका विरोधी न हो जाए । कितना

अच्छा अवसर है इस समय । कुंभकर्ण को सेनापति का मान-सम्मान देकर रावण उसे अपने प्रेम का विश्वास दिलाएगा । कुंभकर्ण राक्षस सेना की इस हतवीर्य स्थिति में यदि अपने पराक्रम से उसे उबार सका तो रावण के लिए गौरव ही गौरव है ; और यदि वह पराजित होकर मारा गया तो रावण को आतंकित करने वाली लंका की भीतरी शक्तियों में से एक कम हो जाएगी ... रावण को यह पहले क्यों नहीं सूझा ? ... ऐसे सब लोगों को , जो किसी भी स्थिति में रावण के विरुद्ध खड़े हो सकते हैं -- एक-एक कर युद्ध में भेजना चाहिए । मंदोदरी के वे सारे पुत्र भी , जो पिता के विरुद्ध मां का पक्ष ग्रहण कर सकते हैं । इन्द्रजित मेघनाद को बचाकर रखना चाहिए ; वह रावण के विपक्ष में जा ही नहीं सकता , विपक्ष में चाहे मंदोदरी ही क्यों न हो ...."[45] इस कथन से रावण के चरित्र पर भी प्रकाश पड़ता है कि वह किस कदर स्वार्थी और स्वकेन्द्रित है । अन्यथा एक स्थान पर कुम्भकर्ण रावण से कहता है --" भैया ! जब भाभी मंदोदरी और विभीषण ने कहा था कि सीता को लौटा दो और युद्ध मत करो तो आपने उनकी एक नहीं सुनी । आपने अपनी शक्ति के दम्भ में किसीका परामर्श ही नहीं माना ।"[46] अभिप्राय यह कि कुम्भकर्ण जब भी नशे में नहीं होता है , वह न्याय और विवेक का पक्ष ग्रहण करता है । यहां भी जैसे ही कुम्भकर्ण इस प्रकार की बात करता है , रावण तुरंत कहता है —"यह मदिरा पीकर देखो । यह नयी आयी है । देवलोक और उरपुर में भी ऐसी मदिरा किसीने नहीं चखी होगी ।"[47]

(18) विभीषण :
=========

विभीषण रावण का भाई है , किन्तु वह राक्षस नहीं है । अभिप्राय कि वह साधु प्रकृति का एक सज्जन पुरुष है जो सदैव न्याय और सत्य की बात करता है । वह अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध है , अतः रावण की सभा में उसकी सदैव उपेक्षा होती है । रक्त-सम्बन्धों के कारण रावण उसकी कुछ बातों को सुन लेता है , किन्तु

वह उनको पसंद कभी नहीं करता । रावण का दरबार मिथ्यावादियों और चाटुकारों से भरा हुआ रहता है । विभीषण की आवाज़ नक्कार-खाने में तूती की तरह वहां व्यर्थ साबित होती है । रावण का एक मंत्री महापार्श्व जब कहता है कि सीता यदि आपकी शैया पर आरूढ़ होना नहीं चाहती तो राक्षस-धर्म के अनुसार उसके साथ बलात्कार कीजिए ; तब विभीषण से नहीं रहा जाता और उसका पुण्यप्रकोप फूट पड़ता है— "कैसी राजसभा है यह , जहां मंत्री अपने राजा को पर-स्त्रियों के साथ बलात्कार करने की मंत्रणा देते है । उचित-अनुचित का ध्यान तुम्हें नहीं है तो अपना स्वार्थ तो पहचानो । रामने इन्हीं वानरों की छोटी-सी सेना से तुम्हारा जनस्थान का स्कन्धावार ध्वस्त किया था । उसकी पत्नी का हरण हुआ तो वह सारे विश्व के वानरों को सैनिक रूप देकर , तुम्हारी लंका के द्वार खटखटा रहा है । उसकी पत्नी के साथ बलात्कार हुआ तो वह तुम लोगों को क्षमा कर देगा क्या ?... लंका का एक-एक परिवार नष्ट हो जाएगा । तुम्हें वानरों की सुन्दरी स्त्रियों का प्रलोभन दिया जा रहा है ; किन्तु तुम्हें अपनी स्त्रियों का ध्यान नहीं है ।"[48] इस पर मेघनाद विभीषण पर व्यंग्य करता है कि चाचा आसन्न युद्ध से भयभीत हो गए हैं ।तब विभीषण मेघनाद को खरी-खोटी सुनाता है । इस पर रावण राजसभा में विभीषण को लात मारकर उसे वहां से निष्कासित कर देता है । विभीषण अपने विश्वसनीय साथी अविंध्य से मिलकर पत्नी सरमा तथा पुत्री कला की समुचित व्यवस्था करने के उपरान्त एक नौका द्वारा समुद्र पार करके राम को मिलते हैं । राम से अभयवचन लेते है कि युद्ध के उपरान्त वे लंका की निरीह प्रजा से कोई प्रतिशोध नहीं लेंगे । राम तत्काल विभीषण का राज्याभिषेक लंका-नरेश के रूप में करवाते हैं । युद्ध में भी वे विभीषण का सविशेष ध्यान रखते हैं और युद्ध के उपरान्त लंका का राज्य विभीषण को सौंप दिया जाता है । सामान्यतः कहा जाता है कि "घर का भेदी लंका ढावे " और कुछ लोग विभीषण को भातृहन्ता भी मानते हैं , किन्तु डा. कोहली ने विभीषण के चरित्र का काफी परिशोध किया है । विभीषण रावण को समझाने की भरपूर

चेष्टा करता है, किन्तु जब रावण राजसभा में लात मारकर उसका अपमान करके उसे वहां से चले जाने के लिए कहता है, तभी विवश होकर लंका की प्रजा और धर्म-वत्सल लोगों का ध्यान करके वह राम की शरण में जाता है।

§19§ इन्द्रजित मेघनाद :

रावण और मंदोदरी का यह पुत्र अत्यन्त शक्तिशाली व मेधावी है। उसने देवराज इन्द्र को भी पराजित किया था। तभी से उसे इन्द्रजित की उपाधि मिली थी। बंगला भाषा के सुप्रसिद्ध कवि मधुसूदन सरस्वती ने "मेघनाद-वध" में मेघनाद के धनात्मक पक्षों को उद्घाटित किया है, किन्तु यहां डा. कोहली ने मेघनाद को भी रावण जैसा ही चित्रित किया है। रावण की भांति वह इन्द्रीय-लोलुप, विलासी व परस्त्रीगामी नहीं है, किन्तु अपने पिता का वह इतना अंधभक्त है, कि उसकी तमाम उचित-अनुचित योजनाओं में वह उसका सहायक होता है। रावण को भी अपने पुत्र पर अत्यन्त गर्व है। इन्द्रजित एक प्रकार से अपराजेय था। प्रत्यक्ष-युद्ध में उसे हराना असंभव था। एक बार वह राम-लक्ष्मण दोनों को मूर्च्छित कर देता है और उनको मरा हुआ समझकर रावण को उसकी सूचना तक दे देता है। किन्तु गरुड़ व हनुमान द्वारा लायी गयी औषधियों से वे पुनः जीवित हो उठते हैं। विभीषण राम-लक्ष्मण को सलाह देता है कि जब तक मेघनाद जीवित है, वे रावण का बाल भी बांका नहीं कर सकते और प्रत्यक्ष युद्ध में उसे हराना असंभव है। अतः एक दिन जब मेघनाद निकुंभला देवी के मंदिर-परिसर में यज्ञ कर रहा था तभी विभीषण लक्ष्मण को वहां तक ले जाता है और लक्ष्मण विश्वामित्र द्वारा प्रदत्त माहेश्वरास्त्र तथा अगस्त्य द्वारा प्रदत्त ऐन्द्रास्त्र के प्रयोग से निःशस्त्र मेघनाद का वध कर देता है।[49] वध से पहले वह विभीषण को कहता है —" राक्षस कुलांगार! देशद्रोही! और कुछ नहीं हो सका तो पुत्र सरीखे अपने भ्रातव्य को असावधान समझ उसका वध करवाने आए हो।"[50] विभीषण उसके जवाब में

कहता है — " पुत्र सरीखे तो तुम हो ही , दंभी । जो अपने गुरुजनों को सदा मूर्ख समझता रहा , उनका अपमान करता रहा , अपने पिता के कुकर्मों का समर्थन करता रहा और प्रत्येक सत्परामर्श को ठुकराता रहा । तुम जैसे पुत्रों के कारण ही तो पिता पर-स्त्रियों का हरण कर अपने कुल को गौरवान्वित करता है । राक्षस कुलांगार कौन है ? सत्पथ पर चलनेवाला दीन विभीषण अथवा अहंकार में ऐंठे तुम और तुम्हारे पिता महाराजधिराज रावण ?" [51] विभीषण के इस कथन से दोनों के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है ।

§20§ सीरध्वज राजा जनक :

सीरध्वज राजा जनक अपने समय के महान चिंतक व दार्शनिक राजा माने गए हैं । उनका ब्रह्मवादी चिंतन वसिष्ठ जैसे सनातनपंथियों को रुचता नहीं था ।[52] जनक एक प्रजा-वत्सल राजा थे । मिथिला के एक धार्मिक उत्सव में वे अपने खेत में हल चलाते हुएएक सद्यःजात बालकी मिली थी । जनक अपने किसी प्रजाजन का ही कार्य समझ उस बालकी को पाल-पोसकर बड़ा करते हैं । वही बालकी सीता है । सीता को अपने मां-बाप की कमी जनक और सुनयना कभी खलने नहीं देते । किन्तु सभी जानते हैं कि यह बालकी राजा जनक को खेत में से मिली थी , अतः सब उसे अज्ञातकुलशीला के रूप में ही मानते हैं । फलतः तत्कालीन परंपराओं के हिसाब से कोई भी क्षत्रिय राजकुमार उसके वरण हेतु आगे नहीं आता था । राजा जनक को अपनी पुत्री के विवाह की चिन्ता खाए जाती थी , अतः अपने गुरु की मंत्रणा से वे सीता को वीर्यशुल्का घोषित करते हैं ! उस समय भी जनक अपनी पुत्री को इसके पक्ष-विपक्ष के बारें में भलीभांति समझा देते हैं । संक्षेप में जनक एक न्याय-विवेक-संपन्न दार्शनिक साधु राजा है ।

§21§ तारा :

तारा किष्किंधानरेश वानरराज वाली की पत्नी है । वह

अपने पति की प्रजा-विरोधी नीतियों की समर्थक नहीं है । अतः पुत्र अंगद और देवर सुग्रीव से उसकी ज्यादा पटती है । वाली अलका नामक गणिका के प्रेम में जब मोहांध हो जाता है, तब उसे बहुत दुःख होता है । उसके पिता उस समय के प्रख्यात वैद्य सुषेण हैं जिनकी लंका-युद्ध में बड़ी अच्छी भूमिका रही है । उसका भाई तार भी एक अच्छा वानर-योद्धा है । मायावी-वध के उपरान्त जब वाली पुनः सिंहासन पर आरूढ़ होता है, तब चाटुकारों की बातों से प्रेरित होकर सुग्रीव को बन्दी बनाना चाहता है । सुग्रीव के भाग जाने पर वाली सुग्रीव की पत्नी रुमा को भी अपने घर में बिठा लेता है, इतना ही उस पर बलात्कार भी करता है । इस बात से भी तारा को ठेस पहुंचती है । राम द्वारा वाली का जब वध होता है तब वह बहुत विलाप करती है । वाली-वध के उपरान्त वह अपने देवर सुग्रीव से विवाह कर लेती है । वैसे वानर-जाति में यह एक आम रिवाज है ।

§22§ रुक्मा :

रुक्मा सुग्रीव की पत्नी व प्रेयसी है । वह सुग्रीव के प्रजा-कल्याण के कार्यों को खूब प्रोत्साहन ही नहीं देती, वरन् अनेक सुझाव भी देती है । इस रूप में वह सच्ची जीवन-संगिनी है । आत्म-रक्षा हेतु सुग्रीव जब भाग जाते हैं तब वाली रुक्मा को भी अपनी पत्नी बना लेते हैं । वाली-वध के उपरान्त रुक्मा जब सुग्रीव को मिलती है, तब विलाप करते हुए कातर-स्वरों में कहती है — " मेरा कोई दोष नहीं है स्वामि । मैं बाध्य थी । हर रात मेरे शरीर पर सैकड़ों बिच्छू रेंगते रहे, मुझे ~~दंशित~~ दंशित करते रहे, मेरे शरीर को विषाक्त करते रहे ; किन्तु मैं सर्वथा बाध्य थी, स्वामि । मेरी तनिक भी सहमति नहीं थी । मैं असहाय थी ।"[52] तब सुग्रीव रुमा को गले लगाते हुए कहता है कि दोष रुमा का नहीं, उसका है, क्योंकि वही अपनी जान बचाने के लिए उसे असहाय छोड़कर चला गया था । जब सुग्रीव तारा से विवाह कर लेता है, तब भी वह

अविरोध उसका स्वीकार करती है । तारा को वह अपनी दीदी मानती है ।वैसे वानर-जाति में बहुपत्नीत्व एक सामाजिक परंपरा है ।बड़े भाई का जब निधन हो जाता है, तब छोटा भाई अपनी भाभी से विवाह कर लेता है ।[53] अनेक पिछड़ी व आदिवासी जातियों में यह प्रथा आज भी पायी जाती है ।

डा. नरेन्द्र कोहली की रामायण-उपन्यासमाला में निरूपित गौण पात्र :

उपर्युक्त प्रमुख पात्रों के अतिरिक्त अनेक गौण पात्र भी हमें इन उपन्यासों में मिलते हैं । इन गौण पात्रों को भी दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं -- /1/ पौराणिक गौण पात्र और /2/ काल्पनिक गौण पात्र । यहां केवल उनका उल्लेख-भर किया जायेगा ।

/1/ पौराणिक गौण पात्र :

पौराणिक गौण पात्रों में निम्नलिखित का उल्लेख किया जा सकता है — मुनि आजानबाहु , बहुलाश्व ,अनरण्य ताड़का , मारीच, सुबाहु , भानुमान , अज , शम्बर , भरत , शत्रुघ्न , सहस्त्रार्जुन , परशुराम , आचार्य विश्वबंधु , पृथुसेन , ऋषि गौतम , देवराज इन्द्र , आचार्य अमितलाभ ,अहल्या , आचार्य ज्ञानप्रिय , शतानंद , सुनयना , युद्धाजित , भानुमित्र , चित्रसेन , सुमंत्र , मंथरा , मुनि सुतीक्ष्ण , मुनि शरभंग , ऋषि भरद्वाज , ऋषि वाल्मीकि ,सुयज्ञ , चित्ररथ , सुमाली , कालकाचार्य , जयंत , मुनि ज्ञानश्रेष्ठ , मुनि धर्मभृत्य , विराध , मुनि निकाय , मुनि मांडकर्णि , अग्निमित्र , उग्राग्नि , शतरूप , कृतसंकल्प, मुनि आनंदसागर , ऋषि अग्निजिह्वा , वातापि , इल्वल , लोपामुद्रा, जटायु , विद्युज्जिह्व , खर , दूषण , ~~सिंहनाद~~, तार , सुषेण , नल , नील , मायावी , अलका , दरीमुख , कला , सरमा , धन्यमालिनी , दुर्मुख , यमजिह्वा , सुलोचना , असिगुल्म त्रिजटा , तिक्तजिह्व , संपाति , स्वयंप्रभा , जाम्बवान , अक्षयकुमार , जंबुमाली ,

विरूपाक्ष , यूपाक्ष , दुर्धर , प्रघस , भासकर्ण , अविंध्य , शर-गुल्म , दधिमुख , प्रहस्त , वज्रदष्ट्र , निकुंभ , वज्रहनु , रभस , सूर्य-शत्रु , सुप्तघ्न , यज्ञकोप , महापार्श्व , महोदर , अग्निकेतु , रश्मि-केतु , धूम्राक्ष , अतिकाय , मैंद , द्विविद , शचि , तारा , रुक्मा या रूमा , अंगद , गरूड , दुर्कम्पन , कुंभहनु , अकंपन , रावणि , त्रिशिरा , नरांतक , कुंभ , देवान्तक , गंधमादन , ऋषभ , वेगदर्शी , गवाक्ष , केसरी , सागरदत्त, शोणिताक्ष , प्रजंघ , मकराक्ष , दुर्गा, महादेव , शुंभ , निशुंभ आदि-आदि । [54]

/2/ काल्पनिक गौण पात्र :

जिस प्रकार ऐतिहासिक उपन्यासकार यथार्थ-परिवेश के निर्माण हेतु कुछ काल्पनिक सामाजिक पात्रों की सृष्टि करता है ; ठीक उसी तरह पौराणिक उपन्यासकार भी यथार्थ-परिवेश निर्माण , विश्वसनीयता , जीवन्तता आदि की सृष्टि के लिए कुछ काल्पनिक सामाजिक पात्रों का निर्माण करता है । डा. कोहली द्वारा प्रणीत रामायण उपन्यासमाला में भी ऐसे कई पात्र हमें मिलते हैं , उनमें से कुछेक का उल्लेख यहां किया जा रहा है — पुनर्वसु , सुकंठ , गहन , गगन , सत्यप्रिय , वनजा , सदानीरा , पुष्कल , विपुल , मुखर , तुंभरण , सुमेधा , उद्घोष , चेतन , भीखन , प्रवीर , शातालु , साक्षा , प्रभा , अनिंद्य , सुधा , मूर्त , नीलाद्रि , भास्वर, भूलर , मिता , धीर , मंती , आतुर , उजास , कर्कश , ओगरू , तोरन , वज्रा , मणि , आदित्य , तकंटका , भिड़े , कटाक्ष , सागरिका , वत्स , आर्किकटका , मधुप , सुपताका , शरारि , कवि उष्णीश , तेजधर , सिंहनाद आदि -आदि । इनमें से मुखर , भीखन , भूलर , सुमेधा , प्रभा , तेजधर , सिंहनाद , मूर्त , तुंभरण गहन , वनजा आदि की कहानी तो कई पृष्ठों और अध्यायों में विस्तृत है । मुखर पूरी दक्षिण-यात्रा में राम-लक्ष्मण-सीता के साथ रहता है और सीताहरण के समय सीता की रक्षा करते-करते शहीद

होता है । तेजधर राम-लक्ष्मण की रक्षा में खेत होता है । मुर्तू की कहानी मुनि अगस्त्य की कहानी का ही एक हिस्सा है और वह भी अनेक पृष्ठों में विस्तृत है । (55)

(ब) महाभारत पर आधारित उपन्यासों के पात्र

प्रमुख पात्र :

रामायण के पश्चात् डा. नरेन्द्र कोहली ने महाभारत की वस्तु को लेकर भी एक उपन्यासमाला की सृष्टि की । इनमें आठ उपन्यास हैं -- बंधन , अधिकार , कर्म , धर्म , अंतराल , प्रच्छन्न , प्रत्यक्ष और निर्बन्ध । इस पूरी उपन्यासमाला को "महासमर" नाम भी दिया गया है और उक्त उपन्यासों को "महासमर भाग-1 " , "महासमर भाग-2 " , इस प्रकार क्रमशः "महासमर भाग-8 " तक उपन्यस्त किया गया है । यहां उसके प्रमुख पात्रों पर बहुत संक्षेप में विचार करने का हमारा उपक्रम है ।

(1) शान्तनु :

हस्तिनापुर -नरेश शान्तनु कुरुवंश के एक प्रबल , शक्तिशाली और न्याय-प्रिय सम्राट हैं । उनका प्रथम विवाह गंगा से होता है और गंगा से ~~उन्हें~~ उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति होती है जिसका नाम देवव्रत रखा जाता है । देवव्रत के जन्म के पश्चात् गंगा शान्तनु को छोड़कर चली जाती है । देवव्रत का पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा विभिन्न आश्रमों में ऋषि-मुनियों के सानिध्य में होती है । देवव्रत जब युवा हो जाते हैं और हस्तिनापुर महाराज के पास आ जाते हैं , तब एक दिन गंगा-विहार करते हुए शान्तनु निषादराज की कन्या सत्यवती के रूप-यौवन पर मुग्ध हो जाते हैं और निषादराज से उसका हाथ मांगते हैं । किन्तु निषादराज महाराज शान्तनु के सम्मुख जो

शर्तें रखते हैं, उससे वे काफी उद्विग्न हो जाते हैं। एक तरफ अनेक वर्षों बाद जागा प्रेमानुराग और दूसरी तरफ न्याय और धर्म। निषादराज ने शर्तें रखी थी कि सत्यवती से जो संतान महाराज को होगी उसे ही युवराज बनाया जायेगा, जो शान्तनु को मान्य नहीं थी। शान्तनु सम्राट थे और निषादराज उनके राज्य के एक सामान्य प्रजाजन। चाहते तो निषादराज को विवश कर सकते थे। सत्यवती का हरण कर सकते थे, किन्तु न्याय-प्रिय प्रजा-वत्सल शान्तनु की प्रकृति में यह नहीं था। जब देवव्रत को इस बात का पता चल जाता है, तब वह शान्तनु के बिना बताए ही निषाद-राज के पास पहुंच जाते हैं और उनकी सब शर्तों को मानते हुए सत्यवती को महाराज के लिए ले आते हैं। पुत्र के अधिकार का हनन होने से शान्तनु बहुत दुःखी रहते हैं। सत्यवती से उनको दो पुत्र होते हैं — चित्रांगद और विचित्रवीर्य। उसके बाद सम्राट का निधन हो जाता है।

§2§ भीष्म :
======

भीष्म का मूल नाम तो देवव्रत है। गंगा और महाराज शान्तनु के पुत्र है। गंगा-पुत्र होने के कारण अनेक स्थानों पर उनको गांगेय भी कहा गया है। अपने पिता के सुख के लिए देवव्रत निषाद-राज की उस शर्त को मान्य कर लेता है कि युवराज माता सत्यवती का पुत्र ही होगा और ज्येष्ठ होने के बावजूद उनका राज्य पर कोई अधिकार नहीं होगा। किन्तु निषादराज को इतने से संतुष्टि कहां होने वाली थी। वह कहते हैं कि भविष्य में यदि आपकी संतानें उसका दावा करें तो सत्यवती तब विवश हो जायेगी। इस पर बड़ी भीषण और कठिन प्रतिज्ञा देवव्रत लेता है कि वह आजीवन अविवाहित रहेंगे और ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करेंगे। ऐसी भीषण प्रतिज्ञा के कारण ही महाराज शान्तनु उनको "भीष्म" नाम से सम्बोधित करते हैं। (56) अपनी इस प्रतिज्ञा को वे आजीवन

निभाते हैं । इसके कारण वे अनेक प्रकार के बंधनों में बंधते जाते हैं । प्रथम उपन्यास का शीर्षक "बंधन" है , उसका एक कारण यह भी है । शान्तनु की अकाल मृत्यु के उपरान्त चित्रांगद की भी मृत्यु हो जाती है । विचित्रवीर्य अत्यन्त कामी और विलासी है । उसके लिए माता सत्यवती के आदेश पर भीष्म को काशीराज की कन्याओं — अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका — का हरण करना पड़ता है । भीष्म की प्रतिज्ञा के कारण ही अम्बा वाला विवाद खड़ा होता है । कामाति-रेक से विचित्रवीर्य का भी निधन हो जाता है । तब पुत्रप्राप्ति हेतु नियोग के लिए महर्षि व्यास को नियुक्त किया जाता है जिसमें अम्बिका से धृतराष्ट्र , अम्बालिका से पाण्डु और अम्बिका की दासी मर्यादा से विदुर का जन्म होता है । धृतराष्ट्र के लिए कन्या-प्राप्ति हेतु पुनः भीष्म को कहा जाता है । भीष्म गांधार-नरेश सुबल को विवश करते हुए धृतराष्ट्र के लिए गांधारी ले आते हैं , किन्तु विवाह की शर्तों के अनुसार गांधारी का भाई शकुनि भी साथ में आता है , जो अन्ततः कुलवंश के नाश का कारण बनता है । भोजराज की पालक पुत्री कुन्ती स्वयंवर में पाण्डु का वरण करती है । भीष्म मद्र-नरेश की कन्या माद्री भी पाण्डु के लिए लाते हैं । इस प्रकार स्वयं अविवाहित रहते हुए भी उनको दूसरों के लिए कन्याओं को जुटाना पड़ता है । पाण्डु का शतशृंग के आश्रम में जाकर कुन्ती-माद्री के साथ रहना , नियोग द्वारा युधिष्ठिर , भीम तथा अर्जुन का कुन्ती की कोख से जन्म ,; उसी विधि से माद्री को भी नकुल-सहदेव की प्राप्ति , माद्री से रतिक्रीड़ा करने के कारण पाण्डु की मृत्यु , माद्री का सती होना , कुन्ती का इन पांच शिशुओं को लेकर हस्तिनापुर आना , भीष्म द्वारा उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध ; दुर्योधन , शकुनि , अश्वत्थामा , कर्ण की चांडाल-चौकड़ी के कारण विषम परिस्थितियों का निर्माण , राज्य में हस्तक्षेप न करने के अपने वचन से बद्ध भीष्म अन्याय , अत्याचार , पाप , अधर्म होते हुए भी चुपचाप सब देखते रहते हैं । कई बार धर्म-विषयक जड़

रूढ़ व पारंपारिक मान्यताओं के कारण बड़े भयंकर अनर्थ हो जाते हैं। "धर्म" उपन्यास में भीष्म के चिंतन से यह स्पष्ट होता है --" भीष्म ने वर्षों पहले प्रतिज्ञा कर राज्याधिकार छोड़ा था, तो आज वे इस अधिकार की कामना कैसे कर सकते थे ? वे देख-देख कर पीड़ित थे कि धृतराष्ट्र अपने अधिकार का दुरुपयोग कर रहा था। उस अधिकार के मूल में न न्याय था, न समदृष्टि। उस अधिकार के मूल में था एक षड्यंत्र। किन्तु युधिष्ठिर किस प्रकार अपने धर्म पर टिका था कि देखकर मन प्रसन्न हो जाता था। वह देख रहा था कि उसका पितृव्य उसे दोनों हाथों से लूट रहा था, किन्तु वह उसकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर रहा था। वह देख रहा था कि यह सारा छल था, किन्तु वह द्यूत की मर्यादा का उल्लंघन नहीं कर रहा था।"[57] इस पूरी द्यूतसभा में भीष्म का प्रतिज्ञा के ब्याज से, धर्म या समाज-मर्यादा के ब्याज से चुप रहना किसी भी तरह धर्म-संगत नहीं कहा जा सकता है। वस्तुतः यह धर्म नहीं -- छद्म धर्म (स्यूडो रीलिजियन) -- है। एक बार अधर्म का आचरण करने से यदि सौ-सौ बार अधर्म करने से बच जाते हैं, तो वहाँ वह "अधर्म" भी धर्म हो जाता है। कुरुवंश के विनाश में भीष्म की यह धर्म-प्रेरित निष्क्रियता ही कारण-भूत है। उनके जैसा महान, दुर्धर्ष योद्धा धर्म और मर्यादा के नाम पर हथियार डाल दे यह शोभा नहीं देता। भीष्म के संदर्भ में महर्षि वेद-व्यास की धारणा कितनी सही और सटीक है --" यह उनका धर्म है, किन्तु उसके लिए व्यापक मानवीय धर्म की अवहेलना नहीं होनी चाहिए। यह धर्म का नहीं, धर्म की रूढ़ि का पालन है। इससे परि-वार का हित नहीं होगा। परिवार की रक्षा करनी हो, तो धर्म की रक्षा करनी चाहिए। धर्म स्वतः ही परिवार को धारेगा करेगा। धारण करने का कार्य, केवल धर्म ही करता है। अधर्म तो उसका क्षय ही करेगा। ... कुरुकुल के प्रति मोह मुझे भी है, किन्तु दुर्योधन की दुष्टता के कारण मुझे न दुर्योधन से सहानुभूति है, न धृतराष्ट्र से। कौरवों को बचाये रखने का कोई विशेष आग्रह नहीं है, मेरे मन में। सत्य-पक्ष को बचाने का आग्रह है मेरा। आर्य

भीष्म ने बहुत कुछ त्यागा है , किन्तु वंश और साम्राज्य की रक्षा का मोह वे नहीं त्याग सके । इसलिए उन्हें अधर्म और असत्य से संधि करनी पड़ी है । क्रमशः वे अधर्म को स्वीकार करते गए हैं । इसलिए वे कदाचित नहीं जानते कि मन से पांडवों के साथ होते हुए भी , कर्मतः वे कौरवों के साथ हैं । मुझे लगता है कि भीष्म क्रमशः संधिवादी होते जा रहे हैं और परिणामतः निष्क्रिय भी । कहीं ऐसा न हो कि अन्ततः वे धातराष्ट्रों के ही पितामह होकर रह जायें , पांडवों के कुछ भी न रहे ।"[58] व्यास की यह भविष्यवाणी अन्ततः सत्य ही प्रमाणित होती है , जब महाभारत के युद्ध में वे कौरवों के पक्ष में लड़ने के लिए तैयार होते हैं ।

§3§ सत्यवती :

निषादराज की यह पुत्री अत्यन्त सुंदर , मोहक व आकर्षक है । मत्स्यगंधा -योजनगंधा आदि उसके अन्य नाम हैं । ऋषि पराशर भी उस पर मुग्ध हो गए थे । फलतः वह एक कानीन पुत्र को जन्म देती है । वह पुत्र ही आगे चलकर कृष्ण द्वैपायन व्यास के नाम से जाना जाता है । महाभारत के रचयिता भी वे ही माने जाते हैं । बाद में हस्तिनापुर-नरेश सम्राट शान्तनु सत्यवती पर मुग्ध हो जाते हैं । शान्तनु उसका हाथ निषादराज से मांगते हैं , किन्तु उसका बड़ा भारी मूल्य शान्तनु , शान्तनु-पुत्र भीष्म तथा अन्ततः कुरुवंश को चुकाना पड़ता है । डा. नरेन्द्र कोहली की उपन्यासमाला के प्रथम उपन्यास "बंधन" में हम सत्यवती के चरित्र से रूबरू होते हैं । वस्तुतः उपन्यास सत्यवती के आगमन से शुरू होता है और उसके अन्त में महर्षि व्यास आकर उनको अपने आश्रम में ले जाते हैं । सत्यवती के दुराग्रहों के कारण बहुत-कुछ गलत होता है । भीष्म की प्रतिज्ञा के कारण हस्तिनापुर में निर्वीर्य राजकुमारों की परंपरा शुरू होती है । शान्तनु-पुत्र गुरुकुल में शिक्षा हेतु नहीं जाते , उसमें भी दुराग्रह सत्यवती का ही था । सत्यवती ही अपने कानीन पुत्र व्यास को नियोग-

हेतु नियुक्त करती है और उससे अम्बिका , अम्बालिका और अम्बिका की दासी मर्यादा क्रमशः धृतराष्ट्र , पाण्डु और विदुर को जन्म देती है । सत्यवती अपने स्वार्थ के लिए भीष्म को राज्य से वंचित करती है , किन्तु उसके दोनों पुत्र -- चित्रांगद और विचित्रवीर्य -- असमय ही मृत्यु के शरण हो जाते हैं । अपनी स्वार्थाग्नि में वह जीवनपर्यन्त जलती ही रहती है । उसे आत्मिक सुख कभी उपलब्ध नहीं होता ।

§4§ अम्बा :

अम्बा , अम्बिका और अम्बालिका ये तीनों काशीनरेश की कन्याएं हैं । काशीनरेश उनका स्वयंवर रखते हैं । इनमें अम्बा सबसे ज्यादा प्रखर , प्रगल्भ व चतुर हैं । स्वयंवर-पूर्व ही वह सौभराज साल्व को प्रेम करती थी और स्वयंवर वह उसका ही वरण करने वाली थी , किन्तु उसके पूर्व भीष्म उसका अन्य दो बहनों के साथ अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए हरण करता है । अम्बा का प्रेम एकनिष्ठ नहीं है । जैसे ही वह भीष्म को देखती है उसकी ओर आकर्षित होती है और भीष्म के कहते ही अपनी इच्छा से वह उसके रथ में बैठ जाती है । साल्व पीछा करता है पर भीष्म के हाथों पराजित होता है । अम्बा की इच्छा भीष्म से विवाह करने की है , किन्तु जब उसे ज्ञात होता है कि उसका विवाह तो विचित्रवीर्य के साथ होगा तब वह साल्व से प्रेम होने की बात करती है । भीष्म उसे साल्व के पास भेजने की व्यवस्था करवाते हैं , किन्तु साल्व उसका यह कहते हुए अस्वीकार करता है कि वह भीष्म की स्वयंवर में जीती हुई वीर्यशुल्का पत्नी है और वह परस्त्रीगामी नहीं बनना चाहता ।[59] उसके बाद अम्बा शैखावत्य ऋषि , अपने नाना होत्रवाहन तथा भगवान परशुराम को लेकर भीष्म पर दबाव डालती है कि वह उसका स्वीकार करें । परशुराम भीष्म के गुरु हैं और उनकी बात भीष्म टाल नहीं सकता ऐसा उसका मानना होता है किन्तु भीष्म जब परशुराम से कहते हैं कि वह पहले से ही साल्व को चाहती थी । फलतः ऋषि के

मन में जो असमंजस के जाले थे वे छंट जाते हैं और वे यह कहते हुए कि यह "कामयाचना है, धर्मयाचनानहीं" उसकी सहायता नहीं कर सकते।[60] अंत मेंवह भीष्म से कहती है —" भीष्म ! मैं अपना जीवन तपस्या में दग्ध कर लूंगी, ताकि तुम्हारा यह जीवन जो मेरा नहीं हो सका, नष्ट हो सके। ... मरूंगी भी तो यह कामना लेकर कि अगले जन्म में तुम्हारे इस शरीर को नष्ट कर दूं, जो तुम्हारी सीमा है।"[61] महाभारत में कहा गया है कि यही अम्बा दूसरे जन्म में राजा द्रुपद के यहां शिखंडी के रूप में अवतरित होती है, जो बाद में पुरुष होकर महाभारत के युद्ध में पितामह भीष्म की मृत्यु का कारण बनती है।

§5§ अम्बिका :

अम्बिका अम्बा की छोटी बहन और अम्बालिका की बड़ी बहन है। वे दोनों विचित्रवीर्य से विवाह करती हैं, बल्कि यों कहना चाहिए कि उनको करना पड़ता है। विचित्रवीर्य असमय अति-स्त्री-प्रसंग के कारण अम्बिका और अम्बालिका के साथ रति-कर्म करने में असमर्थ है। राजवैद्य उनका इलाज कर रहे हैं और उन्होंने रति-कर्म के लिए मनाही कर रखी है। किन्तु एक दिन राजवैद्य की सूचना की उपेक्षा करते हुए वह स्त्री-प्रसंग करता है और उसीमें उसकी मृत्यु हो जाती है। अतः राजमाता सत्यवती अपने कानीन पुत्र कृष्ण द्वैपायन व्यास को नियोग हेतु आमंत्रित करती है। माता सत्यवती अम्बिका से कहती हैं कि नियोग के लिए कोई अपरिचित पुरुष नहीं, अपितु उसके ज्येष्ठ आयेंगे।[62] तब उसके मन में भी कामना के कमल खिलते हैं, क्योंकि वह भी भीष्म के प्रति अनुरक्त तो थी ही। किन्तु भीष्म के स्थान पर जब वेदव्यास आते हैं तब अपनी असहायता में वह आंखें मूंद लेती है। नियोग के उपरांत व्यास माता सत्यवती को कहते हैं --" तुम्हें पौत्र प्राप्त होगा, किन्तु उसके मन में धर्म नहीं, काम था। मुझे भय है कि तुम्हारा यह पौत्र कहीं कामान्ध न हो।"[63] इस सम्बन्ध से अम्बिका धृतराष्ट्र को जन्म देती है, जो अन्ध भी है

और कामान्ध भी । माता सत्यवती दूसरी बार व्यासजी को अम्बालिका के लिए नियुक्त करती हैं , किन्तु भय के कारण वह पीली पड़ जाती है , अतः व्यासजी कहते हैं कि उसका पुत्र पाण्डु-रोगी होगा । फलतः वह तीसरी बार पुनः अम्बिका के लिए उनको आमंत्रित करती हैं , किन्तु अम्बिका अपने स्थान पर अपनी दासी मर्यादा को भेजती है । अतः हम कह सकते हैं कि विद्रोह का कुछ तत्व अम्बिका में भी है । दूसरे वह न्याय-प्रिय भी है । धृतराष्ट्र की धूर्तता उन्हें कभी अच्छी नहीं लगती । वह बराबर अपनी बहन अम्बालिका का ध्यान रखती है । उपन्यास के अंत में वह भी माता सत्यवती के साथ ऋषि के आश्रम में चली जाती है । जाते-जाते वह विदुर से कहती है कि उसकी अनुपस्थिति में वह धृतराष्ट्र की रक्षा करेगा । कैसी भी कठिन स्थिति आये , वह कितना ही कटु बोले , तुम्हारा तिरस्कार करे , किन्तु तुम उसका त्याग नहीं करोगे । विदुर वचन देता है — " मैं यथाक्षमता उसे नीति और न्याय का परामर्श दूंगा । न्याय धर्म का दूसरा नाम है माता । वह न्याय की रक्षा करेगा , तो न्याय उसकी रक्षा कर लेगा ।"[64]

(6) अम्बालिका :

यह इन तीनों बहनों में सबसे छोटी , सरल और भीरू स्वभाव की है । पाण्डु उसका पुत्र है । वह अपनी पुत्रवधुओं कुन्ती और माद्री को भी बहुत स्नेह देती है । अम्बिका के बिना वह रह नहीं सकती । पाण्डु की शतशृंग में अकाल मृत्यु हो जाती है । यह आघात उसे और भी कमजोर बना देता है । वह भी अपनी बहन अम्बिका के साथ महर्षि व्यास के साथ चली जाती है । हस्तिनापुर में वह हमेशा डरी-डरी सी रहती थी । नियोग समय मारे डर के वह पीली पड़ गयी थी , इसीलिए उसका पुत्र पाण्डुर-वर्णी होता है ।

§7§ कृष्ण द्वैपायन व्यास :

कृष्ण द्वैपायन व्यास महाभारत के रचयिता माने जाते हैं । रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि हैं । डा. नरेन्द्र कोहली की उपन्यासमाला में वाल्मीकि का उल्लेख बहुत कम मिलता है, क्योंकि उन्होंने उत्तरकांड की कथा को नहीं लिया है, जिसमें उनकी मुख्य भूमिका रही है । किन्तु महर्षि वेदव्यास महाभारत की सम्पूर्ण कथा में आद्यन्त किसी-न-किसी रूप में मिलते हैं । वे दासतनया सत्यवती और ऋषि पराशर के कानीन पुत्र हैं । विवाह-पूर्व जन्म होने के कारण सत्यवती अपने कलेजे पर पत्थर रखकर उसे ऋषि पराशर को सौंप देती है । अतः उसका पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा इत्यादि सब ऋषि-परंपरा के अनुसार होता है । पूरा महाभारत उनका रचा हुआ है । माता सत्यवती बाद में कुरु-सम्राट शान्तनु से विवाह करती है, अतः कुरुवंश और हस्तिनापुर से उनका आत्मिक सम्बन्ध रहता है । महर्षि व्यास महाभारतकाल के एक महान दार्शनिक, चिंतक और ऋषि हैं । वह गृहस्थ हैं । महाअथर्वण जाबालि की पुत्री वाटिका उनकी पत्नी है । [65] चित्रांगद और विचित्रवीर्य की मृत्यु के उपरान्त हस्तिनापुर के वारिस के लिए माता सत्यवती भीष्म से सलाह कर अपने कानीन पुत्र को नियोग हेतु निमंत्रित करती हैं, जिससे अम्बिका, अम्बालिका और मर्यादा §दासी§ से उनको क्रमशः धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर नामक तीन पौत्रों की प्राप्ति होती है । इस प्रकार हालांकि धृतराष्ट्र और पाण्डु दोनों व्यासजी के पुत्र हैं, ~~कौरव~~ कौरव एवं पांडव दोनों उनके पौत्र हैं, किन्तु धृतराष्ट्र ~~के~~ व दुर्योधन की धूर्तता व दुष्टता के कारण वे पांडवों को विशेष रूप से चाहने लगते हैं । पूरे महाभारत में वे एक बात अनेक बार कहते हैं कि मनुष्य को चाहिए कि वह धर्म को धारण करे, धर्म उनकी रक्षा करेगा । किन्तु धर्म विषयक उनकी अवधारणा भीष्म की तरह जड़ व रूढ़िवादी नहीं है । इस संदर्भ में वे वासुदेव कृष्ण और विदुर से तुलनीय हैं । धर्मराज युधि-

विदुर को भी वे कई बार धर्म-विषयक मार्गदर्शन देते हैं । वास्तविक आनृशंसता के स्वरूप को भी वे स्पष्ट करते हैं । वे पांडवों के हित-चिंतक व मार्गदर्शक हैं । जब विदुर द्वारा उनको ज्ञात होता है कि वारणावत के अग्निकांड से पांडव बच निकले हैं तब वे उनकी शोध करते हुए वे हिडिम्ब-वन के निकट मुनि शालिहोत्र के आश्रम जाते हैं और वहां एकान्त में उनसे भेंट करते हुए उनको परामर्श देते हैं कि वे उचित अवसर की प्रतीक्षा करें और उनको कहां और कैसे पांडव के रूप में प्रकट होना है उसकी व्यवस्था भी वे करेंगे । एकचक्रानगरी में ब्राह्मण देवप्रसाद के यहां ठहराने की ~~व्यवस्था~~ व्यवस्था भी वे करते हैं धौम्य-मुनि द्वारा द्रौपदी के स्वयंवर की योजना भी वे बनाते हैं, पांडवों को कांपिल्य जाने का संकेत भी वे ही भिजवाते हैं और कांपिल्य में एक कुम्भकार के यहां उनको ठहराने की व्यवस्था भी वे ही करते हैं, खांडवप्रस्थ को इन्द्रप्रस्थ नाम देने का परामर्श भी वे ही देते हैं । इस प्रकार पांडव कहीं भी हो महर्षि व्यास उनके हित-चिंतक के रूप में किसी न किसी तरह पहुंच ही जाते हैं । वे व्यापक मानव-धर्म के उद्गाता हैं । तब ही —

"अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वय
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् ।। "

परोपकार ही पुण्य है और दूसरे को पीड़ित करना ही पाप है । इससे बड़ी पाप-पुण्य और धर्म की व्याख्या क्या हो सकती है ।

§8§ धृतराष्ट्र :

धृतराष्ट्र हस्तिनापुर सम्राट विचित्रवीर्य का क्षेत्रज पुत्र है । उनकी माता का नाम अम्बिका है जो काशी नरेश की पुत्री है । उनके वास्तविक पिता महर्षि वेदव्यास है । धृतराष्ट्र जन्मांध है, इतना ही वह भयंकर रूप से कामांध और चेतनांध भी है । विकलांग होने के

कारण कोई क्षत्रिय राजकुमारी स्वच्छा से उनका वरण करे यह तो संभव नहीं था , फलतः भीष्म अपनी शक्ति का उपयोग करते हुए एक राजनीतिक-संधि के तहत धृतराष्ट्र का विवाह गांधार-नरेश की पुत्री गांधारी से करवाते हैं । पिता की राजनीतिक विवशता को ध्यान में रखते हुए गांधारी यह विवाह करती है । एक बार पुनः दशरथ-कैकेयी की कथा दोहरायी जाती है । कैकेयी राम को वनवास दिलाती है , गांधारी कुरुवंश का नाश करवा देती है । अंध होने के कारण ज्येष्ठ होते हुए पांडु को युवराज बनाया जाता है । किन्तु पांडु अपनी शारीरिक विवशता के कारण ~~यह~~ मृगया , दिग्विजय और तपस्या के ब्याज से हस्तिनापुर से दूर ही रहता है । धृतराष्ट्र तो चाहता ही है कि पांडु हमेशा हस्तिनापुर से दूर रहे । धृतराष्ट्र और गांधारी के बहुत चाहने पर भी वह कुन्ती से पहले धृतराष्ट्र की झोली में पुत्र नहीं डाल सकी और उधर शतश्रृंग के आश्रम में कुन्ती पाण्डु के क्षेत्रज पुत्र युधिष्ठिर को जन्म देती है , अतः युवराज्याभिषेक की स्पर्द्धा में धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन पिछड़ जाता है । किन्तु जिसे वह सहज रूप से प्राप्त नहीं कर सका , उसे अनेक षड्यंत्रों द्वारा प्राप्त करता है । धृतराष्ट्र और दुर्योधन हस्तिनापुर को कभी नहीं छोड़ते , बल्कि धर्मप्राण पांडु-पुत्रों को ही हस्तिनापुर छोड़ना पड़ता है । "धृतराष्ट्र" का अर्थ है राष्ट्र को धारण करना , किन्तु विवेक , न्याय और चेतनाशून्य धृतराष्ट्र वास्तविक अर्थ में अपने परिवार को भी धारण नहीं कर सका । वह अंध ही नहीं पक्का धूर्त और मक्कार है और उसी धूर्तता के कारण दुर्योधन तथा उसकी चांडाल-चौकड़ी के दुर्वृत्तों में सहयोग करते हुए अन्ततः कौरवों का नाश करवा देता है ।

{9} पाण्डु :

पाण्डु विचित्रवीर्य का क्षेत्रज पुत्र है । उसकी माता का नाम

अम्बालिका है । उनके भी वास्तविक पिता तो महर्षि वेदव्यास ही हैं । नियोग के समय भय से पीली पड़ जाने के कारण वह पाण्डुर-वर्णी पुत्र को जन्म देती है , जो आगे चलकर पाण्डु नाम से विख्यात होता है । पाण्डु जन्मतः पाँडुरोगी है । स्त्री-प्रसंग के लिए असमर्थ होते हुए भी पाण्डु अन्यथा महान पराक्रमी और वीर योद्धा है । अपने दिग्विजयों से वह हास्तिनापुर का हर तरह से समृद्ध करता है । अपने समय का वह महान धनुर्धारी है । शैशव से ही उसे मृगया का शौक था और जिस हिरन का वह शिकार करता था , रो-धोकर धृतराष्ट्र उसे अपना शिकार घोषित करता था और आगे चलकर भी उसने वही तो किया । पाण्डु ने अपने पराक्रम से जो हस्तिनापुर के साम्राज्य का विस्तार किया था , उस पर अन्ततः वही तो कब्जा कर लेता है । अपनी विचित्र शारीरिक स्थिति के कारण पाण्डु अपनी दोनों पत्नियों से दूर रहने के लिए मृगया तथा दिग्विजयों का बहाना करते रहे , किन्तु अन्ततः अपने अहं को विसर्जित कर कुन्ती तथा माद्री के सामने अपनी सही वस्तुस्थिति को प्रकट कर देता है । शतशृंग आश्रम के ऋषि से भी वह स्पष्ट कह देता है , इतना ही नहीं अपने मन के द्वन्द्व को भी स्पष्ट कर देता है । फलतः एक तरफ ऋषि उसका उपचार करते हैं , पर दूसरी तरफ नियोग-विधि द्वारा क्षेत्रज पुत्र प्राप्त करने का परामर्श भी देते हैं , जिसके अनुसार कुन्ती युधिष्ठिर , भीम और अर्जुन तथा माद्री नकुल और सहदेव को जन्म देती है । पाण्डु का उपचार हो रहा था और उसकी शारीरिक स्थिति में भी कुछ अंतर लक्षित हो रहा था , किन्तु उसके पूर्व कि वह पूर्णतया स्वस्थ हो जाए पाण्डु और माद्री दोनों अपना संयम खो बैठते हैं और रति-क्रीड़ा करते हुए पाण्डु की मृत्यु हो जाती है । महाभारत की कथा यह है कि एक बार मृगया करते हुए पाण्डु उस समय नर-मृग का वध करता है जब नर-मादा रतिक्रीड़ा में मग्न थे और मादा मृग ने उसे शाप दिया था कि उसकी मृत्यु भी रतिक्रीड़ा करते हुए होगी । डा॰ कोहली ने इस मिथक

कथा को आधुनिक-तार्किक रूप दिया है । माद्री पाण्डु के साथ सती होती है ।

§10§ विदुर :

विदुर का जन्म भी नियोग-पद्धति से हुआ है । अम्बिका की दासी मर्यादा और महर्षि वेदव्यास के संयोग से उनका जन्म हुआ था । शैशव से ही विदुर का स्वभाव धीर, गंभीर, शान्त तथा आनृशंसता-पूर्ण था । प्रत्येक कार्य में धर्म, न्याय और विवेक का वे विचार करते हैं । क्षत्रियोचित कार्यों में उनकी रूचि नहीं है । वे अधिकांशतः अध्ययन, मनन, चिंतन में अपना समय व्यतीत करते हैं । अधर्म, अन्याय और धूर्तता के कारण वे क्रमशः धृतराष्ट्र और धार्तराष्ट्रों से मन और आत्मा से दूर होते गए हैं । पांडवों का पक्ष धर्म और न्याय का पक्ष है, अतः राजसभा में अनेक बार उपेक्षित व अपमानित होने के बावजूद, वे न्याय-नीति की बातें करते रहते हैं । वारणावत के अग्निकांड से पांडव बच निकले उसमें उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है । जब पांडवों को खांडवप्रस्थ दिया गया, तब एक बार तो इनके मन में आया कि वे भी उनके साथ चले जाएं, किन्तु माता अम्बिका को दिए गए वचन के कारण वे धृतराष्ट्र को छोड़ नहीं सकते । भीष्म की भांति वे भी कौरव-सभा में रहने के लिए अभिशप्त हैं । किन्तु धर्म-विषयक उनकी अवधारणा पितामह भीष्म के निकट न होकर व्यास व कृष्ण के निकट है । भीष्म भावुक हैं, विदुर संवेदनशील हैं । उनकी जो नीति है वह महाभारत में "विदुर-नीति" के नाम से विख्यात है । उनका विवाह पारसवी के साथ होता है । दासी-पुत्री होने के कारण उनमें किसी ग्रन्थि का विकास नहीं हो पाता । वे आदर्श-पति-पत्नी हैं और सुख-दुःख में एक दूसरे के पूरक सिद्ध होते हैं । द्यूतसभा में भी वे महाराज धृतराष्ट्र को समझाने का अत्यन्त प्रयत्न करते हैं, परन्तु उनकी आवाज़ नक्कारखाने में तूती साबित होती है । उनके न चाहते हुए भी स्थितियां कुछ ऐसा आकार लेती हैं कि अन्ततः कुरुक्षेत्र का युद्ध होकर रहता है जिसमें केवल युयुत्सु को छोड़कर सभी कौरवों का विनाश

§1.1§ गांधारी :

गांधार-नरेश सुबल-तनया गांधारी अपने समय की एक मानी हुई सुन्दरी है । एक राजनीतिक संधि के हेतु विवशतावश उनका विवाह जन्मांध धृतराष्ट्र से होता है । अतः प्रतिशोध की एक ज्वाला उसके हृदय में सदैव धधकती रहती है । अपनी काम-चेष्टाओं तथा चातुर्य से वह धृतराष्ट्र को पूर्णतया अपने वश में कर लेती है । वह कुन्ती से पहले पुत्र देकर धृतराष्ट्र को अन्ध होने के कारण जो खामियाजा भुगतना पड़ा था उसकी पूर्ति करना चाहती है, किन्तु उसमें पाण्डु और कुन्ती बाजी मार ले जाते हैं । युधिष्ठिर का जन्म पहले होता है । उस दिन गांधारी अपनी छाती पीट लेती है । किन्तु उसके साथ उसका भाई शकुनि भी है जो छल, कपट, प्रपंच, षड्यंत्र आदि का आचार्य है । गांधारी में स्त्री-सहज ईर्ष्या- द्वेष आदि भी कूट-कूट कर भरा है, तथापि द्रौपदी के अपमान के समय उसका भी पुण्य-प्रकोप जाग उठता है और वह सभा में आकर कहती है --' गंधार के राजप्रासाद से मैं तो पशुबल से घसीट कर हस्तिनापुर लाई ही गई थी, अब क्या कुरुकुल की वधुएं भी घसीटी जाकर सभाओं में लाई जाएंगी ? ... आपके पुत्र आपके नियंत्रण में रहने चाहिए । दुर्योधन न माने तो उसका त्याग कीजिए । वह अपने शत्रुओं से युद्ध करे, राजनीति के षड्यंत्र रचे, किन्तु मुझे ऐसा पुत्र नहीं चाहिए, जो नारी के सम्मान की रक्षा न कर सके ।' [66] कौरवों के नाश के उपरान्त उसका विलाप उसके मातृ-हृदय का ही प्रतिबिम्ब है ।

§1.2§ कुन्ती :

भोजपुर-नरेश महाराज कुन्तीभोज की पोषिता-पुत्री कुन्ती हस्तिनापुर के युवराज पाण्डु का स्वयंवर में वरण करती है । विवाह पूर्व उसका एक कानीन पुत्र होता है, किन्तु राज-मर्यादा के कारण जन्म के तुरन्त बाद उसको त्याग दिया जाता है । कुन्ती को केवल इतना ज्ञात है कि वह हस्तिनापुर में अधिरथ नामक किसी सूत के यहां

पल रहा है । पाण्डु से विवाह के उपरान्त जब उसे उसकी वास्तविक स्थिति का पता चलता है तो उसके सपनों पर तुषारापात हो जाता है, फिर भी वह पाण्डु की पत्नी बनी रहती है । तत्कालीन सामाजिक-धार्मिक नियमों के तहत नियोग को मान्यता थी, अतः पाण्डु के कहने पर नियोग-विधि से वह युधिष्ठिर, भीम व अर्जुन को जन्म देती है । कुन्ती के रहते पितामह भीष्म किसी भ्रान्ति से प्रेरित होकर पाण्डु का दूसरा विवाह मद्र-नरेश की कन्या माद्री से करवाते हैं । किन्तु कुन्ती माद्री के साथ भगिनीवत् व्यवहार करती है । माद्री भी नियोग से दो जुड़वां बच्चों को जन्म देती है -- नकुल और सहदेव को । माद्री से संभोग करते हुए पाण्डु की मृत्यु हो जाती है, तब कुन्ती नकुल और सहदेव को भी पुत्रवत् पालती है । कुन्ती का अधिकांश जीवन संघर्ष-आश्रमों तथा वनवास में व्यतीत हुआ । वह कृष्ण और बलराम की बुआ है । उसका बचपन का नाम पृथा था । अक्रूर के हस्तिनापुर आने पर उनके द्वारा "पृथा" सम्बोधन से वह भाव-विभोर हो जाती है । उसे अपने पुत्रों के शौर्य-बल तथा न्याय-धर्म-विवेक पर अभिमान है । उसमें एक नारी-सहज हृदय भी है । हिडिम्बा की भावनाओं को समझ वह उसे अपनी पुत्रवधू के रूप में स्वीकार करती है । अन्य पुत्रवधुओं के साथ भी उसका व्यवहार सास जैसा न होकर मातृवत् ही रहता है । सबसे ज्यादा दुःख झेला है, अतः उनका हृदय करुणा से आप्लावित रहता है । कुल-वृद्धों के प्रति उनके मन में आदर है । महर्षि व्यास, विदुर और कृष्ण के प्रति उन्हें पूरा विश्वास है । हमारी परंपरा में "कुन्ती", "माता" का पर्याय बन गई है । पांडवों में जो संस्कार हैं, उसके पीछे कुन्ती की परवरिश ही मुख्य कारण है ।

§13§ माद्री :

माद्री मद्र-नरेश की कन्या है । वह भी अपने समय की एक मानी हुई सुन्दरी है । कुन्ती की सपत्नी होते हुए भी वह कुन्ती को

सदैव दीदी ही कहती है । पाण्डु की मृत्यु के उपरान्त कुन्ती सती होना चाहती थी , किन्तु वह अपने तर्कों तथा भावों से कुन्ती को समझाती है कि उनमें एक माता का हृदय है , अतः उसके पुत्रों को भी वे भेदभावरहित प्रेम देंगी और इस तरह कुन्ती बच्चों का उत्तरदायित्व लेती है और माद्री पाण्डु के साथ सती होती है ।

(14) युधिष्ठिर :

युधिष्ठिर हस्तिनापुर सम्राट महाराज पाण्डु का क्षेत्रज पुत्र है । नियोगविधि से उसका जन्म हुआ था । दुर्वासा ऋषि ने कुन्ती को कुछ मंत्र दिए थे । पुत्र-हेतु संयोग करते समय वह जिस मंत्र का आह्वान करेगी , उसका वह पुत्र , उस मंत्र के देवता के गुणों से युक्त होगा ऐसा ऋषि ने कहा था । पहली बार अविवाहित अवस्था में कुन्ती ने उसका प्रयोग किया था , जिससे उसे सूर्यपुत्र कर्ण की प्राप्ति हुई थी , किन्तु राजकुल की मर्यादा हेतु उसे त्यागना पड़ा था यह पहले निर्दिष्ट किया जा चुका है । युधिष्ठिर के समय यमदेवता धर्मराज का वह आह्वान करती है , फलतः युधिष्ठिर में धर्मराज के सब गुण आते हैं । सामान्य लोग तो प्रायः उसे धर्मराज के नाम से ही जानते हैं । कुन्ती का यह पुत्र धर्मनिष्ठ , वीतराग , त्यागी , मानवतावादी , क्षमाशील , सहनशील , चिन्तक , आदर्श वीर और आदर्श प्रजापालक के रूप में जाना जाता है । शैशवकाल से ही वह बड़ा धीर-गंभीर था । रात-दिन चिंतन-मनन में खोया रहता है । किशोर अवस्था से ही वह अपनी माता कुन्ती का ध्यान रखने लगता है । हस्तिनापुर में यादवों के दबाव के कारण धृतराष्ट्र युधिष्ठिर को युवराज घोषित तो करता है , किन्तु विश्राम के व्याज से फिर पांडवों को वारणावत भेज दिया जाता है । वारणावत के अग्निकांड से बचकर पांडव कुछ समय अज्ञातवेश में रहते हैं और अन्ततः महर्षि व्यास के संकेत पर कांपिल्य में ब्राह्मणवेश में प्रकट होते हैं । परिवेदन-समस्या के कारण द्रौपदी का विवाह पांचों पांडवों से

होता है । कांपिल्य से हस्तिनापुर जब आते हैं तब परिवार की शांति के लिए वे अन्यायपूर्ण राज्य-विभाजन को भी स्वीकार कर लेते हैं और इन्द्र , कृष्ण आदि की सहायता से खांडवप्रस्थ को इन्द्रप्रस्थ के रूप में परिवर्तित करते हैं । राजसूय यज्ञ के समय वे कृष्ण की अग्रपूजा करते हैं ।इन्द्रप्रस्थ के वैभव से दुर्योधन द्वेषाग्नि में जल उठता है और शकुनि तथा अपने पिता आदि से मिलकर पांडवों का समस्त वैभव लूट लेने के उद्देश्य "स्फटिक तोरण सभा" का आयोजन करता है , जिसमें द्यूतक्रीड़ा को ही सर्वाधिक महत्व दिया जाता है । इसके पूर्व विदुर से युधिष्ठिर को ज्ञात हो जाता है कि यह उनके सर्वस्वहरण का आयोजन है ।फिर भी पितृव्य की आज्ञा का उल्लंघन न हो इस दृष्टि से वे उस सभा में जाते हैं और पितृव्य की आज्ञा तथा द्यूत-मर्यादा की रक्षा के लिए न चाहते हुए भी अपना समस्त वैभव , धन-संपत्ति , भाई-भाण्डु , यहां तक कि द्रौपदी तक को द्यूत में हार जाते हैं । 67 उसके बाद बारह साल वनवास और एक साल का अज्ञातवास विराटनगर में काटते हैं । बारह वर्षों के इस अन्तराल में कई समीकरण बदल गए हैं । दुर्योधन और बलराम संबंधी हो गए हैं । कृष्ण का शत्रु कृतवर्मा उनका समधी हो गया है । फलतः पांडवों को कमजोर समझते हुए दुर्योधन उनको इन्च भर जमीन देने के लिए भी मना कर देता है । न चाहते हुए भी अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए महासमर कुरुक्षेत्र का युद्ध खेला जाता है , जिसमें कृष्ण तटस्थ रहते हैं , केवल अर्जुन का सारथ्य करते हैं , उनकी पूरी नारायण सेना कौरवों के पक्ष में रहती है । युद्ध में युधिष्ठिर की भी प्रतिष्ठा टूटती है । अश्वत्थामा की मृत्यु के संदर्भ में उनको अर्द्ध-सत्य -- " नरो वा कुंजरो वा — कहना पड़ता है । समूचे कौरव वंश का नाश हो जाने से एक प्रकार का विषाद उनको घेर लेता है और अभिमन्यु-पुत्र परीक्षित को राज्य का सुकान सौंपकर यह परिवार स्वर्गारोहण हेतु हिमालय की ओर प्रस्थान कर जाता है । इस प्रकार हम देख सकते है कि युधिष्ठिर धर्म , न्याय , विवेक , आनृशंसता की एक जीवन्त प्रतिमा है ।

﴾15﴿ भीम :

भीम कुन्ती और पाण्डु का क्षेत्रज पुत्र है । कुन्ती ने इसके नियोग के समय वायु-देवता के मंत्र का आह्वान किया था , अतः वह वायु के समान बलवान और शक्तिशाली है । महाभारत में भीम के लिए निम्न पर्याय मिलते हैं —अनिलात्मज , अर्जुनपूर्वज , कुरुशार्दूल , कौन्तेय, पवनात्मज , प्रभंजन , सुतानुज , बल्लभ , मारुती , राक्षस-कण्टक , वायु-पुत्र , वायुसुत , वृकोदर , आदि-आदि । वह अत्यन्त बलशाली व शक्तिशाली , अद्वितीय योद्धा , आज्ञाकारी , दयालु , परोपकारी , वाचाल , विनोदी , नीतिवान , कभी-कभी औद्धत्यपूर्ण , विकराल , मातृभक्त और प्रेमी है । शैशव से ही उसके ये गुण प्रकट होने लगे थे । दुर्योधन शुरू से ही उसकी ईर्ष्या करता है । प्रमाणकोटि में भीम को मारने का षड्यंत्र रचते हुए उसे विष देकर गंगा में बहा दिया जाता है , किन्तु उससे वह और बलवान होता है , क्योंकि महाभारत के अनुसार वासुकि की सहायता से उसे आठ अमृत-कुण्डों को पान करवाया जाता है , जिससे उसका बल दश हजार हाथियों के बराबर हो जाता है । भीम और अर्जुन युधिष्ठिर के दो बाहू हैं । वह मल्लयुद्ध और गदायुद्ध में प्रवीण है । कुन्ती के तीन पुत्रों में वह बीच का है , इसलिए अनेकबार उसे "मध्यम" के नाम से सम्बोधित किया गया है । वारणावत अग्निकांड के बाद सुरंग से निकलते हुए कुन्ती जब थक जाती है तब वह उनको अपने कंधे पर बिठा लेता है । वह हिडिंब और बकासुर जैसे राक्षसों का वध करता है । यद्यपि हिडिम्बा के साथ उसका अस्थायी विवाह होता है , किन्तु अनेक प्रसंगों में वह उसे तथा पुत्र घटोत्कच को याद करता है । कुन्ती और द्रौपदी की सर्वाधिक परवाह भी वही करता है । द्यूतसभा में जब द्रौपदी को अपमानित किया जाता है तब वह प्रतिज्ञा लेता है कि जिस जांघ की ओर दुर्योधन ने इशारा किया था अपनी गदा से वह उसे चकनाचूर कर देगा और जो दुःशासन द्रौपदी को केशों से पकड़कर घसीटते हुए सभा में लाया था उसकी छाती फाड़कर उसका खून वह पियेगा ।[68] द्यूतसभा में दुर्योधन के भाई विकर्ण ने द्रौपदी का पक्ष लिया था , अतः महाभारत के

युद्ध में उसको मारते हुए भीम को सर्वाधिक कष्ट होता है । डा. किशोर काबरा ने अपने "उत्तर महाभारत" प्रबंध काव्य में विकर्ण-वध पर भीम को पश्चाताप व्यक्त करते हुए बताया है —

" तुझे मारना भैया मुझे बहुत खला रे । इस बबूल पर तू केवल आम फला रे
जिस विकर्ण ने दुष्टों को दिखलाया दर्पण , उस विकर्ण का करता हूं
आँसू से तर्पण । " 69

राजसूय यज्ञ के समय वह अपनी विनम्रता और संयम का परिचय देता है । अनेक स्थानों पर उसका विनोदी स्वभाव झलकता है । "स्फटिक-स्थल" वाले प्रसंग में दुर्योधन को "धृतराष्ट्र-पुत्र" कहकर वह बहुत कुछ संकेतित कर देता है ।[70]

§16§ अर्जुन :
=======

कुन्ती और पाण्डु का क्षेत्रज पुत्र अर्जुनमहाभारत का एक धुरंधर धनुर्धारी योद्धा है । उसके नियोग के समय कुन्ती ने इन्द्रदेव का आह्वान किया था , फलतः उसकेइन्द्रध्वज , इन्द्रसुत और इन्द्रात्मज आदि नाम भी महाभारत में मिलते हैं । उसके अन्य नामों में कपिध्वज , कपिप्रवर , किरीटिन , कुंतीपुत्र , कौन्तेय , पार्थ , कौरवश्रेष्ठ , गुडाकेश , जिष्णु , धनंजय , फाल्गुन , भीमानुज , श्वेतवाहन , सव्यसाची आदि भी महाभारत में मिलते हैं । महाभारत में निर्दिष्ट हुआ है कि अर्जुन के जन्म के समय दिव्य आकाशवाणी हुई थी कि "हे कुन्ती ! यह बालक कार्तवीर्य अर्जुन के समान तेजस्वी , भगवान शिव के समान पराक्रमी और देवराज इन्द्र के समान अजेय होकर तुम्हारे यश का विस्तार करेगा । "[71] राम , लक्ष्मण , रावण तथा इन्द्रजित की भांति वह भी महान धनुर्धारी था । उपन्यासमाला में उसके लिए अर्जुन , धनंजय , सव्यसाची, कनिष्ठ तथा धनुर्धारी आदि शब्द प्रयुक्त हुए हैं । वह पहले कृपाचार्य और बाद में द्रोणाचार्य के शिष्यत्व में शिक्षा व धनुर्विद्या सीखता है । महाभारत में धनुर्विद्या में उसकी तुलना भीष्म पितामह , गुरु द्रोण , परशुराम , कृष्ण तथा कर्ण से होती रही है । एकलव्य कदाचित धनुर्विद्या में उसे पराजित कर देता , किन्तु गुरु-दक्षिणा में उसके

दाहिने हाथ का अंगूठा मांगकर गुरु द्रोण उस संभावना को ही समाप्त कर देते हैं। गुरु-दक्षिणा में ही अर्जुन कांपिल्य-नरेश द्रुपद को बन्दी बना-कर गुरु द्रोण के कदमों में डाल देता है। महासमर में पांडवों की जीत मुख्यतः अर्जुन व भीम के कारण होती है। अर्जुन को हम समग्र महाभारत का एक वीर योद्धा कह सकते हैं। अर्जुन अपने प्रेम और विवाहों के लिए भी प्रसिद्ध है। द्रौपदी को तो वह मत्स्य-वेध द्वारा प्राप्त करता है, हालांकि बाद में उसका विवाह पांचों पांडवों से होता है। द्रौपदी के अतिरिक्त वह कृष्ण की बहिन सुभद्रा, नागकन्या उलूपी और चित्रांगदा से भी विवाह करता है। सुभद्रा से अभिमन्यु, उलूपी से इरावान और चित्रांगदा से बभ्रुवाहन का जन्म होता है। गुरु द्रोण, भीष्म पितामह, कृपाचार्य, विदुर आदि उसके लिए आदरणीय व पूजनीय हैं। अन्य कुरु-वृद्धों का भी वह आदर करता है। कृष्ण का तो वह परमसखा है। "अधिकार" के अन्त से उसे जो कृष्ण का परिचय होता है, वह निरंतर गहरा होता जाता है। सुभद्रा के विवाह में भी कृष्ण उसकी सहायता करते हैं। महासमर में कृष्ण उसके रथ का सारथ्य करते है। कृष्णसखा अर्जुन महान योद्धा, गुरुभक्त, अद्वितीय धनुर्धारी, कुशल अस्त्रवेत्ता, सत्यप्रतिज्ञ, इन्द्रीयजयी, संयमी तथा महान प्रेमी है। द्रौपदी-युधिष्ठिर के कक्ष में अचानक चले जाने के कारण वह स्वेच्छा से बारह साल का वनवास लेता है। उन्हीं बारह वर्षों में उसके उपर्युक्त विवाह होते हैं। द्यूतसभा में युधिष्ठिर के सबकुछ हार जाने के कारण उन्हें बारह साल का वनवास और एक साल का अज्ञातवास सहना पड़ता है। उस अज्ञातवास में अर्जुन बृहन्नला नामक किन्नर का वेश धारण करता है और विराट-नरेश की पुत्री उत्तरा को नृत्य की शिक्षा देता है। यह वही उत्तरा है जिसका आगे चलकर उसके पुत्र अभिमन्यु से विवाह होता है। दिव्यास्त्रों की प्राप्ति-हेतु जब वह स्वर्ग जाता है। वहां उर्वशी द्वारा काम-निवेदन के बावजूद उसका स्वीकार अर्जुन नहीं करता, क्योंकि इन्द्र के सन्दर्भ से वह उसकी माता ठहरती हैं। पुरुरवा पांडवों के पूर्वज है और उर्वशी उनकी भी प्रेमिका थी। यह

भी एक कारण हो सकता है ।[72] अभिमन्यु को वह बहुत प्यार करता है , फलतः महासमर में जब जयद्रथ द्वारा उसका वध किया जाता है , तब वह सूर्यास्त से पूर्व जयद्रथ के वध की प्रतिज्ञा लेता है और अन्ततः कृष्ण की सहायता से उसकी वह प्रतिज्ञा पूरी होती है ।

§17§ नकुल :

नकुल-सहदेव जुडवां भाई हैं । वे माद्री और पाण्डु के क्षेत्रज पुत्र हैं । नियोग-काल में माद्री अश्विनीकुमारों का आह्वान करती है । नकुल अत्यन्त दर्शनीय तथा कामदेव के समान मनोहर रूप वाले थे । युधिष्ठिर , भीम और अर्जुन की भांति नकुल महान योद्धा तो नहीं है , किन्तु तत्कालीन अन्य क्षत्रिय योद्धाओं की बराबरी तो आसानी से कर सकता है । वह अश्वविद्या में निपुण है तथा अतिरथी और खडग-युद्ध में कुशल है । नकेल ने राजर्षि शुक्र और द्रोणाचार्य से अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा ग्रहण की थी । द्रौपदी को नकुल से "शतानिक" नामक पुत्र प्राप्त हुआ था । नकुल का एक और विवाह चेदिराज की कन्या करेणुमती से हुआ था , जिससे निरमित्र नामक पुत्र हुआ था ।

§18§ सहदेव :

नकुल और सहदेव यमज अर्थात् जुड़वां भाई है , किन्तु दोनों में नकुल ज्येष्ठ माना जाता है । अश्विनीकुमार के आह्वान से उत्पन्न होने के कारण दोनों में बहुत-सी समानताएं दिखती हैं । शैशव अवस्था में ही पिता पाण्डु और माता माद्री का देहान्त हो गया था । फलतः उनके लालन-पालन का दायित्व कुन्ती पर था । कुन्ती और तीनों कौन्तेय इन भाइयों को बहुत प्यार करते हैं । कहीं ऐसा प्रतीत नहीं होता कि इनकी माता अलग हैं । सहदेव ज्योतिष-विद्या के निष्णात हैं । खडग-युद्ध में भी कुशल है । महाभारत में जहां नकुल के अश्विनीसुत , आजमीढ , भरतश्रेष्ठ , दामग्रंथि , दामग्रंथिक , माद्रवती-सुत ,

माद्रेय , माद्रीनंदन , पाण्डुनंदन आदि नाम मिलते हैं ; वहां सहदेव के लिए आश्विनेय , अश्विनीसुत , भरतश्रेष्ठ , कुरुनंदन , नकुलानुज , यमज , तंतिपाल आदि नाम मिलते हैं । सहदेव से द्रौपदी को श्रुतसेन नामक पुत्र प्राप्त हुआ था । सहदेव ने मद्रराज द्युतिमान की पुत्री विजया से भी विवाह किया था जिससे उनको सुहोत्र नामक पुत्र हुआ था । ज्योतिष के अतिरिक्त सहदेव ने वेद-वेदांग और नीतिशास्त्र का भी अध्ययन किया था ।

§19§ दुर्योधनः

महाभारतकार ने खलनायक के रूप में ही दुर्योधन का चित्रण किया है और डा. नरेन्द्र कोहली ने भी मुख्यतः ~~xxx~~ उसीको आधार बनाया है । वह गांधारी और धृतराष्ट्र का औरस पुत्र है । जन्मनाम तो उसका सुयोधन है किन्तु कृपाचार्य द्वारा आयोजित राजकुमारों के क्रीड़ा प्रदर्शन में उसकी दुष्प्रवृत्तियों को देखकर भीष्म पितामह उसका नाम "सुयोधन" से " दुर्योधन" कर देते हैं । [73] महाभारत में उसके आजमीढ़ , कुरुकुलश्रेष्ठ , कुरुनंदन , कुरुपति , कुरुराज , कुरुश्रेष्ठ , कौरवेन्द्र , कुरुसिंह , गांधारि , गांधारीपुत्र , धार्तराष्ट्र , धृतराष्ट्र-पुत्र , सुयोधन आदि नाम मिलते हैं । [74] वह दुर्वृत्त , मिथ्याभिमानी, ईर्ष्यालु , क्रोधी और षड्यंत्रकारी है । उसकी इन प्रवृत्तियों के मूल में धृतराष्ट्र और गांधारी हैं । कहते हैं कि बच्चा जब गर्भ अवस्था में होता है उस समय उसकी मां जिस प्रकार का चिंतन-मनन करती है , उसका प्रभाव शिशु के चरित्र पर अवश्य पड़ता है । गांधार में प्रारंभ से ही स्पर्द्धा-भाव लक्षित होता है । वह कुन्ती से पहले पुत्र ~~xxxx~~ देना चाहती है , पर विधाता के आगे उसका वश नहीं चलता है । उसका वलवला उसे हमेशा रहता है । धृतराष्ट्र की भी सब से बड़ी कमजोरी दुर्योधन है । उसकी गलत-सलत सभी बातों को धृतराष्ट्र प्रोत्साहित करते हैं । दूसरे संग भी उसे ऐसे ही दुर्वृत्त लोगों का मिलता है जिनमें मामा शकुनि , कर्ण , अश्वत्थामा आदि हैं । तत्कालीन क्षत्रियों के

जितने भी दुर्गुण हो सकते थे , वे सब दुर्योधन में पाये जाते हैं । प्रमाण-कोटि में भीम को विष देकर गंगा में डूबो देना , वारणावत का अग्नि-कांड , पांडवों के प्रकट होने पर युधिष्ठिर को युवराजपद सौंपने के लिए मना करना , हस्तिनापुर राज्य का विभाजन , पांडवों को खांडवप्रस्थ देना जहां दस्युओं और राक्षसों का प्रकोप था , पांडवों द्वारा उसे इन्द्रप्रस्थ बना देने पर और राजसूय यज्ञ द्वारा युधिष्ठिर के सम्राट होने पर उसकी ईर्ष्याग्नि का भड़कना , द्यूतसभा के षड्यंत्र का आयोजन , पांडवों का सबकुछ लुटकर उनको बारह साल के लिए वनवास और एक साल के लिए अज्ञातवास देना , उनके लौटने पर उनका राज्य लौटाने का इन्कार इन सब कार्यों से उसकी दुष्टता का ही पता चलता है । अंग्रेजी में कहावत है - " मेन इज़ नोन बाय द कम्पनी ही किप्स। " और " मेन इज़ नोन बाय हिज डीड्स " इन दोनों मापदण्डों के आधार पर उसकी खलनायकी सिद्ध होती है । अन्ततः अपनी इन प्रवृत्तियों के कारण समूचे कौरववंश का नाश हो जाता है । वह मल्लविद्या और गदायुध में कुशल था । कुछ समय के लिए इन विद्याओं का प्रशिक्षण उसने बलराम से भी प्राप्त किया था ।

(20) दुःशासन :

दुःशासन भी गांधारी और धृतराष्ट्र का औरस पुत्र है । उसका भी जन्मनाम तो सुशासन था , किन्तु भीष्म पितामह ने ही उसकी प्रवृत्तियों को देखते हुए उसका नाम "दुःशासन" कर दिया था (75) । दुर्योधन की तमाम दुष्ट प्रवृत्तियों में वह उसके साथ परछाईं की तरह रहता है । महाभारत में द्रौपदी का चीरहरण उसीसे करवाया जाता है , परन्तु डा. नरेन्द्र कोहली ने इस प्रसंग का निरूपण भी मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है । दुर्योधन के कहने पर दुःशासन एकवस्त्रा द्रौपदी को केशों से घसीटता हुआ सभाभवन में ले तो आता है , परन्तु जैसे ही द्रौपदी चीखकर कहती है कि वह कृष्णा की "सखी" है , दुःशासन के हाथ यंत्रवत् रुक-से जाते हैं , क्योंकि उसके सामने इन्द्रप्रस्थ के राजसूय

यज्ञ के समय अग्रपूजा वाले प्रसंग में कृष्ण जिस प्रकार शिशुपाल का मुण्ड उसके धड़ से सुदर्शन चक्र द्वारा कर देते हैं, वह दृश्य घूम जाता है। [76] दुःशासन के इसी दुष्कृत्य के कारण भीम द्यूतसभा में प्रतिज्ञा करता है कि वह युद्ध में उसकी छाती फाड़कर उसका खून पियेगा और द्रौपदी भी एक प्रतिज्ञा लेती है कि राजसूय यज्ञ के पश्चात् अवभृथ स्नान करने वाले ये केश, जो दुःशासन ने खींचे हैं, वह उसकी वेणी तब तक नहीं बनायेगी जब तक उसके वक्ष के रक्त से वह उनको धोयेगी नहीं।[77] और उसी प्रतिज्ञा के कारण "महासमर" में भीम दुःशासन की छाती फाडकर उसका रक्त पीता है।[78]

§21§ कर्ण :

कर्ण महाभारत का एक बहुत ही तेजस्वी पात्र है। कुन्ती जब अविवाहित थी, तब सूर्यदेव के आह्वान से उसे इस पुत्र की प्राप्ति हुई थी, परन्तु कुन्तीभोज की राज-मर्यादा की रक्षा हेतु उसे उसका त्याग करना पड़ा था। उसे केवल इतना ज्ञात था कि हस्तिनापुर में अधिरथ नामक एक सूत के यहाँ वह बच्चा पल रहा था। महाभारत के अन्तर्गत आदि-पर्व से लेकर स्वर्गारोहण पर्व तक अनेक अध्यायों में उसके चरित्र के धनात्मक व ऋणात्मक पक्षों को उद्घाटित किया गया है। उसके चरित्र में सत्त्व, रजस और तमस इन तीनों गुणों का समन्वय हुआ है। कुन्ती अपने इस पुत्र के लिए सदैव कलपती रही है। जब-जब उसकी जाति को लेकर वह अपमानित होता है, कुन्ती असह्य पीड़ा के दौर से गुजरती है। सुवर्ण कवच और कुण्डल के कारण ब्राह्मणों ने उसका नाम "वसुषेण" रखा था। शरीर का कवच कुतर डाला गया था, अतः वह "कर्ण" और "वैकर्तन" नाम से भी प्रसिद्ध होता है। [79] "कर्ण" के अतिरिक्त महाभारत में उसके अंगराज, अंगेश्वर, अर्कपुत्र, आदित्यतनय, अधिरथी, कुरुवीर, कुन्तीसुत, पृथात्मज, रविसुत, राधात्मज, राधेय, वसुषेण, वृष, वैकर्तन, सूर्यपुत्र, सूतपुत्र, सौति आदि नाम भी उपलब्ध होते हैं। [80] वह महान योद्धा, धनुर्धर, दानवीर, आत्मविश्वासी, कूटनीतिज्ञ,

मैत्री-ड्ड संबंध में एकनिष्ठता आदि कर्ण के गुण है ; तो दूसरी तरफ ईर्ष्या , कटु-वादिता , धृष्टता , धूर्तता , औद्धत्य , अहंकार आदि उसके दुर्गुण हैं । महाभारतकार ने अनेक स्थानों पर उसे युद्ध-भीरू भी बताया है । कर्ण दुर्योधन आदि के साथ जब द्रुपद को बन्दी बनाने गया था , तब युद्ध से भयभीत होकर भाग खड़ा हुआ था ।[81] कांपिल्य में ब्राह्मणवेशधारी अर्जुन से पराजय ,[82] पांडवों के दिग्विजय के समय भीम द्वारा पराभूत ,[83] द्वैतवन में गंधर्व-युद्ध में भाग खड़े होना ,[84] विराटपर्व में गोहरण युद्ध में अर्जुन द्वारा पराजित ,[85] महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु , भीम और सात्यकि ड्ड के हाथों पराजय ,[86] महाभारत में ही अर्जुन के साथ द्वैरथ युद्ध में कर्ण की अंतिम हार[87] जैसे अनेक पराजयों का उसे मुंह देखना पड़ता है । द्यूतसभा में द्रौपदी के संदर्भ में वह जो बोलता है उससे उसका औधत्य ही प्रकट होता है । इसे कर्ण के जीवन की त्रासदी ही मानना चाहिए कि ज्येष्ठ कुंती-पुत्र होते हुए भी उसे ताजिन्दगी दुर्योधन का साथ निभाना पड़ता है । दुष्टों के साथ रहते-रहते उसे भी दुष्ट हो जाना पड़ता है । अन्यथा उसकी दानवीरता बेमिसाल है । "दानवीर कर्ण" यह शब्द जन-मानस पर आज भी कब्जा किए हुए है ।

{22} शकुनि :

शकुनि महाभारत का एक अत्यन्त ही दुष्ट , धूर्त , शठ , धृष्ट पात्र है । वह गांधार-नरेश सबल का पुत्र है । एक राजनीतिक-संधि के रूप में जब गांधारी का विवाह धृतराष्ट्र से कर दिया जाता है , तब "यौतुक" के रूप में शकुनि भी हस्तिनापुर में आता है । ह्रसेख हस्तिनापुर के कीर्ति-प्राचीर को खोखला करने में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है । सच ही कहा गया है — " दीवार में आला और घर में साला " । ये दोनों क्रमशः दीवार और घर को कमजोर करते हैं । इस रिश्ते से कौरवों और पांडवों का वह "मातुल" है । मामा भानजे का रिश्ता कितना मधुर , स्नेहपूर्ण होता है ; किन्तु कंस

और शकुनि ने न इन रिश्तों को कलंकित ही किया है, अपितु संदिग्ध भी बना दिया है। डा. नरेन्द्र कोहली ने उसे "कुटिलाचार्य" कहा है।[88] वह द्यूतविद्या का आचार्य है। यद्यपि कुरुवंश के होने के कारण पांडव और धार्तराष्ट्र दोनों कौरव कहला सकते हैं और महाभारतकार ने अनेक स्थानों पर उभय पक्ष के योद्धाओं के लिए "कुरुश्रेष्ठ" शब्द का प्रयोग किया है; तथापि एक ही वंश के इन भाइयों को कौरव एवं पांडव के रूप में विभक्त करने वाला शकुनि ही है।[89] धृतराष्ट्र को "स्फटिक तोरण सभा" के आयोजन तथा उसमें युधिष्ठिर को द्यूत के लिए आमंत्रित कर द्यूत के माध्यम से उसके सर्वस्वहरण की योजना के लिए वही तैयार करता है।[90] द्यूतसभा में द्रौपदी को जिस प्रकार अपमानित किया जाता है, वही आगे चलकर "महासमर" का कारण बनता है।

(23) अश्वत्थामा :

अश्वत्थामा कृपी तथा गुरु द्रोण का पुत्र है। गुरु द्रोण की अर्जुन के प्रति विशेष प्रीति है और यही प्रेम ही अश्वत्थामा के लिए ईर्ष्या का कारण बनता है। दूसरी तरफ शकुनि और कर्ण के प्रयत्न से वह दुर्योधन की ओर अधिक उन्मुख होता है और वही उसके शतमुख चारित्रिक विनाश का कारण बनता है। महाभारत की विख्यात या कुख्यात "चांडाल-चौकड़ी" में दुर्योधन, शकुनि तथा कर्ण के साथ अश्वत्थामा की गणना भी होती है। लाख कोशिशों के बावजूद वह अर्जुन-सा धनुर्धारी नहीं हो सकता। उसकी कसक उसे हमेशा सालती है। युवा होने पर दुर्योधन की तमाम दुष्प्रवृत्तियों में वह साथ देता है। महाभारत के युद्ध में जब गुरु द्रोण पांडवों के लिए खतरनाक हो जाते हैं, तब उनके वध के लिए पांडवों को छल का सहारा लेना पड़ता है। गुरु द्रोण के मनोबल को तोड़ने के लिए यह समाचार प्रचारित किया जाता है कि युद्ध में अश्वत्थामा मारा गया। "नरो वा कुंजरो वा" की कहावत तब से अस्तित्व में आयी है। जब कौरव पूरी तरह से पराजित हो

जाते हैं, तब अपनी हताशा में वह द्रौपदी के पाँच पुत्रों को पांडव समझकर जला डालता है। जब पांडव उसे खोज निकालते हैं, तब अपने प्राणों की रक्षा के लिए वह ब्रह्मशिर छोड़ देता है। देवर्षि नारद और व्यास उसे उसका प्रभाव संकुचित करने के लिए कहते हैं और बदले में उसको प्राण-दान देते हैं किन्तु उसके मस्तक का मणि निकाल लिया जाता है। कृष्ण कहते हैं --" जाओ अश्वत्थामा। पांडवों ने तुमको जीवन की भीक्षा दी। उन्होंने तुम्हारे प्राण नहीं लिए। तुम्हारी मणि ले ली ... तुम इस पृथ्वी पर घायल पशु के समान भटकते फिरोगे ... तुम्हारे शरीर से पीप और लहू की दुर्गन्ध आयेगी और तुम किसी जनसमुदाय में स्थान नहीं पाओगे।" 91

(24) द्रोणाचार्य :
=========

गुरु द्रोणाचार्य कृपाचार्य के बहनोई, भारद्वाजतनया कृपी के पति, अश्वत्थामा के पिता तथा कौरवों तथा पांडवों के शस्त्र-गुरु हैं। धनुर्विद्या में उनकी बराबरी या भीष्म कर सकते हैं या परशुराम। अर्जुन उनका प्रिय शिष्य है। अर्जुन को उन्हों ने आशीर्वाद दिया था कि वह दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर होगा और जब उनको आशंका होती है कि भीलकुमार एकलव्य शायद अर्जुन से भी बड़ा धनुर्धर हो सकता है, तब गुरु-दक्षिणा में वे एकलव्य के दाहिने हाथ का अंगूठा माँग लेते हैं। अर्जुन को श्रेष्ठ धनुर्धर बनाने के पीछे भी उनका अपना स्वार्थ था। अर्जुन द्वारा वे अपने उस अपमान का प्रतिशोध लेना चाहते हैं जो द्रुपद के दरबार में उनका हुआ था। गुरु-दक्षिणा में वे कुरु-राजकुमारों से माँग करते हैं कि वे द्रुपद को बंदी बनाकर ले आवें। दुर्योधन कर्ण आदि के असफल होने पर अर्जुन द्रुपद को बंदी बनाकर गुरु द्रोण के कदमों में डाल देते हैं। उसके कारण द्रुपद को अहिछत्र का राज्य भी गुरु द्रोण को देना पड़ता है। युवराज्याभिषेक के समय युधिष्ठिर गुरु द्रोण के इस कार्य को अनुचित बताता है, दूसरे कांपिल्य में मत्स्य-वेध कर अर्जुन वीर्यशुल्का पांचाली को जीत लाता है, जिसका विवाह पाँचों पांडवों से होता है, इस तरह द्रुपद से सम्बन्ध

होने के कारण गुरु द्रोण क्रमशः कौरवों के पक्ष में होते चले जाते हैं । दुर्यो-धन अश्वत्थामा का मित्र है, पांडवों के पक्ष में जाने का एक कारण यह भी है । "महासमर" में कौरवों की ओर से दुर्धर्ष युद्ध करते हुए ~~अर्जुन~~ धृष्टद्युम्न के हाथों उनका वध होता है । [92]

(25) कृपाचार्य :

कृपाचार्य भी कौरवों व पांडवों के गुरु हैं । उनको हम शिक्षा-गुरु कह सकते हैं । वे कुरु-वंश के राज-पुरोहित भी हैं । वे द्रोणाचार्य के साले और अश्वत्थामा के मातुल हैं । वे नीति-शास्त्र और धर्म-शास्त्र के विद्वान आचार्य हैं । द्रोणाचार्य के समान तो नहीं, किन्तु एक अच्छे योद्धा हैं । "महासमर" में कौरवपक्ष में जो तीन-चार लोग बच जाते हैं, उनमें एक कृपाचार्य भी हैं । [93] वे कर्ण को उसकी जाति के कारण घृणित समझते हैं । द्रोणाचार्य द्वारा प्रायोजित रण-कौशल-प्रदर्शन समारोह में जब कर्ण अर्जुन को ललकारता है, तब जाति के आधार पर वे उसका विरोध करते हैं ।

(26) कृष्ण :

श्रीकृष्ण महाभारत का एक अद्भुत चरित्र है । महर्षि व्यास प्रणीत महाभारत में कृष्ण के वासुदेव, माधव, पुण्डरीकाक्ष, जनार्दन, दामोदर, महाबाहु, पुरुषोत्तम, नारायण, विष्णु, केशव, अच्युत, गोपाल, गोविन्द, चक्रधर, जिष्णु, दशार्हनाथ, दाशार्ह, देवकी-पुत्र, प्रजापति, यदुकुलनंदन, वसुदेवपुत्र, वृष, सर्वज्ञ, सात्वत, हरि, हृषिकेश आदि अनेक नाम उपलब्ध होते हैं [94] । महाभारतकार ने उनको लोकरक्षक, धर्मसंस्थापक, राजनीतिज्ञ के रूप में निरूपित किया है । विद्वानों की मान्यता है कि महाभारत के प्राचीनतम रूप "जय" में कृष्ण को मानव-रूप में चित्रित किया गया था, किन्तु बाद में "भारत" और "महाभारत" में कृष्ण के अलौकिक रूप

का विस्तार हुआ है ।[95] वे उग्रसेन के पुत्र वासुदेव तथा देवकी के पुत्र हैं । बलराम के अनुज हैं । पांडवों की माता कुन्ती उनकी बुआ होती है । वे पांडवों के परमहितैषी , अर्जुन के सखा , प्रभावशाली कुशल राजनीतिज्ञ , पराक्रमी तथा शूर योद्धा , धर्मरक्षक , न्यायरक्षक , दिव्य-शक्तिसंपन्न महापुरुष , लोकनायक , धर्म के सत्य स्वरूप के उद्घोषक , उच्च लक्ष्य हेतु साधन-शुद्धि में न मानने वाले , जड़ परंपराओं और सामाजिक रूढ़ियों के विरोधी तथा त्रैलोक्य-सुन्दरी कृष्णा-द्रौपदी के सखा के रूप में जाने जाते हैं । डा. नरेन्द्र कोहली की उपन्यासमाला में उनका प्रवेश "महासमर-2 " अर्थात् "अधिकार" से होता है । "अधिकार" के अन्त भाग में ~~xxx~~ कृष्ण और बलराम युधिष्ठिर के युवराज्याभिषेक के समय आते हैं । डा. कोहली ने कृष्ण-चरित्र के निरूपण में सांकेतिक शैली का प्रयोग करते हुए अनेक स्थानों पर कृष्ण के उस रूप का आभास दिया है , जिससे भक्त-जनों को उनके ईश्वरत्व में विश्वास होने लगता है । अद्भुत है कृष्ण का यह चरित्र , सहज भी जटिल भी , अपने समय का अद्वितीय जननायक , अद्वितीय संगीतकार , अद्वितीय योद्धा , अद्वितीय राजनीतिज्ञ । जिसको भी स्पर्श किया चरम सीमा पर पहुंचा दिया । अनेक असुरों के साथ कंस का वध , कालयवन का वध , जरासंध जैसे सम्राट को युक्ति से पराजित कर उसके नगर में भीम द्वारा उसका वध करवाना , खांडववन का दहन करवाना , इन्द्र से भिड़ने के लिए अग्नि तथा वरुण को अपने पक्ष में कर लेना , अग्नि से सुदर्शन जैसे अमोघ शस्त्र को प्राप्त करना , खांडव वन से इन्द्र द्वारा सुरक्षित तक्षक को भगाना , पांडवों के राजसूय यज्ञ में सुदर्शन द्वारा शिशुपाल का वध करना , राजसूय द्वारा सम्पूर्ण जंबू-द्वीप में पांडवों का आधिपत्य स्थापित करना , स्वयं शस्त्र धारण न करते हुए भी "महासमर " में अपनी इच्छानुसार घटनाओं को मोड़ना, द्वारिका में बैठे-बैठे पूरे आर्यावर्त पर नजर रखना , विश्व को अनासक्त कर्म का गीता-बोध देना , धर्म के ये मूल तत्व को समझना , लोगों को समझाना कि हमेशा धर्म की रक्षा करो धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा,

आदि अनेक तथ्यों तथा घटनाओं को यहां रेखांकित किया गया है। "धर्म" उपन्यास में भीष्म के चिंतन में कृष्ण के चरित्र को उद्घाटित किया गया है -- " ऋषि नहीं है कृष्ण, संन्यासी नहीं है। न समाज से पलायन किया है उसने न समस्याओं से और न कर्म से। इस देश की राजनीति में, यादवों के प्रशासन में, अपनी पारिवारिक समस्याओं में, आकंठ धंसा है कृष्ण। पर कैसा अनासक्त है। ..." [96] और फिर भीष्म कहते हैं -- " मैं पर्याप्त चिंतन कर इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि इस सारे समाज में अग्रपूजा के योग्य निस्संदेह एक ही महानुभाव है ... द्वारका के वासुदेव कृष्ण। वे अपने तेज, बल और पराक्रम से देदीप्यमान हैं, वे अहंकारशून्यता, निर्लोभिता तथा धर्मनिष्ठा में असाधारण हैं, वीरता, ज्ञान तथा त्याग में अलौकिक हैं, उनमें भव्यता, दिव्यता और सात्त्विकता है।" [97] कई बार व्यक्ति के स्वयं के कथन से भी उसके चरित्र पर प्रकाश पड़ता है। इसी उपन्यास में एक स्थान पर वे कहते हैं -- " सूचनाएं अपने आप में एक शक्ति हैं, इसलिए स्वयं को शक्तिशाली बनाने के लिए जैसे मैं युद्ध का अभ्यास करता हूं, शस्त्रों का निर्माण अथवा क्रय करता हूं, वैसे ही सूचनाएं प्राप्त करने का भी प्रयत्न करता हूं। ... मैं जानता हूं, क्योंकि मेरा सम्बन्ध किसी एक राज्य से नहीं है, किसी एक राजवंश से नहीं है। मेरा कोई व्यक्तिगत मित्र नहीं है, कोई शत्रु नहीं है। मेरा सम्बन्ध केवल धर्म से है। इसलिए जहां धर्म है, वहीं मेरे मित्र हैं, जहां अधर्म है, वहां मेरे शत्रु हैं। ... सब मेरे अपने हैं। मुझे किसी एक राज्य और राजवंश की चिन्ता नहीं है, मुझे प्रत्येक जीव की चिन्ता है। इसलिए जहां कहीं जो कुछ घटित हो रहा है, उन सबमें मेरी रुचि है।" [98] इस प्रकार डा नरेन्द्र कोहली ने जहां एक तरफ एक महानायक, महा-राजनीतिज्ञ के रूप में कृष्ण को चित्रित किया है; वहां अनेक स्थानों पर सांकेतिक वा गूढ़ शैली में उनके परब्रह्म होने के संकेत भी दिए हैं। अंतिम उपन्यास "निर्बन्ध" के अन्त भाग में मरणासन्न भीष्म ~~xxxxxx~~ जब कृष्ण को "मधुसूदन" नाम से सम्बोधित करते हैं, तब कृष्ण उनको पूछते है कुछ लीलामय होकर कि वे उनको इस नाम से क्यों सम्बोधित कर रहे हैं,

उसके उत्तर में भीष्म कहते हैं —" तुममें साक्षात् विष्णु का रूप देखता हूँ वासुदेव । अतः विष्णु के सारे नाम तुम्हारे ही नाम लगते हैं । तुम ही हरि हो , तुम ही मुरारि हो , तुम ही कैटभारि हो ।" 99

§27§ बलराम :

======

बलराम कृष्ण के अग्रज बंधु हैं । राम और लक्ष्मण की तरह उनकी माताएं अलग हैं , पिता एक हैं । उनकी माता का नाम रोहिणी हैं और पिता का नाम वासुदेव । कुछ विद्वानों का मानना है कि रामायण का क्रम यहां उलट गया है । रामायण में राम अग्रज और लक्ष्मण अनुज थे , यहां कृष्ण अनुज हैं और बलराम अग्रज । बलराम कुछ अक्खड़ स्वभाव के हैं । कृष्ण को बहुत चाहते हुए भी कुछ मामलों में अड़ जाते हैं । द्वारका आने के बाद उनका रुख कुछ बदल भी जाता है । स्यमंतक मणि को लेकर उनके मन में कृष्ण के लिए शंका भी पैदा होती है । उन्हीं दिनों में उनका दुर्योधन से भी कुछ सम्बन्ध जुड़ जाता है । दुर्योधन गदायुद्ध के लिए उनको अपना गुरु बना लेता है । अपनी बहन सुभद्रा का विवाह वे दुर्योधन से करवाना चाहते हैं । उसी प्रसंग में अर्जुन के सम्मुख उनके स्वभाव का विश्लेषण करते हुए कृष्ण कहते हैं —" बलराम भैया तो फिर बलराम भैया ही है । न दिखाएं तो बड़ी से बड़ी बात में अपनी रुचि न दिखाएं ... युद्ध हो जाएं , राज्य बने और बिगड़ जाएं , राजवंशों के भाग का निबटारा हो जाए , वे किसीसे एक प्रश्न भी न पूछेंगे । आपके मन में आ जाए , वह कर लीजिए । ... पर यदि उनके मन में कोई बात आ गई , तो उसका जितना विरोध होगा , वे उस पर उतना ही अड़ते चले जाएंगे । आप उन्हें समझाने का जितना प्रयत्न xxx करेंगे , उनका मस्तिष्क तर्क की ओर से अपने कान उतने ही बन्द करता चला जाएगा ... कभी तो अपने कृष्ण xx की एक बात पर अपने प्राण न्यौछावर करने को आतुर दिखाई पड़ेंगे , और कभी इस बात पर ही धरना देकर बैठ जायेंगे कि सारी बातें कृष्ण को ही क्यों मानी जाएंगी । कृष्ण बहुत बुद्धिमान है और बलराम एकदम मूर्ख हैं ?" 100 वे अंत में दुर्योधन के समधी हो जाते हैं । अंतिम भीम-

दुर्योधन का गदायुद्ध द्वैपायन सरोवर के तट पर समंतपंचक में बलराम की अध्यक्षता में ही हुआ था जिसमें गदायुद्ध के नियमों का उल्लंघन करके भीम ने दुर्योधन की जंघाओं पर प्रहार किया था । इस बात पर भी वे बहुत नाराज होते हैं ।[10]

§28§ द्रौपदी :

द्रौपदी महाभारत का एक प्रमुख नारी पात्र है । युधिष्ठिर यदि इस महाकाव्य के नायक हैं तो द्रौपदी उसकी नायिका है । श्याम-वर्ण के कारण उसे कृष्णा भी कहा गया है । पांचाल नरेश द्रुपद की पुत्री होने के कारण उसे द्रौपदी कहते हैं और पांचाली कहते हैं । यज्ञ से उत्पन्न होने के कारण उसे याज्ञसेनी भी कहते हैं । पांचों पांडव की पत्नी होते हुए भी महाभारतकार ने उसका चित्रण पतिपरायणा सती के रूप में किया है । हमारी परंपरा में द्रौपदी की गणना पांच सती स्त्रियों में की जाती है । ये पांच प्रातःस्मरणीय सतियां हैं — अहल्या , द्रौपदी , सीता , तारा और मंदोदरी । वह त्रैलोक्य-सुन्दरी थी । पातिव्रत्य के अपूर्व तेज के कारण दुर्योधन , दुःशासन , कर्ण , जयद्रथ और कीचक आदि जिन्होंने भी उसे अपमानित करने का प्रयत्न किया बहुत बुरी तरह से उन्हें अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े । वह आदर्श गृहिणी , पतिव्रता नारी , बुद्धिमती और दूरदर्शी नारी , कृष्ण-सखी , तेजस्वी क्षत्राणियों के गुणों से युक्त , सहनशील तथा क्षमाशील, एक महिमामयी नारी है । द्यूतसभा वाले प्रसंग में डा॰ नरेन्द्र कोहली ने द्रौपदी के अद्वितीय सौन्दर्य का वर्णन किया है — " जो न ह्रस्वा है , न असाधारण रूप से लम्बी , जो न अधिक कृष्णवर्णा है , न अधिक रक्तवर्णा , जिसके नयन शरदऋतु के प्रफुल्लित कमल-दल के समान सुंदर और विशाल है , जिसके शरीर से शारदीय कमल के समान सुगंध निकलती रहती है , जिसके स्वेद बिंदुओं से विभूषित मुख कमल के समान सुन्दर और मल्लिका के समान सुगंधित है , जिसके केश नीले , लम्बे और घुंघराले है , मुख और ओष्ठ अरुण वर्ण के हैं , जिसके अंगों पर रोम नहीं है , जिसके नख उभरे हुए तथा लाल हैं , जिसकी

भौंहें बड़ी सुन्दर हैं, उरोज स्थूल और मनोहर हैं ... आज वही द्रौपदी दुर्योधन ने प्राप्त की थी ।"[102] भीम की प्रतिज्ञाओं के बाद द्रौपदी याचना की मुद्रा को त्याग तेजस्वी स्वरों में कहती है — "राजसूय यज्ञ के पश्चात् अवभृथ स्नान करने वाले ये केश, जो तूने खींचे हैं नीच । ये जब तक तेरे वक्ष के रक्त से नहीं धुलेंगे तब तक इनकी वेणी नहीं बनेगी ।"[103] डा कोहली ने महाभारत के द्रौपदी के उन धृष्ट वचनों का का भी परिशोध किया है जिसमें द्रौपदी यह कहती है कि "अन्धों के पुत्र भी अंध होते हैं" । डा. कोहली ने बताया है कि "स्फटिक-स्थल" में अपने अहंकार और अभिमान के कारण दुर्योधन वहां तैनात कर्मचारियों की सूचनाओं और निवेदनों को अनसुना कर जाता है और स्थल को जल समझकर पानी में कूदता है, तब उसकी सहायता हेतु आया भीम केवल इतना कहता है -- "घबराओ नहीं, धृतराष्ट्र पुत्र । यहां जल तो है किन्तु वह इस पारदर्शी स्फटिक शिला के नीचे है । ऊपर तो स्थल ही है ।"[104] किन्तु इस बात को कल्पना का रंग देकर दुर्योधन उसे द्रौपदी के नाम पर चढ़ा देता है । उपन्यासमाला के अन्त में अश्वत्थामा द्वारा जब द्रौपदी के पांच पुत्रों और धृष्टद्युम्न का रात्रि के समय में निद्रावस्था में वध कर देता है, तब द्रौपदी पूरी तरह से टूट जाती है । पहले तो भीम से उसका वध करने के लिए कहती है, किन्तु बाद में उसके मस्तक के मणि से संतोष कर लेती है —"महाराज (युधिष्ठिर) इस मणि को अपने मस्तक पर धारण करें ।" द्रौपदी ने कहा, "मैं अब अपने प्राण नहीं दूंगी ।"[105] जब पाण्डवों को वनवास मिलता है, तब उनकी अन्य रानियां उनके साथ नहीं गयी थीं, किन्तु द्रौपदी तो तब भी उनके साथ थी, बारह साल के वनवास में भी और एक साल के अज्ञातवास में भी । विराटनगर में दासी बनकर भी रही और कांपिल्य में मत्स्य-वेध वाली रात कुंभकार के यहां भी रही । ऐसी सहनशीला है द्रौपदी । हर हालत में उसने पांडवों को साथ दिया है ।

{29} हिडिम्बा :

महाभारत में हिडिम्बा का चरित्र आदि पर्व में 151 से 154 अध्यायों में वर्णित है । भीम की पत्नी , घटोत्कच की माता और हिडिम्बासुर की बहन हिडिम्बा का चरित्र महाभारतकार ने एक उत्सर्गशील नारी के रूप में किया है । राक्षस जाति की होने के बावजूद वह एक सुशील कन्या थी । उसका नाम सालकटंमकटी है । भीम को देखते ही वह उस पर आसक्त हो जाती है । माता कुन्ती भी उसकी सेवा , प्रेमभाव और लगन को देखते हुए भीम को "अस्थायी विवाह" की आज्ञा प्रदान करती है । यह एक प्रकार का "अनुबन्ध-विवाह {कान्ट्राक्ट मैरिज} है । वह एक भोली-भाली प्रेमिका , कामासक्त नारी , सेवाभावी तथा अपने वचन की पक्की नारी है । हिडिम्बा के चरित्र में साहस , त्याग , सेवाभावना और आज्ञाकारिता जैसे गुण पाये जाते हैं । माता कुन्ती से वह कहती है --" तो माता ! मुझे आप जीवन-दान दीजिए । ... मै जानती हूं आप लोग मेरे समान वन के निवासी नहीं है । जाने किन कारणों से यात्रा करते हुए वन में आ गए हैं ; किन्तु हैं आप यात्री ही । मुझ पर कृपा कर कुछ दिन शालिहोत्र मुनि के आश्रम में टिक जाइए और मुझे राक्षस-विधि के अनुसार संतान-जन्म तक अपने कन्त के साथ रमण करने की अनुमति दें । ... उसके पश्चात् मैं आपको नहीं रोकूंगी ।"[106] सालकटंकटी भीम को वृकोदर कहती है । इस अस्थायी ~~xxxxxx~~ पतित्व से हिडिम्बा एक शिशु को जन्म देती है । जन्म के समय उसके सिर पर एक भी बाल नहीं था । "घट जैसा चिकना था उसका मुण्ड " इसलिए तो युधिष्ठिर उसका नाम घटोत्कच रखते हैं ।[107] "महासमर" में वह पांडवों की ओर से दुर्धर्ष युद्ध करता है और शत्रुओं के छक्के छुड़ा देता है ।

{30} सुभद्रा :

सुभद्रा कृष्ण और बलराम की लाड़ली बहन और सारन की सहोदरा है । वह अत्यन्त सुन्दर , हठी और नटखट यादव-कन्या है । वह शस्त्रास्त्रों में निपुण और सारथ्य-कला विशारद है । प्रतिज्ञा-चूक

के कारण मिले बारह साल के वनवास के दरमियान अर्जुन जब प्रभास-क्षेत्र पहुंचता है तब अचानक सुभद्रा से उसकी मुलाकात होती है । प्रथम-दर्शन में ही वह उसे चाहने लगता है , बल्कि मुग्ध हो उठता है । विवाह-योग्य वय के कारण उनके परिवार में सुभद्रा के विवाह की चर्चा चल रही थी । बलराम उसका विवाह अपने प्रिय शिष्य दुर्योधन से करवाना चाहते थे । कृष्ण को यह मंजूर नहीं था । अतः वे चाहते हैं कि सुभद्रा का विवाह अर्जुन से हो जाए । अर्जुन को कृष्ण अपना बाल-सखा मानते हैं । द्रौपदी के अतिरिक्त अर्जुन की और दो पत्नियां हैं --नागराज कौरव्य की कन्या उलूपी और मणिपुर-नरेश चित्रवाहन की पुत्री चित्रांगदा । किन्तु कृष्ण जानते हैं कि न उलूपी इन्द्रप्रस्थ आयेगी और न ही चित्रांगदा । द्रौपदी तो पांचों भाइयों की पत्नी है , ऐसी स्थिति में अर्जुन के पास अपनी एक स्थायी रानी होनी चाहिए । फलतः कृष्ण ही अर्जुन को प्रेरित करते हैं , बल्कि सारी व्यवस्था कर देते हैं , कि वह सुभद्रा का हरण करें । यादव पहले तो बहुत उछलते हैं , किन्तु कृष्ण की युक्तियों के आगे उन्हें इस हरण-विवाह को मान्यता देनी पड़ती है । सुभद्रा जब इन्द्र-प्रस्थ पहुंचती है , तब द्रौपदी पहले तो रूठ हो जाती है , किन्तु यह गोप-कन्या उस पर अपना जादू चला ही लेती है और दोनों में सख्य-सम्बन्ध स्थापित हो जाता है । सुभद्रा से अर्जुन को अभिमन्यु नामक पुत्र की प्राप्ति होती है जो अर्जुन के समान ही एक महान योद्धा और धनुर्धारी होता है । ऐसा माना जाता है कि अभिमन्यु ने गर्भावस्था में ही चक्रव्यूह के युद्ध को सीख लिया था । "महासमर" में यह वीर तमाम कौरवों पर भारी पड़ रहा था , अतः युद्ध के तमाम-तमाम नियमों को ताक पर रखकर उसका वध किया जाता है ।

(3) जरासंध :

जिस प्रकार रामायण में रावण राक्षस-प्रवृत्ति का प्रवर्तक था , उसी प्रकार महाभारत में जरासंध , शिशुपाल , दुर्योधन आदि इस प्रवृत्ति के प्रवर्तक हैं । मथुरा का कंस जरासंध का जामाता

था और कंस यादव था , किन्तु जरासंध के रहते यादव वहाँ नितान्त परतंत्र थे और उन पर तरह-तरह के अत्याचार हो रहे थे । जरासंध ने जम्बूद्वीप के अनेक राजाओं का अपना मांडलिक बना रखा था और जरासंध की इच्छा के खिलाफ वे किसी राजा या राज्य से पारिवारिक व वैवाहिक सम्बन्ध तक नहीं जोड़ सकते थे । जरासंध के बार-बार के हमलों के कारण ही कृष्ण ने मथुरा छोड़कर द्वारिका में अपनी राजधानी स्थापित करने का निर्णय लिया था । कृष्ण को युद्धनीति वे स्वयं तय करते थे । कब , कहां और कैसे युद्ध करना उसे वे तय करते थे । कृष्ण अपनी नीतियों के तहत युद्ध करते थे और तत्कालीन क्षत्रिय समाज की जड़ व थे मूर्ख रूढ़ियों में उनका विश्वास नहीं था । उसके कारण उनकी आलोचना भी होती थी , किन्तु वे किसीकी चिन्ता नहीं करते थे । चिन्ता उन्हें केवल धर्म की रहती थी । इन नीतियों के कारण बहुत-से धृष्ट क्षत्रिय राजा उनको कायर तक कहते थे । मथुरा छोड़ने के कारण क्षत्रिय-समाज ने उनको "रणछोड़" तक कहा था , किन्तु उनके सामने उनका लक्ष्य स्पष्ट था -- धर्मराज्य की स्थापना करना । जिस जरासंध को वे मथुरा में नहीं हरा सके उसको अपने निश्चित समय और निश्चित स्थान पर घेरकर उन्होंने पराजित किया था । बाद में अर्जुन और भीम को साथ लेकर वे उसकी राजधानी गिरिव्रज जाते हैं और अर्द्ध-रात्रि में द्वन्द्व-युद्ध के लिए उसे उत्प्रेरित कर भीम द्वारा उसका वध करवा देते हैं । कृष्ण यदि ऐसा न करते तो जरासंध जो नरमेध यज्ञ कर रहा था उसमें वह सौ बन्दी राजाओं की बलि देने वाला था । इस प्रकार मगध-सम्राट जरासंध एक अत्याचारी , अधर्मी , पापी और आततायी किस्म का सम्राट था । उसके सहयोगी और मित्र राजा भी सब उसी प्रकार के थे । डा. कोहली की उपन्यासमाला में "अधिकार" के अंतिम भाग से उसका प्रवेश होता है और उनके चतुर्थ उपन्यास धर्म " मेंभीम द्वारा उसका वध करवा दिया जाता है । जरासंध के स्थान पर उसके पुत्र सहदेव का राज्याभिषेक करवा दिया जाता है ।

§32§ शिशुपाल :

चेदि-नरेश शिशुपाल जरासंध का मित्र है । पांडवों का वह मौसेरा भाई है । कृष्ण-बलराम का वह फूफेरा भाई है, पर कृष्ण को वह हमेशा गालियां देता रहता है । कृष्ण को अपमानित करने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देता । जरासंध की भांति वह भी अत्याचारी, अन्यायी, अधर्मी और मिथ्याभिमानी है । पांडव नकुल के साथ उसने अपनी पुत्री करेणुमति का विवाह राजनीतिक समीकरणों को ध्यान में रखकर किया था, किन्तु करेणुमति पांडवों के रंग में रंग जाती है । युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में वह चाहता था कि उसकी अग्रपूजा हो, किन्तु यज्ञ के तंत्र-स्वामी भीष्म पितामह अग्रपूजा हेतु जब कृष्ण का नाम प्रस्तावित करते हैं तब शिशुपाल धृष्टतापूर्वक न केवल कृष्ण का, अपितु भीष्म पितामह का भी अपमान करता है और उनके लिए अपशब्दों का प्रयोग करता है । कृष्ण एक सीमा तक उसके अनर्गल प्रलाप को सुनते रहते हैं, किन्तु जैसे ही उन्हें लगता है कि अब पानी सर के ऊपर जा रहा है, उनकी तर्जनी पर सुदर्शन चमक उठता है और निमिष मात्र में शिशुपाल का मस्तक कट कर भूमि पर जा गिरता है । शिशुपाल के स्थान पर उसके पुत्र धृष्टकेतु का राज्याभिषेक किया जाता है । [108]

§33§ घटोत्कच :

वारणावत के अग्निकांड के उपरान्त पांडव तथा माता कुन्ती गंगा पार करके हिडिम्ब वन में प्रवेश करते हैं । इस वन पर हिडिम्ब नामक राक्षस का वर्चस्व था । उसकी बहन है हिडिम्बा । जब हिडिम्ब छः मानव-प्राणियों को देखता है तो वह अपनी बहन को आदेश देता कि वह उनको मारकर उसके लिए ले आएं, ताकि मनुष्य का मांस खाने को मिले । किन्तु हिडिम्बा उर्फ सालकटंकटी तो उनका वध करने के स्थान पर भीम पर आसक्त हो जाती है । प्रत्यक्ष युद्ध में भीम हिडिम्ब को मार गिराता है । एक कामातुर नारी की याचना और

और उसकी प्रेम-भावना को लक्षित करते हुए माता कुन्ती भीम और हिडिम्बा का अस्थायी-विवाह करते हैं । हिडिम्बा वचन देती है कि पुत्र-जन्म के बाद वह भीम को मुक्त कर देगी । एक साल तक वे लोग हिडिम्ब वन में मुषि शालिहोत्र के आश्रम के पास कुटी बनाकर रहते हैं । घटोत्कच भीम और ~~हिडिम्ब~~ हिडिम्बा का पुत्र है । जन्म के समय उसके मस्तक पर एक भी केश नहीं था और वह चिकने घड़े-सा दिखता था , इसीलिए युधिष्ठिर उसका नाम घटोत्कच रखते हैं । [109] अपने वचन के अनुसार भीम से अलग होते हुए हिडिम्बा बड़े करुण भाव से कहती है --" मुझे भूलना मत । मुझसे संपर्क बनाये रखना ... और संकट काल में किसी सहायता की आवश्यकता हो तो संकोच मत करना । वचन दो कि ऐसा ही करोगे ?" बदले में एक वचन भीम भी उससे लेता है --" किन्तु एक वचन तुम भी दो कि मेरे पुत्र को ~~नरभक्षी~~ नरभक्षी राक्षस नहीं बनाओगी ; उसे योद्धा बनाओगी , योद्धा । हिंस्र वनवासी नहीं , क्षत्रिय राजकुमार ।" [110] और हिडिम्बा बखूबी अपने वचन को निभाती है । घटोत्कच महाभारत का एक वीर योद्धा बनता है । "महासमर" में वह पांडवों के पक्ष में दुर्धर्ष युद्ध करता है और वीरगति को प्राप्त होता है ।

{34} अभिमन्यु :

अभिमन्यु अर्जुन तथा सुभद्रा का पुत्र है । उसका पूरा नाम तो "अभिमन्युमान" है , जो दो शब्दों के योग से बना है -- अभि + मन्युमान । "अभि" का अर्थ है "निर्भय" और मन्युमान का अर्थ है -- क्रुद्ध होकर लड़ने वाला । इसलिए श्रीकृष्ण ने इसका नाम अभिमन्यु रखा था । महाभारत में इसके आर्जुनि , सौभद्र , कार्ष्णि , अर्जुनात्मज , अर्जुनावर , फाल्गुनि , शक्रात्मजात्मज आदि पर्याय भी मिलते हैं ।[111] अभिमन्यु श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों के प्रिय थे । कृष्ण-पुत्र प्रद्युम्न इनके

संरक्षक तथा शिक्षक नियुक्त किए गए थे । अभिमन्यु ने कृष्ण , प्रद्युम्न और अर्जुन से शिक्षा पाई थी । ऐसा कहा जाता है कि चक्रव्यूह भेदन युद्ध की शिक्षा उन्होंने तब पायी थी जब वह सुभद्रा की कोख में था । अभिमन्यु का विवाह मत्स्य देश के राजा विराट की पुत्री उत्तरा से हुआ था । अभिमन्यु वीरतापूर्वक "महासमर" का युद्ध करते हैं , किन्तु युद्ध के तेरहवें दिन गुरु द्रोण खास उसे ही लक्षित करते हुए चक्रव्यूहभेदन का युद्ध रखते हैं । इस युद्ध का ज्ञान कृष्ण , अर्जुन , प्रद्युम्न और अभिमन्यु के अतिरिक्त किसीको नहीं था । किन्तु अभिमन्यु चक्रव्यूहभेदन तो जानता था , लेकिन उसमें से बाहर निकलने का ज्ञान उसे नहीं था । गुरु द्रोण ने जब यह व्यूह बनाया तब अर्जुन संशप्तकों से युद्ध कर रहे थे । बे×ब× अभिमन्यु व्यूह के तमाम महारथियों को धूल चटाता है , किन्तु व्यूह के नियमों का उल्लंघन कर अन्ततः द्रोणाचार्य , कृपाचार्य , कर्ण , कृतवर्मा , अश्वत्थामा और बृहद्दल अभिमन्यु के को घेर लेते हैं और उसका वध करते हैं । जब यह घृणित युद्ध चल रहा था तब व्यूह के मुहाने पर पांडव वीरों को रोक रखने का कार्य दुर्योधन के बहनोई जयद्रथ ने किया था । फलतः अर्जुन जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा लेते है । इस विषय पर मैथिलीशरण गुप्त का खण्डकाव्य "जयद्रथवध" लिखा गया है । जब अभिमन्यु का वध हुआ उस समय उसकी अवस्था सोलह वर्ष की थी और उत्तरा के गर्भ में तब उसका अंश पल रहा था । परीक्षित उत्तरा-अभिमन्यु का पुत्र है , जिससे आगे पांडवों का वंश चलता है , क्योंकि द्रौपदी के पांचों पुत्रों को सुxxxxxxx× सुषुप्तावस्था में ही अश्वत्थामा धोखे से मार डालता है जिसे हम पूर्ववर्ती पृष्ठों में निर्दिष्ट कर चुके हैं । "निर्बन्ध" उपन्यास में दुर्योधन जब उसको सोलह साल का "छोकरा" कहता है , तब गुरु द्रोण उसे टोकते हुए कहते हैं —" वैसे अभिमन्यु को छोकरा मात्र समझना भूल होगी । मैंने इसे युद्ध करते देखा है । पहली बात तो यह कि उसके मन में भय जैसा कोई भाव ही नहीं है । वह बड़े से बड़े योद्धा से तनिक भी भयभीत नहीं होता । किसीसे भी समान भाव से जूझ पड़ता है ।

फिर उसके पास अर्जुन और श्रीकृष्ण दोनों की ही युद्धविद्या की संपदा है । उसने बलराम और प्रद्युम्न से भी कुछ सीखा है। उसे तुम दूसरा अर्जुन ही समझो ।" [112] इस प्रकार एक अनुपम वीर योद्धा के रूप में हम अभिमन्यु को पाते हैं । गुजरात में तो "वीर अभिमन्यु " के रूप में ही वह जाना जाता है ।

§35§ युयुत्सु :
==========

युयुत्सु महाराज धृतराष्ट्र के पुत्र हैं , किन्तु उसकी माता गांधारी नहीं है । महाराज धृतराष्ट्र की गांधारी के अतिरिक्त एक वैश्य जाति की स्त्री थी । युयुत्सु धृतराष्ट्र की वैश्य जाति की भार्या से उत्पन्न "करण-पुत्र" था । महाभारतकाल में वैश्य स्त्री और क्षत्रिय पुरुष से उत्पन्न संतान को "करण" कहते थे । यह कौरवपक्षीय होने के बावजूद आरंभ से ही पांडवों के पक्षधर थे । धर्मराज युधिष्ठिर "महा-समर " से पूर्व घोषणा करते हैं कि मेरे द्वारा धर्मयुद्ध लड़ा जा रहा है , अतः जो मेरे पक्ष में आना चाहते हैं , वे आ सकते हैं । तब युयुत्सु धर्मराज की अपील पर पांडव-पक्ष में चला गया था । युयुत्सु के मन में कृष्ण के प्रति भक्तिभाव था और उसे विश्वास था कि कृष्ण जिस ओर होंगे उसी पक्ष की जीत होगी । दुर्योधन द्वारा छल से भीमसेन को विषयुक्त भोजन खिलाये जाने की सूचना भी युयुत्सु ने ही दी थी ।[113] महाभारत में इसके करण , कौरव , कौख्य , धार्त-राष्ट्र , धृतराष्ट्रज , धृतराष्ट्रसुत , वैश्यापुत्र आदि अन्य नाम भी मिलते हैं । [114]

पांडवों की पत्नियों के नाम :

द्रौपदी और सुभद्रा के अतिरिक्त पांडवों की अन्य रानियों के नाम इस प्रकार हैं -- उलूपी , चित्रांगदा § अर्जुन की पत्नियां § ; देविका § युधिष्ठिर की पत्नी § , बलंधरा § भीम की पत्नी § , विजया §सहदेव की पत्नी § , करेणुमती § नकुल की पत्नी § । [115]

पांडव-पुत्रों के नाम :

अभिमन्यु और घटोत्कच के अतिरिक्त अन्य पांडव-पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं -- यौधेय (युधिष्ठिर और देविका का पुत्र) , सर्वग (बलंधरा और भीम का पुत्र) , निरमित्र (करेणुमती और नकुल का पुत्र) , प्रतिविन्ध्य (धर्मराज और द्रौपदी का पुत्र) , सुतसोम (भीम और द्रौपदी का पुत्र) , शतानीक (नकुल और द्रौपदी का पुत्र) , श्रुतसेन (सहदेव और द्रौपदी का पुत्र) ,[116] इरावान (अर्जुन और उलूपी का पुत्र)[117] , बभ्रुवाहन (अर्जुन और चित्रांगदा का पुत्र) ।[118]

महाभारत के अन्य गौण पात्र :

यहां उन पात्रों का उल्लेख किया जा रहा है जिनकी चर्चा उपर्युक्त 35 प्रमुख पात्रों में नहीं हुई है :--

दासराज , वाटिका (महर्षि व्यास की पत्नी) , पारंसवी (विदुर की पत्नी) , ऋषि पराशर , महाअथर्वण जाबालि , परशुराम, मर्यादा (विदुर की माता) , विष्णुदत्त , राज पुरोहित वसुभूति , चित्रांगद , विचित्रवीर्य , सौभराज शाल्व , मुनि शैखावत्य , होत्रवाहन (अम्बा के नाना) , ऋषि शरद्वान (कृपाचार्य के पिता) , भरद्वाज (द्रोण के पिता) , कुन्तिभोज , गांधारराज सुबल , मद्रराज शल्य, दुर्वासा , किंदम (शतश्रृंग आश्रम के कुलपति) , अक्रूर , दामघोष , भीष्मक , दंतवक्त्र , युयुधान , सात्यकि , उद्धव , वाह्लीक , सोमदत्त, कणिक , पुरोचन , आर्यक (नाग- भीम उनके दौहित्र का दौहित्र था) , राधा (कर्ण की पोष्य माता) , (अधिरथ (कर्ण के पालक पिता) , द्रुपद , शिखंडी , धृष्टद्युम्न , भूरिश्रवा , सौवीर नरेश विपुल , दशार्ण-राज हिरण्यगर्भा , मनस्विनी (द्रुपद की दूसरी पत्नी) , कुलपति देवदत्त , हिडिम्ब (हिडिम्बा का भाई) , सत्यभामा (कृष्ण की पत्नी) , सत्राजित (सत्यभामा के पिता) , शतधन्वा , मुनि शालि-होत्र , धौम्य ऋषि , देवप्रसाद (एकचक्रा में पांडवों का यजमान) ,

सरस्वती ≬ देवप्रसाद की पुत्री ≬ , विद्या ≬ देवप्रसाद की पुत्री ≬ , शैशव ≬ देवप्रसाद का पुत्र ≬ , बकासुर , यक्ष स्थूणाकर्ण ≬ जिसने शिखंडी का इलाज किया था ≬ , गंधर्व अंगारपर्ण , कुंभीयसी ≬ अंगारपर्ण की पत्नी ≬ , धर्मरक्षित ≬ कुंभकार जिसके यहाँ कांपिल्य में पांडव ठहरे थे ≬, रुक्मरथ ≬ शल्य का पुत्र ≬ , ऋषि सांदीपनि , भौमासुर , भानुमति दुर्योधन की पत्नी , लक्ष्मण ≬ दुर्योधन का पुत्र ≬ , पुरुरवा , आयु , नहुष , ययाति , दंतवक्र , करभ , मेघवाहन , पौण्ड्रक , भगदत्त , सुनीथ , दंतावक्त्र , सारण , गद , कंक , उल्मुक , निशठ , अंगावह , प्रद्युम्न , सांब , चारुदेष्ण , वृहदन्त , लोहित , चित्रायुद्ध , रुक्मी , यूपकेतु , नारद , सुसामा , अंगिरस , सुदक्षिण , धृष्टकेतु , वसुदान, एकलव्य , देवल , असित , उत्तरा ≬ अभिमन्यु की पत्नी ≬ , परीक्षित ≬ अभिमन्यु का पुत्र ≬ , कीचक , जयद्रथ , बृहद्दल , विकर्ण , दुर्मुख , दुर्मर्षण , चित्रसेन , राक्षस अलम्बुष , कृतवर्मा आदि-आदि ।

उपर्युक्त पात्रों के अतिरिक्त डा. कोहली ने अनेक काल्पनिक सामाजिक पात्रों की सृष्टि भी की है ।

निष्कर्ष :

अध्याय के समग्रावलोकन के पश्चात् हम निम्नलिखित निष्कर्ष तक पहुंच सकते हैं :—

≬1≬ डा. कोहली के रामायण पर आधारित उपन्यासों में "दीक्षा" , "अवसर" , "संघर्ष की ओर " तथा "युद्ध " हैं ; जिसमें उन्होंने राम-जन्म से लेकर राम-रावण युद्ध तथा रावण-वध की कथा को लिया है । उत्तरकांड की कथा को उन्होंने छोड़ दिया है । उक्त चार उपन्यासों में उन्होंने राम , सीता , लक्ष्मण , दशरथ , कैकेयी , कौशल्या , सुमित्रा , विश्वामित्र , वसिष्ठ , अगस्त्य , शूर्पणखा , वाली , सुग्रीव , हनुमान , रावण , मंदोदरी , कुम्भकर्ण , विभीषण , मेघनाद , सीरध्वज राजा जनक , रूमा या रुक्मा आदि पात्रों को प्रमुख रूप से लिया है ।

≬2≬ इनके अतिरिक्त डा. कोहली ने अनेक पात्रों पौराणिक

व सामाजिक पात्रों की सृष्टि की है, जिनकी सूची अध्याय के अंतर्गत पृ.सं. 336 से 338 दी गई है।

§3§ डा. कोहली ने महाभारत की कथावस्तु पर "बंधन", "अधिकार", "कर्म", "धर्म", "अंतराल", "प्रच्छन्न", "प्रत्यक्ष" तथा "निर्बन्ध" आदि आठ उपन्यासों की रचना की है; जिसमें उन्होंने महाराज शान्तनु से लेकर महाभारत के युद्ध तक की कथा का आलेखन किया है। महाभारत के प्रमुख पात्रों में शान्तनु, भीष्म, सत्यवती, अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका, कृष्ण द्वैपायन व्यास, धृतराष्ट्र, पाण्डु, विदुर, गांधारी, कुन्ती, माद्री, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण, शकुनि, अश्वत्थामा, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कृष्ण, बलराम, द्रौपदी, हिडिम्बा, जरासंध, शिशुपाल, घटोत्कच, अभिमन्यु, युयुत्सु आदि की गणना कर सकते हैं।

§4§ उपर्युक्त पात्रों के अतिरिक्त डा. कोहली के उपन्यासों में अनेक पौराणिक पात्रों की चर्चा मिलती है, जिनका उल्लेख अध्याय के अन्त में कर दिया गया है।

§5§ डा. नरेन्द्र कोहली ने अपने रामायण तथा महाभारत पर आधारित उपन्यासों में पात्रों की सृष्टि करते समय अनेक पात्रों का चित्रण पौराणिक ढंग से न करते हुए आधुनिक ढंग से मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, तार्किक संगति, आधुनिक अर्थघटन आदि की दृष्टि से किया है। मिथक तत्त्वों का परिशोध करते हुए उनका आधुनिक ढंग से अर्थघटन किया है। यथासंभव कथा और पात्रों के चमत्कारिक अंशों का भी परिहार किया है जिससे ये पौराणिक कथा न लगकर मौलिक उपन्यास लगें।

===== xxxxx ======

: सन्दर्भानुक्रम :

§1§ द्रष्टव्य : बंधन : डा. नरेन्द्र कोहली : प्रकाशकीय वक्तव्य : प्रथम फ्लेप से ।

§2§ द्रष्टव्य : नरेन्द्र कोहली ने कहा : पृ. 41 ।

§3§ और §4§ : अवसर : डा. नरेन्द्र कोहली : पृ. क्रमशः 257, 351-352 ।

§5§से §7§ : युद्ध : अभ्युदय-2 : डा. कोहली : पृ. क्रमशः 201, 621, 626.

§8§ से §10§ : दीक्षा : अभ्युदय-1 : डा. कोहली : पृ. क्रमशः 85, 149, 176 ।

§11§ द्रष्टव्य : इसी प्रबंध में पृ. क्रमशः

§12§ और §13§ : अवसर : अभ्युदय-1 : पृ. क्रमशः 247, 217 ।

§14§ अभ्युदय -1 : पृ. 263-722 ।

§15§ से §17§ : अवसर : अभ्युदय-1 : पृ. क्रमशः 252-53, 253, 213 ।

§18§ नरेन्द्र कोहली ने कहा : पृ. 41 ।

§19§ द्रष्टव्य : अवसर : अभ्युदय-1 : पृ. 249 ।

§20§ संघर्ष की ओर : अभ्युदय-1 : पृ. 650 ।

§21§ और §22§ : युद्ध : अभ्युदय-2 : पृ. क्रमशः 586-591, 622 ।

§23§ से §27§ : अवसर : अभ्युदय-1 : पृ. क्रमशः 284, 234, 191-97, 260, 261 ।

§28§ द्रष्टव्य : "हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक ग्रन्थियों एवं समस्याओं का निरूपण : डा. मनीषा ठक्कर : पृ. 88 ।

§29§से§32§ : अवसरः अभ्युदय-1 : पृ. क्रमशः 235, 235, 234-35, 284 ।

§33§ दीक्षा : अभ्युदय-1 : पृ. 24-25 ।

§34§ अवसर : अभ्युदय-1 : पृ. 243 ।

§35§ और §36§ दीक्षा : अभ्युदय-1 : पृ. क्रमशः 17, 19 ।

§37§से §41§ : युद्ध- : अभ्युदय-2 : पृ. क्रमशः 3, 268, 499, 574, 620 ।

§42§ द्रष्टव्य : वाल्मीकि रामायण : 6×××××88××84××× 6.108.4 ।

§43§ द्रष्टव्य : अध्यात्म रामायण : 6.11.53-54 ।

§44§ नरेन्द्र कोहली ने कहा : पृ. 41 ।

§45§ से §53§ : युद्ध : अभ्युदय-2 : पृ. क्रमशः 565-66, 566, 567, 462-463, 591, 588, 588, 225, 250 ।

§54§ उपन्यासमाला में जिस क्रम में ये नाम आये हैं, उसी क्रम में प्रायः इन नामों को रखा गया है ।

§55§ उपरिवत् ।

§56§ बंधन : डा. नरेन्द्र कोहली : पृ. 66 ।

§57§ धर्म : डा. नरेन्द्र कोहली : पृ. 388 ।

§58§ कर्म : डा. कोहली : 377 ।

§59§ से §65§ : बंधन : पृ. क्रमशः 191, 215, 215, 241, 245, 469, 236, ।

§66§ से §68§ : धर्म : पृ. क्रमशः 411, 377-392, 407 ।

§69§ उत्तर महाभारत : डा. किशोर काबरा : पृ. 227 ।

§70§ धर्म : पृ. 342 ।

§71§ महाभारत : आदिपर्व : 128. 28 ।

§72§ द्रष्टव्य : अन्तराल : द्वितीय प्रलेप ।

§73§ अधिकार : पृ. 49 ।

§74§ द्रष्टव्य : " स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य में महाभारत के पात्र " : डा. जे. आर. बोरसे ।

§75§ अधिकार : पृ. 81 ।

§76§ द्रष्टव्य : धर्म : पृ. 410 §77§ वही : पृ. 407 ।

§78§ द्रष्टव्य : निर्बन्ध : डा. कोहली : पृ. 376-381 ।

§79§ वही : पृ. 312 ।

§80§ वही : पृ. 313 ।

§81§ अधिकार : पृ. 301 ।

§82§ कर्म : पृ. 305 ।

§83§ से §87§ द्रष्टव्य : "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य में महाभारत के पात्र " : पृ. क्रमशः 359, 359, 359, 359, 359 ।

§88§ धर्म : पृ. 352 ।

§89§ अधिकार : पृ. 23 ।

§90§ धर्म : पृ. 355 ।

§91§ निर्बन्ध : पृ. 504 ।

§92§ और §93§ निर्बन्ध : पृ. क्रमशः 261 , 492 ।

§94§ द्रष्टव्य : " स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य में महाभारत के पात्र " :
डा. जे.आर. बोरसे : पृ. 137 ।

§95§ वही : पृ. 137 ।

§96§ से §98§ : धर्म : पृ. क्रमशः 322, 323, 228 ।

§99§ निर्बन्ध : पृ. 520 ।

§100§ धर्म : पृ. 173 ।

§101§ द्रष्टव्य : निर्बन्ध : पृ. 476 ।

§102§ से §104§ : धर्म : पृ. क्रमशः 393, 407, 342, ।

§105§ निर्बन्ध : पृ. 506 ।

§106§ और §107§ : कर्म : पृ. क्रमशः 154 , 192 ।

§108§ द्रष्टव्य : धर्म : पृ. 333-334 ।

§109§ और §110§ : कर्म : पृ. क्रमशः 192 , 195 ।

§111§ महाभारत कोश : पृ. 38 ।

§112§ निर्बन्ध : पृ. 42 ।

§113§ द्रष्टव्य : अधिकार : xxxxxxx पृ. 76 ।

§114§ द्रष्टव्य : महाभारतकोश : पृ. 567 ।

§115§ से §118§ : द्रष्टव्य : धर्म : पृ. क्रमशः 372 , 211, 228, 151 ।

======== xxxxxx =========